अल्प मुक्ति से पूर्ण मोक्ष

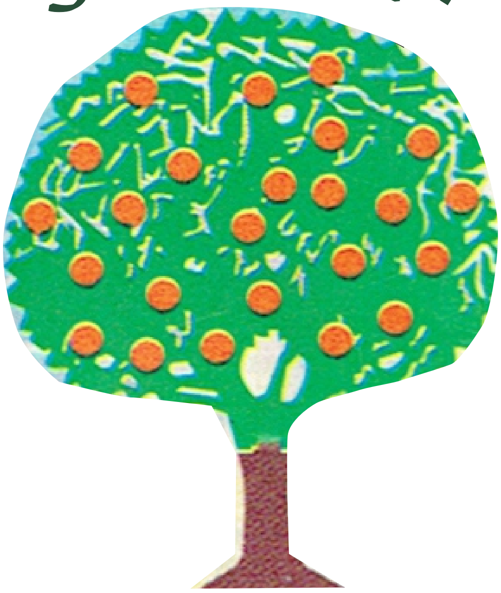

(आत्मन कोष)

'वे नाम' सुरती धारा

'वे नाम' पास दो वस्तुऐं, सार नाम और सुरत नाम।
ब्रह्मण्ड में नहीं किसी पास, सुरति सब्द सार नाम।।

(दोनों दात सत्तपुरूष जी द्वारा साहिब सत्तगुरू "वे नाम परमहँस जी" को प्रदत्त की गई)

सत्तपुरूष जी ने आज तक किसी भी प्रलय: काल में किसी भी संत सतगुरू परमहँस जी को दो बार सत्त सुरति दात कभी भी प्रदान नहीं की, सत्त सुरति दात साहिब सत्तपुरूष जी से दो बार ग्रहण करने वाले संत सतगुरू "वे नाम परमहँस जी" इस धरा पर एक मात्र संत हुऐ हैं।

Copies All Right reserved

'वे नाम' सुरती धारा आश्रम

15–गार्डन एवेन्यू तालाब तिल्लो, जम्मू
जम्मू व कश्मीर, भारत – 180002

अल्प मुक्ति से पूर्ण मोक्ष

जो वस्तु 'वे नाम' सतगुरू परमहंस साहिब पास प्यारो।
साहिब सतपुरूष सूं पाई महान रे।
सतपुरूष की सुरति सूं आई प्यारो।
सुरति सूं पकड़ी जान रे।
साहिब जी सार सब्द, सुरत सब्द दो जान महान रे।।

(आत्मन कोष)

'वे नाम' सुरती धारा

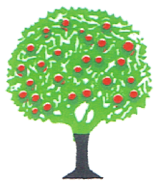

(आत्मन कोष)

वे नाम पास दो वस्तुऐं, सार नाम और सुरत नाम।
ब्रह्मण्ड में नहीं किसी पास, सुरति सब्द सार नाम।।

पँच सदी पहले साहिब कबीर ने, पाई सार दात सतपुरूष सूं।
सन् 2012 निजधाम से होकर, 'वे नाम' पाई दौ बार दात सतपुरूष सूं।।

सार सब्द और सुरत सब्द की दात, सतपुरूष सूं।
ब्रह्मण्ड में ऐसी कृपा संत पे देखी ना सुनी, सतपुरूष सूं।।

मिलो सेवादार, सत्तगुरू परमहँस 'वे नाम' सूं।
जिन पाई दौ बार दात, सत्तपुरूष साहिबन सूं।
जानो सहज मार्ग भृँगा मत्त, 'वे नाम' सेवादार सूं।
सत्त सत्त और सत्त बताऊँ, कुछ ना पाऊँ ना मांगूं आप सूं।।

साहिब सत्तपुरूष जी ने आज तक किसी भी प्रलयः काल में किसी भी संत सत्तगुरू परमहँस जी को दौ बार 'सार सब्द–सुरत दात' कभी भी प्रदान नहीं की, दौ बार सत्त सुरति दात साहिब सत्तपुरूष जी से सुरति द्वारा ग्रहण करने वाले एक मात्र संत सत्तगुरू "वे नाम परमहँस जी" वर्तमान काल में इस धरा पर विद्यमान हैं।

अल्प मुक्ति से पूर्ण मोक्ष

1 गीता को प्राचीन काल से प्यारो, उपनिषद् की पदवी मिली ले जान।
गीता उपनिषदों का उपनिषद प्यारो, महिमां अपार ले जान।
साहिब जी : गीता भगवन का दिया उपहार ले जान।।

2 भगवन के इस कौष अपार से प्यारो, पाया अर्जुन भेद निरंकार।
भगवन के ज्ञान अपार से प्यारो, सब जीव बीज महांसुरति सूं आयो संसार।
साहिब जी : हंसा सत्यपुरूष का अंश प्यारा दुलारा रे।।

3 भगवन धर्म ज्ञान सूं प्यारो, जग जाना चार मुक्ति का भेद।
भागे शलि अर्जुन जान प्यारे, जिस पाया भक्ति का भेद।
साहिब जी : श्री कृष्ण जग में अवतार का देते भेद।।

4 हर जीव में तन मन प्यारो, संग हंसा सुरति महान ले जान।
मन माया संग खेल प्यारो, ''वे नाम'' सब्द से हंसा सुरति पार ले जान।
साहिब जी : हंसा भूला निज की पहचान महान।।

5 स्थितप्रज्ञ अक्षर कृष्ण भगवन उच्चारण किया प्यारो, आदर्श मूर्ती लेजान।
यह शब्द तीनों लोक में प्यारो, अमृत बूंद महान।
साहिब जी : मन मान से पार होना काम महान।।

6 जग जानो माया सपनी प्यारो, कभी ना देती चैन।
बच्चे मात पिता सभी प्यारो, खा कर भी ना लेती चैन।
साहिब जी : दुख सुख एक समान ले जान।।

7 इस माया सब जग भ्रमाया, कभी किसी की मिटती देखी ना भूख।
सतगुरू जब ''वे नाम'' सब्द हैं देते, सुरति जागे तो मिटती भूख।
साहिब जी : सुरति जागे तो ही मिटे मन माया की भूख।।

8 कलयुग अति दुखदाई प्यारो, द्वापर का गीता से जान ले हाल।
कामी क्रौधी मस्करा प्यारो, निज बिन देखे ना किसी का हाल।
साहिब जी : सतगुरू ही भवजल करावे पार।।

9 तीन लोक के हर नर काल वश पड़ा प्यारो, हर एक नाचे मन की तान।
अर्जुन का हाल तुम देख लो प्यारो, कृष्ण भगवन ने नचाया दे मान।
साहिब जी : सतगुरू 'वे नाम' सूं सत्यपुरूष अनादि ले जान।।

10 हर नर जग में प्यारो, मन माया के वश पड़ा ले जान।
अज्ञानी अर्जुन भेद ना जाना प्यारो, काल भगवन रूप देख डरा महान।
साहिब जी : काल के वश पड़ा हर हंसा ले जान।।

11 ''वे नाम'' सब्द से जगत में प्यारो, जन्म मरन छूट जाई।
काल अकाल से दुख प्यारो, छूटा जान मेरे भाई।
साहिब जी : सुरति से गिराना नहीं मेरे साईं।।

12 अंकुरी जीव 'वे नाम' सब्द की धारा प्यारो, भव सागर से होय न्यारा।
हंसा रूप ''वे नाम'' दात कर जाई, सतगुरू संग में पार किनारा।
साहिब जी : मोह माया जाल से पार किनारा।।

13 हंसा होत पर वस माया के, अज्ञानी अर्जुन जाना ना भेद।
काल भगवन रूप देख डरा प्यारो, पंख वहीन बिन ''वे नाम'' भेद।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू सूं पा ले सच्चा भेद।।

14 बिन पूर्ण सदगुरू ज्ञान ना उपझे, बिन बीज वृक्ष होत कैसे।
बिन ''वे नाम'' सब्द प्यारो, सत्य का वृक्ष होत कैसे।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू परमहंसा बिन बात बनेगी।।

15 दुनियां में अर्जुन पड़ा प्यारो, दयावंत मिला दिखता कहीं ना।
काल भगवन बिन कोई संग ना प्यारो, सुरति जगवन हार कहीं ना।
साहिब जी : पूर्ण सतगुरू का भेद मिला कहीं ना।।

16 देखो परखो तब पाओ प्यारो, ''वे नाम'' सब्द की सच्ची दात।
सच्चा सदगुरू सच्चा सब्द प्यारो, पहुंची निजघर जब संग में सच्ची दात।
साहिब जी : सतगुरू पाओ संग में ''वे नाम'' सब्द की दात।।

17 जगत भगत में बैर चारों युगों से प्यारो, नर सच्च से कौसों दूर मेरे भाई।
पानी में मीन प्यासी प्यारो, सुनो सुनो आवे हासी मेरे भाई।
साहिब जी :'वे नाम' सतगुरू अमरलोक की पाई सच्ची दात मेरे भाई।।

18 मृग की नाभी मांहि कस्तूरी प्यारो, बन बन खोजे मेरे भाई।
कहत 'वे नाम' सतगुरू प्यारो, सहज को सहज से जान मेरे भाई।
साहिब जी : परमानंद 'वे नाम' चरणन में जान मेरे भाई।।

19 श्री कृष्ण निर्गुण सर्गुण भेद दिया प्यारो, काल भगवन रूप लिया धार।
योग ज्ञान सूं ध्यान प्यारो, दर्श निरंकार का सुन्न को लिया धार।
साहिब जी : महांसुन्न तक काल भगवन की धार।।

20 अंदर तेरे मन मान पसारा, अंदर बाहिर ऐको ले जान।
बिन माया जग कुछ है नांहि प्यारो, कल्पनाओं का जगत बना ले जान।
साहिब जी : निज की कर ले पहचान।।

21 कृष्ण अर्जुन को कहत प्यारो, दुख सुख में इक सम रहना ले जान।
हानी लाभ विजय या पराजय प्यारे, इसे तूं इक सम ले जान।
साहिब जी : दुख सुख मन के अंग ले जान।।

22 मन से पल पल विचार उठत प्यारो, दुख सुख का आधार।
धर्म युद्ध ईच्छा रहित कर प्यारे, गुरू की आज्ञानुसार।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द बिन नांहि कोई पार।।

23 ना तूं कर्ता कल था प्यारे, ना तूं कर्ता होगा फिर कल।
आज कोई कर्ता कैसे प्यारो, रहना सीख ले इसी पल।
साहिब जी : इस पल में रहना छुड़ावे कल और कल।।

24 कर्म है करना हर जीव को प्यारे, कर्म से रहो निर्लेप।
कमल फूल जल में रहे, पानी से रहे निर्लेप।
साहिब जी : सुरति रहती मन माया के भावों से निर्लेप।।

25 हर जीव मन माया वश पड़ा प्यारो, कैसे कर्ता जाने आप।
खुद को जाने निमित्त बिन प्यारो, सतगुरू करन करावनहार आप।
साहिब जी : साहिबन के दरबार में कर्ता संत हैं आप।।

26 सब कार्यों का कर्ता सतगुरू, उसी के चरणों में सौंपो आप।
पाप ना तुमको छू सके प्यारो, चेतन सुर्ती में रहता आप।
साहिब जी : ''सार नाम'' सब्द में कर्ता आप।।

27 निष्काम भाव से कर्म जो करता प्यारो, बंधन से मुक्त उसे ले जान।
उसका आपा चेतन सुरती सूं मिटता प्यारो, दाग़ लग मत जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' दात से होत निज की पहचान।।

28 अब मैं मेरा मेरी मिटी प्यारो, तूं ही तो हो रहा समाये।
तूं तूं करता जब गया, तुझ में जा समाये।
साहिब जी : हर ओर सतगुरू रहा समाये।।

29 साहिब हर पल तांहि घट बसें प्यारो, तुझे खबर नांहि मेरे भाई।
लोभी मन भरमा रहा प्यारो, बिन मृत्यु कुछ जानत नहीं मेरे भाई।
साहिब जी : मृत्यु बुलाती पल पल मांहि।।

30 मैं तोहे कहुं मेरे साधको प्यारो, सत्त सब्द जेहि घट बसे रे।
तहां सत्य प्रेम आनंद बसे प्यारो, साहिबन महां चेतन सुरति वासा रे।
साहिब जी : निर्मल होये मल कबहिं ना लागे रे।।

31 साहिब महां चेतन सुरति प्यारो, सतगुरू सुरति चेतन करे।
सब्द मिले साहिबन संग प्यारो, सतगुरू साहिब सुरति संग करें।
साहिब जी : निज घर जाने पर तेरा संग करें।।

32 एक ग़ल्त कदम, जीवन की राह पर प्यारो।
लाखों जन्म जीवन, मुझे ढूंढता रह गया।
साहिब जी : मैं सोया का सोया रह गया।।

33 मैं जीवन की धारा से अलग प्यारो, जो पाना था वह रह गया।
पर साहिब ध्या लो प्यारो, जो पाना था पल में पा गया।
साहिब जी : सार सब्द सुरत सब्द दात को पा गया।।

34 प्रीत तरंग तीन लोक पार कर जाती प्यारो, भटकी सुरति को राह दिखलाती।
''वे नाम'' सब्द सब कार्य करता प्यारो, साहिबन चेतन सुरति जग जाती।
साहिब जी : सच्चे सतगुरू पास आप ले जाती।।

35 इस प्रीत की कीमत में क्या दूं प्यारो, जिस की कीमत की जाति नहीं।
खोटे सिक्के इस राह पर, कुछ काम आते नहीं।
साहिब जी : मन मान में बहते सतगुरू नज़र आते नहीं।।

36 प्रीत सब ओर खिलखिलाती फूल ही फूल प्यारो, प्रीत अपने में तूं साध।
मन मान के चक्र में प्यारे, हर एक भूला बैठा सच्चा धाम।
साहिब जी : सब हंसों का सच्चा घर निजधाम।।

37 तेरे अंदर अमृत धारा प्यारे, तेरे अंदर मोक्ष द्वारा मेरे भाई।
तेरे अंदर सात हैं साग़र, तेरे अंदर नों द्वार मेरे भाई।
साहिब जी : तेरे अंदर महां चेतन सुरति समाई मेरे भाई।।

38 अंदर तेरे सुरति धार प्यारे, सच्ची दृष्टि् चेतन सुरति धार।
बाहर कल्पनाओं का जगत प्यारे, सतगुरू चेतन सुरति धार।
साहिब जी : निःअक्षर सब्द हंसा सुरति आधार।।

39 तेरे अंदर शिव विष्णु ब्रह्मां का वासा प्यारो, तेरे अंदर शक्ति निवासा रे।
तेरे अंदर तेत्तीस करोड़ देवी देवों के प्यारो, फैले निवास स्थान रे।
साहिब जी : तेरे अंदर आठ चक्र का वासा रे।।

40 तेरे अंदर सुन्न विस्तार प्यारो, तेरे अंदर ज्ञान भण्डारा रे।
तेरे अंदर अमरजोत विस्तार प्यारो, तेरे अंदर सत्य पसारा रे।
साहिब जी : चल हंसा सतलोक छोड़ो यह संसारा रे।।

41 तेरे अंदर प्रेम धारा बहती प्यारे, तेरे अंदर सत्य पसारा।
तेरे अंदर सुरति की धारा, तेरे अंदर जीवन ज्योति की धारा।
साहिब जी : ना तीर्थ में ना मूरत में, एकान्त में वासा रे।।

42 तेरे अंदर अमर जोत समाई, तेरे अंदर शास्वत की धारा रे।
तेरे अंदर निर्लम्भ राम का वासा प्यारो, वे ही सत्यपुरूष धारा रे।
साहिब जी : तेरे अंदर पूर्ण मोक्ष विस्तार रे।।

43 कोई कोई जग में थाह पावे, आदि नाम 'वे नाम' सतगुरू सूं पार हो जावे।
आदि नाम गुप्त जान प्यारे, बिन ''वे नाम'' सब्द जग गोता खावे।
साहिब जी : आदि नाम से हंसा पार हो जावे।।

44 ''वे नाम'' सब्द अगम अपारा प्यारो, इस नाम को जानो सब से न्यारा।
सत्य सब्द सुरति से गाओ, पल में पाओ निजधाम प्यारा।
साहिब जी : निःअक्षर सब्द ही 'वे नाम' सब्द न्यारा।।

45 सत्य नाम मन मान को प्यारो, पल पल छुड़ावे सत्य लोक ले जावे।
'वे नाम' स्नेहि साधका, मुख से सब्द कहा ना जावे।
साहिब जी : त्यागे मन माया नाम सुरति सूं जपे निजघर जावे।।

46 जब मैं मेरी सब मिट गई, अब तूं ही केवल रह जाये।
तूं तूं करता में भया, मैं मेरी मिट जाये।
साहिब जी : माया आकर्षण नाम से मिट जाये।।

47 अर्जुन मन ईन्द्रियों के वश में पड़ा प्यारो, युद्ध से भागने की सोचे राह।
आशा तृष्णा के जाल में पड़ा, सोचे जाल से बाहिर आने की राह।
साहिब जी : सतगुरू पूर्ण बतावें सच्ची राह।।

48 जग में मरता तो कोई नहीं, हंसा नया चौला लिये फिर फिर आता रे।
जब तक ना मिले ''वे नाम'' सब्द की दात प्यारे, जग ना छूटे रे।
साहिब जी : पूर्ण सतगुरू बिन बने ना बात रे।।

49 जब हंसा का मन माया से संग छूटा प्यारो, ''वे नाम'' सब्द से बने बात रे।
भिन्न पूर्ण सतगुरू के प्यारो, पूर्ण मोक्ष की मत कर बात रे।
साहिब जी : बिन ''वे नाम'' दात सपनों में भी सुख ना रे।।

50 तीन लोक में प्यारो, चार मुक्ति का योगा ले जान।
पित्र लोक स्वर्ग सुन्न प्यारो, संग महां सुन्न निरंकार लोक ले जान।
साहिब जी : इन में पूर्ण मुक्ति मत ले जान रे।।

51 कंई बार ईन्द्र तूं बनयो, फल भोग कर फिर जग में आना जान।
कंई बार किट पतंग में वासा प्यारो, नर्कों में भी वासा ले जान।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष की महिमां पूर्ण सतगुरू सूं ले जान।।

52 जैसा बीज तूं बो रहा प्यारे, वैसा फूल उग आता रे।
जब बीज ही फैंका मोत का, फिर फूल भी मोत का आता रे।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष का बीज ''वे नाम'' सब्द की दात रे।।

53 सत्त कहीं ढूंढे कहीं प्यारो, कैसे आवे हाथ रे।
जो कोई पावे पूर्ण सतगुरू प्यारो, ता से पावे पूर्ण मोक्ष का दान रे।
साहिब जी : सतगुरू संग पहुंचे निजधाम रे।।

54 इधर उधर मत घूम प्यारे, मध्य दौ नैनों के करो ध्यान रे।
अच्छा बुरा विचार जो आवे प्यारो, मध्य में ले उसे आन रे।
साहिब जी : तीसरे तिल का नेत्र महान रे।।

55 जो वस्तु 'वे नाम' पास प्यारो, साहिब सत्यपुरूष सूं पाई महान रे।
सत्यपुरूष की सुरति सूं आई प्यारे, सुरति सूं पकड़ी जान रे।
साहिब जी : सार सब्द सुरत सब्द दौ जान महान रे।।

56 ध्यान में जाते समय प्यारो, अंतःकरण में सुरति सब्द एक कर रोक रे।
''वे नाम'' सब्द पर स्वांसा संग प्यारे, ध्याण को एकाग्र करना जान रे।
साहिब जी : अमर पद पर सुरति स्वांसा एक रे।।

57 दौ नैनों को प्यारे, एक तिल पर एकाग्र करना जान रे।
सुरति सब्द संग प्यारो, एक ही पिण्ड से बाहर जान रे।
साहिब जी : मन धुलता जाता अमर पद पर जब ध्यान रे।।

58 अमरपद पर ले जाना प्यारो, सतगुरू वे नाम का काम रे।
सुरति से पुकार साधक की प्यारो, सदगुरू को जगने की सच्ची पुकार रे।
साहिब जीः पूर्ण स्फूरना अत्यंत चेतना से सतगुरू रूप में सुरती धार रे।।

59 सत्यपुरूष श्वेत महां सुरति में प्यारो, अत्यंत चेतन सुरति होती जान रे।
अत्यंत गहराई से प्यारो, सुरति चेतन से ध्यान रे।
साहिब जी : गहन ध्यान से पूर्ण मन निग्रह होता जान रे।।

60 गोताखोर बनो प्यारो, मोती रत्नों की प्राप्ति महान रे।
जैसे ध्यान ''वे नाम'' सब्द पर प्यारो, अनंत सुखों को पाना जान रे।
साहिब जी : सुरति की महिमां महान रे।।

61 जब आनंद में सुरति सुरत कमल में प्यारो, कोटि महां चेतन सुरति जोत महान रे।
जोत स्वरूपी साहिब आगे प्यारो, आत्म सुरति समतुल्य हो करती प्रणाम रे।
साहिब जी : सोलहं सूर्यों की जोत मिलती जान रे।।

62 महां चेतन सुरति सूं प्यारो, हर हंसा प्रकाशित ले जान रे।
जल से प्यास मिटती प्यारो, ''वे नाम'' सब्द से अज्ञान समाप्त होता जान रे।
साहिब जी : सत्यपुरूष संग निजघर पाना जान रे।।

63 सुरति में रहना प्यारो, निर्मल सत्य आनंद में रहना जान रे।
हर हंसा केवल सुरति प्यारो, सत्यपुरूष महां सुरति से गहन सुरति पाना जान रे।
साहिब जी : गहन चेतन सुरति से निज घर जाना जान रे।।

64 सुरति सूं निज को जे जान ले प्यारे, सत्य प्रेम आनंद के खिलते फूल।
सुन्न की अंदर धार लो प्यारो, सुरति में चेतन सुरति के खिलते फूल।
साहिब जी : जीवन के सच्चे खिलते फूल।।

65 जीवन पूरा जब खिले प्यारो, लक्ष्य पूरा हो जाता रे।
जीवन सूं कुछ बड़ा नहीं प्यारो, जे पास में ''वे नाम'' सब्द की दात रे।
साहिब जी : मन माया की गांठ छुड़ावन हार रे।।

66 जीवन में जीवन को साध प्यारे, ''वे नाम'' सब्द में सुरति डाल रे।
जन्म संग मृत्यु श्रृंखला प्यारो, दुख और पीड़ा संग साथ रे।
साहिब जी : सुरति सब्द स्वांसा एक कर डाल रे।।

67 चार उंगल में स्वांसा चल रही प्यारो, इसे बिंदु सम कर डाल रे।
उल्टी स्वांसा आप हो जात प्यारो, सत्य सब्द में डाल रे।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष मूलम सतगुरू कृपा पा जात रे।।

68 जन्म मरन से पार प्यारो, साहिब सत्यपुरूष जान पूर नूर।
''वे नाम'' सब्द की दात सूं, हंसा हुआ नूरो नूर।
साहिब जी : मिथ्या जन्म गंवाये बिन ''वे नाम'' दात का नूर।।

69 जग में आये कर प्यारो, कर लो सच्चे दो काम।
चेतन सुरति सूं भजो प्यारो, ''वे नाम'' सुरति सूं भजने का काम।
साहिब जी : सतगुरू समाना शिष्य में दो का समाना ही सच्चा काम।।

70 जैसा जीवन जग जी रहा प्यारो, दुख पीड़ा और मौत।
यह तो जीवन ना हुआ प्यारो, जिस और देखी मौत ही मौत।
साहिब जी : हर पल नर जा रहा मौत ही मौत की ओर।।

71 जीवन को आंख उठा कर देख प्यारे, तेरे अंदर मन सुरति का वास।
सतगुरू सूं ही बात बने प्यारो, ''वे नाम'' सब्द से तेरे अंदर साहिबन वास।
साहिब जी : तेरी आंख खुले तो देख चेतन सुरति में वास।।

72 बीज बोया ही जब नीम का प्यारो, अमृत फल कैसे लग जात।
नीम का जे बीत था नीम का फल ही आत।
साहिब जी : चेतन सुरति से चेतन सुरति का फल ही आत।।

73 फूल पूरा जब खिल गया, पूरा हो गया काज।
सच्चा जीवन खिल जात है, जब सागर में बूंद का समाना होता काज।
साहिब जी : चेतन सुरति का महां चेतन सुरति में समाना काज।।

74 यह घट मंदिर सुरति प्रेम सत्य आनंद का, ''वे नाम'' सब्द से पट खोल।
जो पावे सतगुरू सूं दात को, छूटे मन माया का खेल।
साहिब जी : ''वे नाम'' दात से भंवर गुफा का पट खोल।।

75 निंदक कोई जग में है नहीं, जिस को दें हम दौष।
निंदक तभी है दिखता, जब स्थिर जीवन नहीं होत।
साहिब जी : निज की पहचान से सब होत।।

76 स्थिर जीवन जब हो गया, गया अच्छे बुरे का भेद।
अब आप तो खो गया, किस सूं करूं में भेद।
साहिब जी : जागन से मिटे अच्छे बुरे का भेद।।

77 सब में ईक ही जोत है, सब में रहता आप।
आप सूं आप बुरा कैसे दिखे, जब दूजा रहे ना साथ।
साहिब जी : सब में हंसा रूप साहिबन अंश जब साथ।।

78 मन माया सगला तजा, किया सुरति का चेतन संग साथ।
मन माया सब बह गये, सतगुरू चेतन सुरति संग किया साथ।
साहिब जी : महां चेतन सुरति साहिबन का किया सच्चा साथ।।

79 दुखी मन बिन सुरति चेतन से, अर्जुन कहत है बात।
युद्ध में सभी अपने खड़े, श्री कृष्ण को कह रहे बात।
साहिब जी : अर्जुन कहत है सच्ची बात।।

80 गुरू खड़े पितामंह खड़े, मित्रजन और परिवार।
ईन सब से मैं लड़ कर प्यारो, किस का करूं संहार।
साहिब जी : अपनो पर कैसे करूं मैं वार।।

81 सुख ना पावे ऐ प्रभु, कुल का करे जो नाष।
पाप का भागीदार बने, ह्रदय में अति कलेष।
साहिब जी : मन माया का संग देत कलेष।।

82 करने घौर अपराध को प्यारो, पहले करो विचार।
क्या ऐसे राज के पाने के लिये, सुख दुख का सर बार।
साहिब जी : मन माया से मिलता दुख अपार।।

83 मन के शब्दों को उच्चार कर प्यारो, धनुष बाण दिया छोड़।
रथ से नीचे उतर कर प्यारो, युद्ध सूं मुख लिया मोड़।
साहिब जी : सच्चे सतगुरू 'वे नाम' की पकड़ ले डौर।।

84 जो ऐसी हत्यायें करे, पापी का भागीदार होये।
कभी पूर्ण मोक्ष ना पा सके, लाखों सुख मिले जो होये।
साहिब जी : पाप कर्म से सुख ना पावे कोये।।

85 अर्जुन के शब्दों में प्यारो, समर्पण कहीं दर्शता नहीं।
मैं मेरी की झलक प्यारो, अर्जुन बचता दिखता नहीं।
साहिब जी : बिन झुके सतगुरू चरणन में पार कोई होता नहीं।।

86 क्या करिये क्या छोड़िये, चंद श्वांसों का जीवन साथ।
पल पल श्वांसा जात है प्यारो, रिश्ते नाते भी जाते संग साथ।
साहिब जी : निज सुरति बिन नहीं कोई साथ।।

87 जैसे सपना रैन का प्यारो, सो जानो संसार।
ना कोई रहा ना रहेगा प्यारो, सपनों सूं रचा संसार।
साहिब जी : बिन सपनों नहीं जान संसार।।

88 यह जग झूठा जान प्यारे, मन माया का रचा संसार।
कृष्ण कहते अर्जुन जागो प्यारे, ना करो चाम से प्यार।
साहिब जी : काल रचयो पांच तत्व से संसार।।

89 ना कोई रहा ना रहेगा प्यारो, सपनो बिन मत जान संसार।
इस सूं प्रेम क्या कीजिये, जग तो मोत का बाज़ार।
साहिब जी : पांच तत्व सूं मत कर प्यार।।

90 हर कोई पड़ा प्यारो, मन माया के झूठे जाल।
छूटन का उपाये 'वे नाम' सतगुरू पास प्यारो, बिन समर्पण कैसे कोई पार।
साहिब जी : 'वे नाम' सब्द बिन नहीं कोई पार।।

91 मरी मरी युगा बीत गये प्यारो, मरन ना जाना कोये।
ऐसी मरनी को मरो प्यारो, फिर मरना ना होये।
साहिब जी : जीवित मरने का भेद ''वे नाम'' दात सूं होये।।

92 मन मुवा ना माया गई, संशय युक्त संसार।
अविनाशी होई जो मरे प्यारो, फिर कैसे धारो शरीर।
साहिब जी : जीवित मरने से छूटा जान शरीर।।

93 अर्जुन ना माने श्री कृष्ण गुरू की एक भी, जान यह घेरी निंदा।
तर्क बे तर्क निंदा में डालती, बिन ''वे नाम'' सब्द ना टूटे निंदा।
साहिब जी : मन माया देते घेरी नींद।

94 मन बुद्धि से मत काम ले, ''मूल सब्द'' में सुरति ध्यान।
सुरति भासा हंस को प्यारो, सतगुरू सुरति में ध्यान।
साहिब जी : सत्यपुरूष महां चेतन सुरति 'वे नाम' ध्यान।।

95 विषय दुख शरीर का, हंसात्मां का दुख ना जान।
जब शरीर के बिन तूं देख सके, चारों ओर अमृत वर्षा जान।
साहिब जी : पूर्ण सतगुरू सूं ''वे नाम'' सब्द को जान।।

96 भगवान कृष्ण गुरू रूप में प्यारो, अर्जुन को ज्ञान हैं दे रहे।
पर अर्जुन विषय में डूबा प्यारो, आंख ना खोले रे।
साहिब जी : मन मान में सुरति कैसे जागे रे।।

97 हर नर काल जाल के वष पड़ा प्यारो, माने ना संतन बात।
मैं आया सतलोक ले जानें, हंसा सुने ना सतगुरू बात।
साहिब जी : कैसे किस किस को दूं पूर्ण मोक्ष की दात।।

98 जीवात्मां में ही आनंद प्यारो, बाहिर कैसी तालाश।
अज्ञानता के वश जीवात्मां पड़ी प्यारो, वस्तुओं में करे तालाश।
साहिब जी : नाषवाण वस्तुओं में कैसी तालाश।।

99 मनुष्य पाप कर्म कमा रहा, सुरति का ज्ञान नांहि।
आखिर यह तन खाक मिलेगा, मन माया की पहचान नांहि।
साहिब जी : मन माया छूटे बिन बात बने नांहि।।

100 धनुष बाण पकड़ कर अर्जुन रोवे, किस किस को मारूं रे।
सभी अपने संगी साथी प्यारो, किस ओर तीर चलाऊं रे।
साहिब जी : करन करावन हार कोई और है अर्जुन नहीं करता रे।।

101 मनुष्य ये मन नीचा मूल है, हीन विचार प्रगटाये रे।
नर निज हंसा रूप जाने नहीं, विषयों में लागी प्रीति रे।
साहिब जी : काम क्रौध लोभ मोह मन के अंग रे।।

102 मन बुद्धि चित्त के रूप में प्यारो, उभारें काम क्रौध अहंकार रे।
काल पुरूष भी संग साथ प्यारो, कैसे छूटें लोभ मोह अहंकार रे।
साहिब जी : यह सब मन के अंग जान रे।।

103 मन मान नीचा मूल प्यारो, हीन विचार प्रगटाये रे।
निज की पहचान ''वे नाम'' सब्द से प्यारो, भेद कोई ना जाने रे।
साहिब जी : 'वे नाम' सदगुरू की पहचानों बात बन जावे रे।।

104 मन मान तजा जा सके प्यारो, सदगुरू चेतन सुरति काम कर जावे रे।
जग में जो भी दिख रहा प्यारो, सो सैना मोह मान की जान रे।
साहिब जी : इसी से तन का संग महान रे।।

105 निर्मोह होई ज्ञान विचारियो प्यारो, ''वे नाम'' सब्द मिटावे भीड़।
'वे नाम' सदगुरू सूं मूल दात प्यारो, मन माया का छुड़ावे मोह।
साहिब जी : मन मान बड़ावे मोह।।

106 मन माया जाल सबै अंधा करे प्यारो, तभी तो सोया कहलाये रे।
लाखों जन्मों से जीव सोया पड़ा, 'वे नाम' आन जगावे रे।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू को कोई प्यारा जाने बात बन जावे रे।।

107 भक्ति अमृत विष किया कामिंया, ईंद्री देत स्वाद।
हीरा खोया निज आपना, निज से निज स्वाद।
साहिब जी : ता से मन माया की कैद।।

108 खाने में कुछ स्वाद ना प्यारो, जीव में जान स्वाद।
वस्तु कोई स्वाद ना दे सके, जन्म गंवाया स्वाद।
साहिब जी : बिन दुख कुछ ना बाद।।

109 ''वे नाम'' सब्द जा पास प्यारो, काम के बाण से पार।
काम उर्जा का उधान कर प्यारे, जन्म मरन सूं पार।
साहिब जी : 'वे नाम' सदगुरू करावे भाव पार।।

110 कामी नर कबहुं ना सतगुरू भजे, दुख चारों ओर से साथ।
रहता हर पल सोया पड़ा, दुख ही दुख संग साथ।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द छुड़ावे दुखों का साथ।।

111 अर्जुन मन के वष पड़ा प्यारो, मन नहीं अर्जुन वश।
जो कोई इस से बचे प्यारो, मन माया उस वश।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द करे इन्हें वश।।

112 तन मन स्थिर ना रह सकें, काम बाण सूं होत सब घात।
इस बाण सब वश किये प्यारो, सुर नर मुणि एक साथ।
साहिब जी : दुख का मूल इस बाण के साथ।।

113 मन ही माया मन ही निरंझन प्यारो, सबै रहा भरमाई।
जब कोइ पूर्ण संत मिले, पल में सुरति बाण होई जाई।
साहिब जी : सतगुरू चेतन–सुरति सुरति–चेतन कर जाई।।

114 जब सदगुरू धारा निरंतर बहे, कोई कमी ना आये।
सदगुरू रूप सत्यपुरूष का, उन्हीं में रहा समाये।
साहिब जी : सत्यपुरूष 'वे नाम' सतगुरू में रह समाये।।

115 भृंग मत्ता ज्ञान 'वे नाम' सतगुरू के वासा, करें जग कल्याण।
''वे नाम'' सब्द से आत्म हंसा प्यारो, यही ज्ञान सूं कल्याण।
साहिब जी : बिन ''वे नाम'' सब्द ना होत कल्याण।।

116 भृंग सब्द ज्ञान बनावे सूरमा, सुरति सूं चलावे बाण।
पारस लोहा सोना करे, 'वे नाम' सदगुरू करें आप समान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द बाण का काम महान।।

117 श्री कृष्ण ही तद रूप साकार निरंकार प्यारो, तीन लोक विस्तार।
आप ही सप्त आकाश प्यारो, आप ही सप्त सागर विस्तार।
साहिब जी : आप ही मन माया विस्तार।।

118 आप ही तन मन रचनाकार हैं, महां प्रलय आधार।
आप ही शुभ अशुभ प्यारो, पाप पुण्य आधार।
साहिब जी : मन मान काल पुरूष आधार।।

119 वस्तु कहीं ढूंढे कहीं प्यारो, यही सोचों का आधार।
'वे नाम' सदगुरू भेद हैं जानते, ''वे नाम'' सब्द आधार।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द ले चले साहिबन दरबार।।

120 बिन ''वे नाम'' सब्द निज पाओ नहीं, तुम कौटिन करो उपाये।
चरणन में सिर ढाल दे प्यारे, निज घर जाने का उपाये।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष पाने का सच्चा उपाये।।

121 यह जग सपनों समान प्यारो, कुछ भी सच्चा नांहि।
बिन हंसा कोई अपना नाहिं प्यारो, सब रिश्ते सपनों बिन कुछ नाहिं।
साहिब जी : निज को जाने बिन साहिब की पहचान नांहि।।

122 सतगुरू ने मुझे अमृत पिलाया, मेरी सोई सुरति को जगाये।
इसी कृपा दया निधि सत्यपुरूष ने कीन्हीं, जग रचना दर्शयो।
साहिब जी : तीन लोक से पर चौथा लोक दर्शयो।।

123 जग के देवी देव भ्रमायें प्यारो, कोई ना पाया पार।
तीन लोक के आगे देखो प्यारो, अदभुत साहिबन दरबार।
साहिब जी : सतपुरूष ही अमर लोक दरबार।।

124 अमरलोक साहिबन का प्यारा, सब हम हंसों का देश न्यारा।
सभी हंसा उस लोक सूं आये, तीन लोक हैं जाल पसारा।
साहिब जी : चल हंसा निज देश प्यारे।।

125 जग के सुख स्वपन समान प्यारो, इन में सुख मत जान।
यह सब मन माया के अंग प्यारो, इन में मोक्ष मत जान।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू सूं पाओ पूर्ण मोक्ष का दान।।

126 पहले मां का साथ फिर खेल में प्यारे, फिर पढ़ाई सुरति जागे कहां।
वस्तु में नहीं धुण ही में मज़ा, वस्तु कहीं ढूंढे कहीं।
साहिब जी : जिस में मज़ा वह सच्च है नहीं।।

127 मन माया में केवल मज़ा प्यारो, सुरति चेतन बिन बने ना बात।
पूर्ण सतगुरू जब मिलें, पूर्ण मोक्ष की मिलती दात।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द बिन बने ना बात।।

128 अर्जुन कहते हैं : सुख ना पावे ऐ प्रभु, कुल घाती जो होये।
जीवन उसका पतित हो, चिंताओं से घेरा होये।
साहिब जी : मन मान सूं दुख ही दुख होये।।

129 यह तो घौर अपराध प्यारो, अपने गुरू सबंधी मार।
क्या ऐसे पाओ राज सुख प्यारो, कुछ बंधु दूं मार।
साहिब जी : पाप कर्म से कोई कैसे उतरे पार।।

130 ऐसे मुख से उच्चार कर, धनुष बाण दिया छोड़।
रथ से नीचे उत्तर कर, रण से मुख लिया मोड़।
साहिब जी : मन माया के हर पग़ मोड़।।

131 अर्जुन को दुखी देख कर, कहें प्रभु समझायें।
तुम तो आर्य पुरूष हो प्यारे, युद्ध में कायरता कहां से लाये।
साहिब जी : मन माया सुरति ले नचाये।।

132 जीव की हत्या मत करो प्यारो, कभी ना बख्शा जाये।
सब में आत्म वास है प्यारो, बुरा ना किसी सूं किया जाये।
साहिब जी : अच्छा बुरा कर्म मन माया सूं खेला जाये।।

133 अपने पराये भेद ना, सभी को जान एक सम्मान।
भेद भाव किसी सूं ना प्यारो, मत किसी को दूजा ले जान।
साहिब जी : सुरति डौर सब में एक सी ले जान।।

134 भेद भाव सूं सहज ना प्यारो, पामर कहे जहान।
जब सम भाव सम दृष्टि् प्यारो, तभी बनोगे महान।
साहिब जी : सतगुरू चेतन–सुरति सुरति बने महान।।

135 मन लोभी मन लालची प्यारो, मन का करो विवेक।
मन मूल सब्द सूं निर्मल प्यारो, तभी पाओगे सच्चा एक।
साहिब जी : सुरति चेतन–सुरति महां चेतन–सुरति सूं एक।।

136 ''वे नाम'' सब्द बिन कोई सहज ना प्यारो, खुद की ना होत पहचान।
सतगुरू 'वे नाम' परम हंसा बिन प्यारे, इस पल में आना मत जान।
साहिब जी : सहज को पाकर ही प्यारे सहज होना ले जान।।

137 कुल का नाष जब होत है प्यारो, कुल धर्मों का नाष ले जान।
सतगुरू बिन सत्य सब्द नांहि प्यारो, चाहे करे कोटिन कर्म महान।
साहिब जी : अच्छे बुरे कर्मों से प्यारो कोई छूटा मत जान।।

138 धर्म के बादल छट जाने पर प्यारो, अधर्म के बादल छा जात।
तब कुल का वासा नरकों में प्यारो, धर्म जाति सनातन का नाष हो जात।
साहिब जी : सत्य की पहचान से बनती बात।।

139 दौष के कारण वर्ण संस्कार की उत्पति प्यारो, दुख का कारण जान।
जड़ भूल से धर्म का नाष प्यारो, नर्कों में वासा ले जान।
साहिब जी : निःअक्षर सब्द से पार ले जान।।

कृष्ण भगवन अर्जुन से कहते हैं :–

140 कायरता से कीर्ति प्यारो, संग खोता आत्म आनंद।
निर्बलता को त्याग कर प्यारे, बिन ईच्छा कर्म आनंद।
साहिब जी : आशा तृष्णा छूटे मिले आनंद।।

141 अर्जुन हानी लाभ अच्छा बुरा, जीत हार तूं भूल।
जंग को जंग ही जान कर, निज कर्म को ना भूल।
साहिब जी : बिन सच्ची दात मन मान सूं भूल।।

142 मनुष्य पुरूषार्थ प्रयत्न का अधिकारी प्यारो, सत्य प्रेम की धार संग साथ।
कर्तव्य निष्चय समर्पण, निष्चिंता कर्म विश्वास संग साथ।
साहिब जी : सुरति स्वांसा सब्द धारा संग साथ।।

अर्जुन के मन की दशा

143 अर्जुन करूणा से भरा हुआ प्यारो, असुवन से भरे हैं नैन।
व्याकुल और दुखी अर्जुन प्यारो, छोड़ा धनुष बाण ले जान।
साहिब जी : अर्जुन के मन की दशा ले जान।।

144 यह सब बंधन मोह का प्यारो, मन के भाव ले जान।
गुरू रूप श्री कृष्ण ज्ञान दे रहे, मोह का बंधन जान।
साहिब जी : मन माया का बंधन टूटा ले जान।।

145 यह तन दुख का मूल प्यारो, मन ही इसे ले जान।
कुछ भी मरता नहीं जग में प्यारो, पूर्ण सतगुरू 'वे नाम' से भेद ले जान।
साहिब जी : सुरति सदा एक सम्मान ले जान।।

146 जब तक मोह माया का संग प्यारो, कर्म ना छूटा जान।
आना जाना लग रहे प्यारो, पा ले 'वे नाम' सतगुरू सूं पूर्ण मोक्ष का दान।
साहिब जी : आओ चलें सच्चे घर निजधाम महान।।

147 जब तक मनुष्य निज को कर्ता जाने प्यारो, मन मान से बंधा ले जान।
सहज अवस्था ना आ सके, जे ना हो निज की पहचान।
साहिब जी : निज में निज की पहचान।।

148 भौतिक स्तर पर कार्य करने से प्यारो, सब प्रयास निष्फल जायें।
जब शरण सतगुरू की ले लो प्यारो, हर कार्य सफल हो जाये।
साहिब जी : सुरति जागे कार्य हो जाये।।

149 निज को निमित जान कर प्यारे, सतगुरू में सुरति डाल।
तेरा जग में कुछ है नांहि प्यारे, सतगुरू कर्ता सुरति में डाल।
साहिब जी : सब्द से सुरति निरति एक कर डाल।।

150 हर नर हंसा रूप प्यारो, जन्म मरन का संग मत जान।
ना है टूटे ना मल लागे प्यारो, ना जल ना जाये ले जान।
साहिब जी : हर हंसा अमर रूप ले जान।।

151 कर्म धर्म सब झूठ प्यारो, जात पात भी झूठ तूं जान।
जग के रिश्ते नाते झूठे बंधन प्यारो, मन माया का काम ले जान।
साहिब जी : निज महिमां की कर पहचान।।

152 ''वे नाम'' सब्द के ज्ञान सूं प्यारो, निर्मल बुद्धि महान ले जान।
बिन ''वे नाम'' सब्द के प्यारो, सुरति चेतन मत जान।
साहिब जी : दुख सुख एक सम्मान ले जान।।

153 जग में सब जीवन प्यारो, हंसा अमरलोक से आये ले जान।
पांच तत्व का तन प्यारो, मन माया का रूप ले जान।
साहिब जी : आत्म में सच्चा रूप हंसा ले जान।।

154 निज को जानो पहचानों प्यारो, तुम तो हंसा रूप महान।
निज की भूल के कारण प्यारो, कभी ना होती निज की पहचान।
साहिब जी : जग में पूर्ण सतगुरू पाना काम महान।।

155 अनुभव आत्म ज्ञान का प्यारो, कथनी ना कोई सार।
कथनी धूल समान प्यारो, चेतन सुरति का पाना सच्चा सार।
साहिब जी : सतगुरू चेतन सुरति में सब सार।।

श्री कृष्ण अर्जुन को कहते हैं :–

156 अर्जुन तूं निज में ही नहीं, कैसे पकड़े मेरी बात।
कथनी करनी जब एक धार प्यारे, तब कथनी में सार।
साहिब जी : निज में रहना करावे मन माया से पार।।

157 श्री कृष्ण कहत कर्म कर्ता जो मेरे प्यारे, ताका कुछ नहीं दौष।
गुरू की जो ना सुने प्यारो, उसके सर पर दौष।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द बिन जो करो सो दौष।।

158 जो जग में जैसो करे प्यारो, तैसो ही पावे सोये।
बिन संतन शरणी पड़े, जन्म जन्म दुखी होये।
साहिब जी : सतगुरू पार करावे तोये।।

159 करनी करे सब का भूला, कथनी पर्वत समान।
कथनी करता करता मरि गया, जग उसे मत जान।
साहिब जी : जो सुरति में रहे उसे जागा तूं जान।।

160 करनी बिन कथनी करे प्यारो, अज्ञानी बिन कुछ ना जान।
उस का जीवन दुखी से भरा प्यारो, चारों ओर फिरे कूकर समान।
साहिब जी : मन से काम करना दुख का कारण जान।।

161 ''वे नाम'' सब्द जो साधक सुमिरे प्यारो, हंसा रूप पा जाये।
पूर्ण सदगुरू 'वे नाम' सूं दात प्यारो, पाओ हंसा रूप हो जाये।
साहिब जी : मन माया जाल सूं बच पाये।।

162 जो ''वे नाम'' सब्द सुरति सूं ध्यासे प्यारो, मोक्ष पद मिली जाये।
सत्य प्रेम आनंद प्रकटाये प्यारो, निज घर को वह जाये।
साहिब जी : परम हंसा हो जाये।।

163 ''वे नाम'' सब्द की महिमां प्यारो, मन माया सूं आन छुड़ाये।
''वे नाम'' सब्द परमपुरूष सुरति सूं आयो, 'वे नाम' सतगुरू में आन समाये।
साहिब जी : आप में आप समाये।।

164 ''वे नाम'' सब्द की महिमां अति न्यारी प्यारो, मन माया संग छूट जाये।
यह दात सत्यपुरूष सूं आई प्यारो, सतगुरू सुरति सूं पकड़ी जाये।
साहिब जी : संत ही जग को ले जगाये।।

165 काल की महिमां जो कोई गावे प्यारो, मन माया चक्र में पड़ जावे।
सुर नर मुणि को सतावे प्यारे, कोई बिरला ही बच पावे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द पूर्ण मोक्ष दे जावे।।

166 ''वे नाम'' दात सत्यपुरूष सूं पाई प्यारो, ले लो रे भाई ले लो रे।
कंई युग बीते मनुष्य नहीं जागा, सच्ची दात को ले लो रे भाई ले लो रे।
साहिब जी : इस दात बिन कोई पार ना होये रे।।

167 सुन लो मेरी बात प्यारो, शब्द सूं प्रकटा संसार ले जान।
हंसा रूप होई निर्वाण मिले प्यारो, तां सूं छूटा संसार ले जान।
साहिब जी : सतगुरू सूं पा ले सच्चा ज्ञान।।

168 श्री कृष्ण पल पल चितारते प्यारो, किस कारण तुम भयो अधीन।
क्षत्री धर्म की लाज बचाओ अर्जुन, निज को दौषी कैसे लिया जान।
साहिब जी : अर्जुन को निज में निज की नांहि पहचान।।

169 कोई ना मरता इस जग आई प्यारो, वस्त्र बदलना काम ले जान।
जो तन तजता नया पा लेता प्यारो, आत्म हंसा रूप ले जान।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू की महिमां जान।।

170 सच्ची दात ''वे नाम'' सब्द की प्यारो, आवागमण मिटा जाई।
सुरति आत्म अमरजोत प्यारो, जिस जाई पूर्ण मोक्ष मिल जाई।
साहिब जी : दुख सुख से पार हो जाई।।

श्री कृष्ण कहत हैं :–

171 जब जब पाप प्रकट जग होई, धरी अवतार नाष करों मैं सोई।
जब जब द्वापर आवे जग मांहि, हम तुम यहि विधि करें सब आई।
साहिब जी : पाप कर्म से पार ना हो पाई।।

172 कौरव पाण्डव बार–बार लड़े प्यारो, आप हीआप मरे और जिये।
तुम्हारे किये कुछ नांहि होई, निरंकार आप पाप में डाले तोये।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू सूं पूर्ण दात पा जावे सब कोये।।

'वे नाम' सतगुरू कहते हैं :–

173 तुम तो अभी खुद ही नहीं प्यारो, कैसे जानोगे निज आप।
सहज अवस्था जब मिले, तभी बनो करता तुम आप।
साहिब जी : मन माया केवल देत संताप।।

174 आपुं जो करता सो काल कहावे प्यारो, सोई करावे संधार।
मन में ईच्छा तृष्णा प्रगटावे, तभी जीव सोया संग संसार।
साहिब जी : कल और कल में जान संसार।।

175 मन अनुसार जग में ना रहना प्यारो, ईच्छा रहित सतगुरू में करो ध्यान।
शस्त्र आदि तुम मत हाथ लगाओ, सुरति सब्द में स्वांसा संग ध्यान।
साहिब जी : कर्ता निज को मत जान।।

176 वही काया जो सुरति में आन समाया, मन बुद्धि चित्त अहंकार ले जान।
यह तन पांच तत्व से आया प्यारो, सुरति को मन मान भरमाया ले जान।
साहिब जी : निज की महिमां ले जान।।

177 जे माया में मन रहे समाया प्यारो, मृतक लोक सदा रहे समाया।
मन में कोई मांग ना आवे, पल में तन से पार हो जावे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द दात जब संग समावे।।

178 ''वे नाम'' सब्द सतगुरू सूं पाओ, हंसा बन निज घर को जाओ।
यदि संपूर्ण जगत मिल जाये, आत्म से हंसा कैसे बन पाओ।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द दात से पार हो जाओ।।

179 संसार के सब सुख प्यारो, तन के संग ले जान।
जो कुछ आन जगत में पायो, तन छूटन पर जग का सब छूटा ले जान।
साहिब जी : संतों का जग से कुछ लेन ना देन।।

180 लखश में सुरति डाल दो प्यारो, लाभ हानी पर ना धरो ध्यान।
पूर्ण सतगुरू के चरण में, पल पल धरो ध्यान।
साहिब जी : सतगुरू महिमां जान महान।।

181 सतगुरू की प्रेम सुरति से, सत्यपुरूष प्रसन्न महान।
सदगुरू प्रसन्न किये बिना प्यारो, पूर्ण मोक्ष अति दूर ले जान।
साहिब जी : सतगुरू कृपा की महिमां महान।।

182 अल्प ज्ञानी स्वर्ग प्राप्ति की करता चाह प्यारो, अच्छे लोक की ईच्छा करते ले जान।
यज्ञ दान पुण्य में रूची प्यारो, कर्मों का बंधन जान महान।
साहिब जी : सच्ची भक्ति 'वे नाम' सतगुरू सूं ले जान।।

183 निज को पहचान प्यारो, आत्म की पहचान ही सच्च ज्ञान ले जान।
सदगुरू सेवा पूर्ण मोक्ष प्यारो, पाना सच्चा काम ले जान।
साहिब जी : सदगुरू सत्यपुरूष का तदरूप ले जान।।

184 बुद्धि जब एक से अनेक हो जात प्यारो, वे ही वासना जान।
बिन सार सब्द की दात के प्यारो, समाधि में स्थिर मत जान।
साहिब जी : दुख सुख में रहो एक समान।।

185 मोह रूपी दल दल को तूं पार कर, तभी तो जागन होये।
सुनने और सुनाने के लिये, मनुष्य को निज की पहचान होये।
साहिब जी : प्रेम सत्य की ओर सुरति से चलना आये।।

186 तूं सफलता और निष्फलता में प्यारे, समान भाव से सुरति ध्यान।
समता ही योग कहलात है प्यारे, समत्व सुरति सूं ले काम।
साहिब जी : सुरति का मन माया सूं नांहि काम।।

187 समत्व सुरति से योगी जन, फल का करते त्याग।
यहि विधि चार मुक्ति फल होत प्यार, जन्म मरन की ता से ना छूटे तार।
साहिब जी : सतगुरू 'वे नाम' संग जोड़ सुरति की तार।।

188 सुरत योग की दात सूं प्यारो, मन माया का छूटे संग।
सुरति तार सूं ''वे नाम'' सब्द को जोड़ते, पाओ महां चेतन सुरति का संग।
साहिब जी : साहिबन महां चेतन सुरति का होता संग।।

189 अब तुम हंसा हो गयो, जन्म मरन का छूटा संग।
सुरत कमल जाओ सतगुरू संग प्यारो, पहुंचो सच्चे घर उन्हीं के संग।
साहिब जी : करो सुरति सूं सतगुरू चेतन सुरति का संग।।

त कहे भगवान सुन हो ज्ञानी, कथि जो जन तुम्हारी वाणी जी।
युक्त महात्मां सबै बताऊं, तुम्हारा नाम ले पंथ चलाऊं जी।
साहिब जी : निरंकार गुरू शिष्य वेद ब्खानी जी।।

अर्जुन उवाच

190 हे केशव स्थित प्रज्ञय के लक्षण, मुझ को दो बतलाये।
किस प्रकार वह बोलता, चलना फिरना दो बतलाये।
साहिब जी : मन बुद्धि चित्त शांत कर जाये।।

श्री भगवान उवाच

191 जब नर मन तरंग को, पल में करे त्याग।
ऐसी रहनी रहे वह बोले, बिन सुरति आत्म सब का त्याग।
साहिब जी : मन माया तरंग का त्याग।।

192 अब सुरति बैठे सुरति डोले, आत्मां शुद्ध सूं आत्म करे विचार।
अब शुद्ध आत्म देखे आत्म सुने, आत्म सूं करे विचार।
साहिब जी : जो कोई पावे पूर्ण सतगुरू को वे ही होवे पार।।

193 अब मन बुद्धि निष्कामी होई, मन माया सूं होये बाहिर।
बोल सत्य असत्य ना भाखे, अतंर ध्यान प्रेम संग जुड़ गई तार।
साहिब जी : स्थित प्रज्ञ नर बने ''वे नाम'' सब्द की धार।।

194 दुख सुख में सम दृष्टि राखे, दृष्टि सूं सतगुरू संग तार।
तत्व सत्यपुरूष उसी को जानो, बाहर भीतर 'वे नाम' संग जोड़े तार।
साहिब जी : स्थित प्रज्ञ ज्ञान की महिमां अपार।।

195 यह लक्षण ब्रह्म ज्ञानी के प्यारो, ईंद्री जीते दुख सुख से पार।
काम क्रौध का संग छूटा प्यारो, आनंद भयो उजियार।
साहिब जी : महां चेतन सुरति का भयो उजियार।।

196 राग़ द्वेष से पार प्यारो, जाने सब जीव एक समान।
कौन बुरा और कौन भला, कुछ भी भेद ना जान।
साहिब जी : हर और से सत्य प्रेम आनंद की अमृत वर्षा होती जान।।

197 जा की प्रीत लागी 'वे नाम' सतगुरू सूं, दूजे सब सुख तुछ तूं जान।
वह तो खुद को भूल कर प्यारे, पाता दर्श महान।
साहिब जी : अंदर देख तूं कितना महान।।

श्री कृष्ण कहत हैं :–

198 अर्जुन जे तूं हंसा बने, पल में आप पाओ अंदर दर्श साहिबन महान।
ताहि को निज ज्ञान सुनाऊं, सकल कामना मिट जाये।
मूरख मानव कुछ नहीं माने, काम क्रौध संग संग रहाये।
साहिब जी : बिन ''वे नाम'' दात मन माया संग छूट जाये।।

199 अर्जुन मोह ग्रस्त संपूर्ण भयो, श्री कृष्ण कियो विचार।
विराट रूप को धार कर, अर्जुन भूला सभी विचार।
साहिब जी : श्री कृष्ण धारा विराट रूप अपार।।

200 अब वष में पड़ा प्यारो, चकित हुआ देख भगवान विराट रूप।
अर्जुन भयभीत हुआ, देख काल पुरूष का रूप।
साहिब जी : देख लो मन माया का रूप।।

201 श्री कृष्ण का अस्त्र चल गया, जब धारा काल का रूप।
हाथ बांध अर्जुन नित मस्तक हुआ, आज्ञा का पालन किया देख ये रूप।
साहिब जी : अर्जुन भूला निज का रूप।।

202 'वे नाम' सतगुरू परम हंसा देत पुकार हैं, चीन्हो तत्व भेद सत्य सार।
'वे नाम' से पा लो ''वे नाम'' सब्द को, छूटे काल जाल हो पार।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू सूं जोड़ ले सुरति धार।।

203 मूर्ख सत्य सब्द नहीं जानता, सतगुरू सूं ना करता प्यार।
'वे नाम' सतगुरू बंधन काटता, पल में करता उस पार।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द दात की महिमां अपार।।

204 पर्पंची जग को रचा, मिले सतगुरू मिले ना द्वार।
काल के भेद को जाने नहीं, झूठे स्वपनों में नर नार।
साहिब जी : तिन लो स्वपनों का संसार।।

205 शब्दे धरती आकाश प्यारो, पर सब्द सब्दे भयो प्रकाश।
हंसा होई निर्वाण को पावे, मन तरंग मिटावे सुरति चेतन प्रकाश।
साहिब जी : परम चेतन सुरति का हर ओर प्रकाश।।

अर्जुन को श्री कृष्ण कहते हैं :–

206 धनुष बाण की पकड़ कर प्यारे, सुनो ध्यान सूं मेरी बात।
प्राण रहें या ना रहें, जीत हार जानो एक सी बात।
साहिब जी : सुरति मन मान से पार ले जात।।

207 अजर अमर है आत्मां प्यारे, है और रहेगी सदा।
देह भी तो मरती नहीं प्यारे, पांच तत्व में जा समाती।
साहिब जी : प्राण कर्मों अनुसार तन पाते सदा।।

208 आत्मां शस्त्र सूं कटती नहीं प्यारे, आगे जलावे नांहि।
जल वायु सूं भी प्यारे, गले मुकावे नांहि।
साहिब जी : आत्म हंसा रूप बिन कुछ नांहि।।

209 निज रूप ना जान सके तो प्यारे, फिर फिर जन्म जग होई।
अमर तुम में बिरला प्यारो, फिर फिर आवागमण समाई।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द बिन मोक्ष ना पाई।।

210 हानी लाभ को छोड़ कर प्यारे, धनुष बाण को धार।
पाप उसे छूवे नहीं प्यारे, समर्पण होई कर करे संग्राम से पार।
साहिब जी : कर्ता मत बन ताही से पार।।

211 स्थिर बुद्धि उसकी प्यारे, वासना जो देत त्याग।
भय और क्रौध को त्याग कर प्यारे, सब सूं करे प्यार।
साहिब जी : सब हंसों में एक की ही धार।।

212 दुख सुख में एक सम रहें, राग़ द्वैष सूं पार।
विषय कामना छोड़ कर प्यारे, 'वे नाम' सतगुरू सूं प्यार।
साहिब जी : तीन लोक से पार साहिबन दरबार।।

213 ईन्द्री दमन से होत है प्यारो, प्रसन्नता का आभास।
स्थिर बुद्धि और शांति प्यारो, सुरति में करती वास।
साहिब जी : सुरति निरति के मेल से मन में शांति का वास।।

214 ईन्द्री मन जब एक प्यारो, होत बुद्धि का नाष।
सागर में नावों का प्यारो, आंधी ज्युं करती नाष।
साहिब जी : मन माया की कैद में सुरति निरति का नांहि साथ।।

215 मन में मान कबहुं नांहि कीजै, कौन मारे और किस को मारे।
आपु करता भगवन कहावै, सोहि करावे संधार।
साहिब जी : काल भगवन ही करावे संधार।।

216 कौरव पाण्डव फिरी फिरी लड़ी है, मारी मारी विनाष।
तुम्हरी कारण कछु नांहि होई, काल निरंझन सूं ही विनाष।
साहिब जी : मन माया का खेल खेल में करत विनाष।।

217 मन में मान कबहुं नांहि कीजै, कौन मारे और किस को मारे।
आपु जो करता भगवन कहावे, सीधी करावे संधार।
साहिब जी : जो करता बनता पाप का भागीदार।।

218 तुम शिर पाप का मारा प्यारो, जब काल ही करे संधार।
तुम सुरति सुरति को जगाओ, मत करो किसी का संधार।
साहिब जी : जो करता बनता पाप का भागीदार।।

219 जो काया सो मन समाया, मृतक काया का काम।
मन माया धारे यह काया, निज की नांहि पहचान का काम।
साहिब जी : मन माया की कैद में सुरति निरति का काम।।

220 जो करता भगवान को ही करता मानता प्यारो, सुरति चेतन बिन बने ना बात।
निज को निज में पाना प्यारो, मन मान मिटाने की बात।
साहिब जी : श्री कृष्ण ने बताई नहीं ये बात।।

221 जो हर वस्तु भगवान की मानता प्यारो, उसी की जान करता प्रयोग।
उसे ज्ञानी ही जान कर प्यारो, उस के वचनों का करो प्रयोग।
साहिब जी : सुरति निरति को एक कर करो प्रयोग।।

222 राग द्वैष इन्द्री रस प्यारो, इस में आसक्ति नहीं।
काम क्रौध नित बाधा बनें, जे पूर्ण सतगुरू ना पाया हो।
साहिब जी : मन मान छूटे जे, ''वे नाम'' सब्द को पाया हो।।

223 जो जाकि भक्ति करे प्यारो, सो लोक में जाई समाये।
जो श्री कृष्ण की भक्ति करे प्यारो, गौ लोक को जाये।
साहिब जी : सुरति जागे काम बन जाये।।

224 भौग भौग कर हर लोक से प्यारो, पुनः मृत्यु लोक आ जायें।
अमर लोक ही सच्चा लोक प्यारो, वहां जाई वापिस ना आयें।
साहिब जी : अमर लोक पूर्ण मोक्ष देश कहलाये।।

225 अर्जुन बोले भगवन सूं प्यारो, ब्रह्म और आत्म का दो ज्ञान।
भौतिक जगत और देवता, संग मन का क्या है काम।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष का पाना ही सच्चा ज्ञान।।

श्री कृष्ण उवाच :–

226 यह तन कागज की नाव प्यारो, संसार नदी जल धार।
ईन्द्रियां वश पड़ा जीव है, फिर फिर धारे शरीर।
साहिब जी : तनमन के वश आत्म धार।।

227 कहते कहते लाखों जन्म गये, आज ना किया मन वश।
मनुष्य मन माया के वश पड़ा प्यारो, सतगुरू 'वे नाम' बिन हो त ना वश।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द दात से ही होता वश।।

228 'वे नाम' सतगुरू परमहंसा प्यारो, पल पल देत पुकार पे पुकार रे।
चीन्हो तत्व भेद सत्य सार, चलो सुरत कमल सतगुरू द्वार रे।
साहिब जी : ग्याहरवां द्वार ही पूर्ण मोक्ष द्वार रे।।

229 तन काया अथाह प्यारो, कोई कोई जाने सच्चा भेद।
छेः तन की काया मनुष्य की प्यारो, जानो इस का भेद।
साहिब जी : निज की पहचान देती सार भेद।।

230 हर मनुष्य तीन शरीरों में प्यारो, वासा करता जान।
योगी पंच शरीर में प्यारो, जग में करते वासा ले जान।
साहिब जी : योगी की महिमां महान ले जान।।

231 योगेश्वर छठा शरीर पार का प्यारो, दसवें द्वार सूं होते पार रे।
पपील मीन की चाल सूं प्यारो, शरीर सूं होते पार रे।
साहिब जी : चौथे पांचवे छठे तन की महिमां महान रे।।

232 पृथ्वी जल अग्नि तीन तत्वों से प्यारो, हो जाता वह पार रे।
यह अवस्था अति प्यारी, पवन भोग पवन तत्वों में वास रे।
साहिब जी : छेः तत्वों को पार कर पहुंचो साहिबन दरबार रे।।

233 जीवित मरना 'वे नाम' सतगुरू सूं प्यारे, जान ले ''वे नाम'' सब्द पाने पर।
तन छूट जाता प्यारो, सतगुरू का संग पाने पर।
साहिब जी : स्वांसा उर्दमुखि हो जाती तन छूटे जाने पर।।

234 ऐसी अवस्था जब मिले प्यारो, आत्म सुरति तन सूं होती पार।
ऐसी अवस्था पाने पर प्यारो, ''वे नाम'' सब्द करावे पार।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द से सुरति निरति एक होने से पार।।

235 रंरकार खेचरी मुद्रा प्यारो, दसवां द्वार खोलने का भेद।
ब्रह्म विष्णु महेश और महां योगेश्वर प्यारो, रंरकार की महिमां का जानें भेद।
साहिब जी : इस में समस्त पवनों का भेद।।

236 दसवें द्वार म ें पवन का ताला, पवन सूं खोलने का भेद।
अति कठिन है खोलना इस का, खुले ना बिन पूर्ण भेद।
साहिब जी : पवन को पलट कर शून्य में पाये शून्य का भेद।।

'वे नाम' सतगुरू परमहंस साहिब जी कहते हैं :–

237 मार्ग ज्ञान जग दोई जानो प्यारो, एक कर्म एक पूर्ण मोक्ष।
ब्रह्म ज्ञान सूं पूर्ण मोक्ष ना प्यारो, पूर्ण सदगुरू सूं पूर्ण मोक्ष ज्ञान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सत्यपुरूष सूं आया जान।।

238 निष्कर्मी निर्मल निर्मोही प्यारो, सदा धरो सब्द सुरति में ध्यान।
सब्द सुरति सूं पहुंचे प्यारो, महांचेतन सुरति चेतनसुरति में ध्यान।
साहिब जी : तीनों एक होने से निजघर वासा ले जान।।

239 जग में रहो तुम कमल समाना, नहीं आशा तृष्णा का संग।
दान पुण्य कर्म धर्म प्यारो, फल ईच्छा का छूटे संग।
साहिब जी : कर्म धर्म सब मन माया के अंग।।

240 जो कुछ भी तीन लोक में प्यारो, मनुष्य के तन में भी ले जान।
तीनों लोक पांच तत्वों से प्यारो, रचना होई महान ले जान।
साहिब जी : पांच शब्द पांचों मुद्रा सोई मन खेल ले जान।।

241 जो नर डूंढे वस्तु प्यारो, सो ''वे नाम'' सब्द में जान।
सतगुरू 'वे नाम' भेदी प्यारो, पल में तीन लोक पार ले जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द में परम सुरति का वासा ले जान।।

242 ऊँचे कुल में जन्म पाना प्यारो, स्वर्ग लोक से चौरासी में आना ले जान।
सगुण भक्ति में प्यारो, अच्छे बुरे कर्मों का फल मिलता ले जान।
साहिब जी : सगुण भक्ति से पूर्ण मोक्ष कभी ना जान।।

243 काम क्रौध हिंसा लोभ से पार प्यारो, पूर्ण मोक्ष भक्ति भेद सतगुरू सूं जान।
यह भेद कृष्ण लीलाओं से पार प्यारो, सतगुरू चरणों में समर्पण ले जान।
साहिब जी : सच्चे भेदी सूं वस्तु पावे महान।।

244 जब जब सुरति लागै सदगुरू रूप की प्यारो, झलके नैनन पानी।
रात दिवस नींद ना आवे प्यारो, भावत अन्न ना पानी।
साहिब जी : सतगुरू भेदी मेरी पीर बुझानी।।

245 खोजी होवे सुरति सूं प्यारो, सदगुरू को ले पिछानी।
ता सूं पीर कहै तन मन की प्यारो, भेद का भेदी ले पिछानी।
साहिब जी : सच्चा सदगुरू प्रेमी ले जानी।।

246 तीर्थ व्रत करि करि जग मुआ, जैसे पानी में चले मदानी।
जब जब सुरति लगै सदगुरू रूप की, पल पल संग ही जानी।
साहिब जी : देश विदेश में ले पिछानी।।

247 सदगुरू सब्द सुरति सूं प्यारो, पूर्ण ही सत्य मानो।
तजि सब आशा सब्द में सुरति वासा, निज को कागा से हंसा ले जानी।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द की महिमां लो जानी।।

248 ''वे नाम'' सब्द सच्ची दात प्यारो, कोई प्यारा 'वे नाम' सदगुरू सूं पाये।
मन माया छूटे हंसा बन प्यारे, निजघर सत्य लोक को जाये।
साहिब जी : सुख दुख में भेद खो जाये।।

249 विहंगम चाल विहंगम मार्ग प्यारो, सदगुरू 'वे नाम' दे बताई।
इस मार्ग कुछ चलता नांहि प्यारो, मन मान छूट सत्य लोक को जाई।
साहिब जी : पपील मीन से आगे विहंगम चाल पा जाई।।

250 सुरत ध्याण बिन प्यारो, नहीं कोई सत्यलोक को जावे।
पपील मीन चाल से प्यारो, तीन लोक की सैल को जावे।
साहिब जी : विहंगम चाल संग सदगुरू निज घर को जावे।।

251 भृंगा मत्ता जा के पासा प्यारो, सोहि जानो संत महान।
इस मत्त से हर जीव प्यारो, पल छिन पावे हंसा रूप महान।
साहिब जी : सहज मार्ग भृंगा मत्ता से मनुष्य पार ले जान।।

252 इस मार्ग पर चलना आसान नहीं प्यारो, जीवित मरना तूं जान।
कोई ना सहज बनना चाहता प्यारो, जिवित मरना नांहि आसान।
साहिब जी : स्वांसा उर्दमुखि करना नहीं आसान।।

अर्जुन पूछते श्री कृष्ण सूं

253 प्र0 : हे मधु सूदन जग का स्वामी कौन, कैसे करता शरीर में वास।
मृत्यु के समय जो भक्ति में रहे, कैसे जाने तुम्हारा वास।
साहिब जी : जो जाकि भक्ति करे ताके लोक निवास।।

254 उ0: मृत्यु आने पर प्यारे, तन सुशुप्ति अवस्था में आ जाप।
स्वांसा संग मन साथ हो, आत्म संग संग चलती आप।
साहिब जी : आत्म कैद में आप।।

255 जप तप व्रत यम नियम अपारा, काया काल पसारा।
आत्म कर्म कराति प्यारो, मन माया का सकल पसारा।
साहिब जी : आत्म ना जाने काल पसारा।।

256 पांच तत्व गुण तीन लोक निरमाय प्यारो, सब जान काल की माया।
सभी धर्म निरंकार ध्यावे प्यारो, सत्यपुरूष का भेद ना पाया।
साहिब जी : काल का देश पराया।।

257 पीर पैगंबर मत मतांतर, काल की सीमां को पाया।
ऋद्धि सिद्धि शक्तियों को प्राप्त किया प्यारो, जग में भरम फैलाया।
साहिब जी : मन माया सबै भरमाया।।

258 धोखे पड़ा सकल संसारा प्यारो, बिन 'वे नाम' सदगुरू नहीं निस्तारा।
''वे नाम'' सब्द 'वे नाम' सदगुरू सूं पावे, सब भ्रम होत निस्तारा।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द बिन नहीं निस्तारा।।

259 भ्रम जाल में सकल संसारा, सच्ची बात ना जाने को।
जे 'वे नाम' सदगुरू मिलें, पल में पावे भेद सब को।
साहिब जी : सच्चे भेद से पार हर को।।

260 कर्म जाल छूटे नहीं प्यारो, कल जान सूं आयो।
'वे नाम' सदगुरू सूं भेद प्यारो, बिन पाये नर्के जाये।
साहिब जी : काल का जीव भेद ना पाये।।

261 सेवक सेवा में रहे प्यारो, बिन सेवा पार ना कोये।
जो सेवक सेवा नहीं जानत प्यारो, वे दुखी का दुखी रह जाये।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द कैसे वे पाये।।

262 चाह ना रख कोई प्यारे, जे मन माया से होना पार रे।
चाह सूं ना छूटे संसारा, बिन चाह के मिलता मोक्ष द्वार।
साहिब जी : चाह कारण मन मान बांधा संसार।।

263 सुरति निरति जब सार सब्द समावे प्यारो, तब मुक्त कोई होत ले जान।
निःअक्षर दात मुक्ति प्रवाणा, सुरति निरति एक साथ ले जान।
साहिब जी : मन मान का भाण टूटा ले जान।।

264 कोई कमाई करनी नहीं प्यारो, निज सुरति स्वांसा ध्यान।
करता केवल 'वे नाम' सदगुरू प्यारो, बिन कुछ किये जोड़ता ध्यान।
साहिब जी : एकाग्र होना काम महान।।

265 जब मन है तुम नांहि प्यारे, मन जाये हंस तुम होत।
मन माया छूटे बिन प्यारो, आत्म ना हंसा होत।
साहिब जी : मन माया छूटें निज घर वासा होत।।

266 जब मन संग तब सदगुरू नहीं प्यारो, अब सदगुरू है मन नांहि।
सुरति में दौ कैसे समावें, जहां हंसा मन नांहि।
साहिब जी : सुरति निरति से मन का लेन देन कुछ नांहि।।

267 विषयों में जग का मन में वासा, योगी सुरति में कैसे होये।
जब कोई साधक ''वे नाम'' सब्द में जागे, योगी कुछ मन में होये।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द से मन माया का संग जाये।।

268 छोड़ें विषयों की कामना प्यारो, निर ईच्छा नर होये।
अहंकार ममता को तजे प्यारो, शांति का वासा होये।
साहिब जी : सुरति चेतन सब्द संग मन शांत हो जाये।।

269 भृंगा ज्ञान को जान ले प्यारे, मोह का कर तूं त्याग।
मन बुद्धि वश काम प्यारो, सतगुरू सूं अनुराग।
साहिब जी : मन माया जाने से जाग अनुराग।।

अर्जुन उवाच

270 अर्जुन कहे कृपा सिन्धु प्रभु, प्रेम सूं दो समझाये।
कर्म और त्याग में कौन उत्तम प्यारो, इस का भेद दे दिीीये बतलाये।
साहिब जी : कर्म हो त्याग की महिमां महान।।

श्री कृष्ण उवाच

271 निष्ठा अपनी अपनी प्यारो, जो चाहे अपनायो।
सिद्धि सूं ज्ञानी भूले, कर्मों कर्म अपनायो।
साहिब जी : जो भावे अपनायो।।

272 बिना कर्म के जीना कठिन प्यारो, फल का कारण जाये।
बिना फल ईच्छा कर्म करे, तो ही कर्म कहलाये।
साहिब जी : फल ईच्छा बिन कर्म महान कहलाये।।

273 नर अंत समय जिस का ध्याण करता प्यारो, उसी में समाता जान प्राण।
जो भी भाव मन में रहे, उसी भाव संग जायें प्राण।
साहिब जी : मन भाव का तजना सुरति सूं ले जान।।

274 श्री कृष्ण अर्जुन को कहत हैं, मुझ में धरो ध्यान
जो मुझ को नित भजता प्यारो, मुझ में ही समाना जान।
साहिब जी : गौ लोक में वासा जान।।

275 अंत समय जो नर प्यारो, कृष्ण का स्मरण करते मरे रे।
तुरन्त उनके स्वभाव को पा, मोह माया से पार रे।
साहिब जी : फल भौग कर फिर जग में वासा रे।।

276 कृष्ण रूप औंकार भगवन का, नित चिंतन करे जो आप।
युद्ध क्षेत्र में कर्म का पालन, लाभ हानी में ना जावे आप।
साहिब जी : लाभ हानी का संग छोड़े आप।।

277 ब्रह्म कहलाता जीव प्यारो, पार ब्रह्म निरंकार का रूप।
भौतिक चेतना पदार्थ प्यारो संग, जन्म मरन एक रूप।
साहिब जी : मन माया का हंसा रूप।।

278 भौतिकता आध्यात्मिक प्रकुति का संग प्यारो, तन का संग छूट ना पाये।
कभी ना छूटे संग का काल प्यारो, केता करो उपाये।
साहिब जी : ''वे नाम'' दात बिन काल का संग ना जाये।।

279 यज्ञ तप ध्यान गुरू ज्ञान सूं प्यारो, स्वर्ग लोक पा जाये।
पुण्य क्षीण हो जाने पर प्यारो, पुनः मनुष्य जग में आ जाये।
साहिब जी : गुरू ज्ञान से प्यारो पूर्ण मोक्ष कैसे मिल पाये।।

280 विशेष यज्ञ प्रक्रिया सूं प्यारो, उमीष्ट स्वर्ग लोक में जाये।
यज्ञ का पुण्य क्षीण होने पर प्यारो, राजा बने सुख पाये।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष कभी ना पाये।।

281 हंसा आत्म काल का रूप ना प्यारो, यह तो सुरति एक रूप।
मन माया छूटें आत्म सूं प्यारो, धार सच्चा हंसा रूप।
साहिब जी : सुरति निरति के मेल से हंसा रूप।।

282 नौ नाथ चौरासी सिद्ध प्यारो, पांच शब्द से पार ना जान।
मन माया का संग ना छूटा, फिर औंधे मुंह लटके ले जान।
साहिब जी : माया सबै लुभाया ले जान।।

283 मन माया तो एक से प्यारो, हंसा रूप मत जान।
इस माया हंसा भरमाया, दुख पे दुख देत महान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द ले चले निज धाम।।

284 माया मन की मोहिनी जान प्यारे, सुर नत नारी अति लुभाया।
इस माया सबै भरमाया प्यारो, कोई पार ना हो पाया।
साहिब जी : ''वे नाम'' सतगुरू आन समझाया।।

285 'वे नाम' सतगुरू ''विदेह दात'' है लाया, किसी प्यारे ले भेद को पाया।
सुर नर मुणि सबै भरमाया, कोई पूर्ण सतगुरू 'वे नाम' को जान ना पाया।
साहिब जी : हर एक को लेन देन में भटकाया।।

286 गये चित और मन दौ तीर्थ को प्यारो, चित चंचल मन चोर हो आया।
एक भी पाप काटा ना नर का, दस मन संग में और ले आया।
साहिब जी : मन माया का भेद किसी प्यारे पाया।।

287 लेन देन जग व्योपार प्यारो, इसी सूं भटकता जीव।
जो कुछ दे ना प्यारो, मांग पे मांग बनावे चोर सूं जीव।
साहिब जी : देने वाला पार जान वे जीव।।

288 आत्मां अजर नित्य शाश्वत पुरातन प्यारो, केवल बदलता जान शरीर।
आत्मां चेतन अमल सहज अविनाशी प्यारो, मोक्ष मिलने से छूट शरीर।
साहिब जी : आत्म मन माया तजे, हंसा बिन शरीर।।

289 समत्व बुद्धि धार प्यारो, दुख सुख जान एक समान।
फल की आशा त्याग कर प्यारे, निष्कलंक मोक्ष ध्यान सूं जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सूं, सुरति चेतन ले जान।।

290 मन वाणी तथा शरीर सूं, कर्म ना करने का भाव निष्कर्म कहलाये।
निष्कमता का भाव ना उत्पन्न हो सके प्यारो, बिन कर्म के किये।
साहिब जी : कर्म की तार निष्कमता सूं जोड़ी कहलाये।।

291 यज्ञ के द्वारा बुद्धि को प्राप्त करना प्यारो, और देवी देव से फूल पाना।
यज्ञ द्वारा संतुष्ट देवी देव सूं प्यारो, ईच्छित फल को जान तूं पाना।
साहिब जी : ता से जग में दुख बिन कुछ और जाना नहीं पाना।।

292 श्री कृष्ण कहत हैं प्यारो, यज्ञ का बचा भाग जो सेवन को।
वह सब पापों से प्यारो, होत मुक्त सेवन से।
साहिब जी : मन मान छूटता सेवन से।।

293 श्री कृष्ण भगवान बोले प्यारो, रजोगुण से उत्पन्न काम को जान।
काम से ही क्रौध प्यारो, अति पापी ले जान।
साहिब जी : काम ही वैरी तूं जान।

294 जैसे धुऐं से अग्नि ढक जाती प्यारो, मैल से ढकता दर्पण जान।
वैसे ज़ेर से गर्भ ढक जाता प्यारो, काम को ढकता ज्ञान ले जान।
साहिब जी : काम वैरी को ढकता ज्ञान।।

295 मन बुद्धि ईन्द्रियां प्यारो, काम के भाण ले जान।
यह तीनों ज्ञान को प्यारो, आच्छित करते ले जान।
साहिब जी : ईन्द्रियों को वश में करना काम महान।।

296 मन बुद्धि को प्यारे, सूक्ष्म बलवान सहज श्रेष्ठ आत्मां से वश में जान।
काम रूप दुजर्य शत्रु को प्यारे, मारना सहज मत जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द बिन मन सहज मत जान।।

297 श्री कृष्ण भगवान कहते अर्जुन प्यारे, मैनें अविनाशी योग से कहा जान।
सूर्य ने पुत्र मनु से कहा प्यारो, फिर मनु ने पुत्र राजा इश्वाकु से कहा जान।
इस परम्परा से प्यारे, इस योग को राजर्षियों ने जाना जान।
साहिब जी : किन्तु बहुत काल से लुप्त ले जान।।

298 श्री भगवान अर्जुन से बोले प्यारे, तूं मेरा भक्त प्रिय सखा रे।
यह पुरातन योग प्यारे, मैनें तुझ को दिया जान रे।
साहिब जी : गुप्त वस्तु की महिमां जान रे।।

299 अर्जुन बोले भगवान से प्यारो, आप अभी जग में आये रे।
सूर्य का जन्म बहुत पुरातन प्यारो, आप का कहा क्या समझूं रे।
साहिब जी : भगवान आदि और अंत सब जानें रे।।

300 श्री कृष्ण बोले अर्जुन सूं प्यारो, तेरे मेरे बहुत जन्म हो चुके रे।
उन सब को तूं नहीं जानत प्यारे, मैं जानूं सब कुछ रे।
साहिब जी : काल ही सब करन करावन हार रे।।

301 मैं अजन्मा अविनाशी स्वरूप प्यारो, समस्त प्राणियों का ईश्वर जान रे।
जब जब धर्म की हानी प्यारो, और अधर्म की वृद्धि होत रे।
साहिब जी : साकार रूप में जग में आता रे।।

302 करो भक्ति का उद्वार प्यारो, पापियों का करो विनाष।
धर्म को अच्छी प्रकार स्थापित करो, युग युग में जग वास।
साहिब जी : मरन जन्म निर्मल आलोकिक एक साथ।।

303 जो मनुष्य कर्म में प्यारो, अकर्म देखता जान बुद्धिवान।
और अकर्म में प्यारो, देखता कर्म जान महान।
साहिब जी : वे योगी समस्त कर्मों को करने वाला महान।।

304 जिसके सम्पूर्ण कर्म प्यारो, बिन संकल्प कामना के महान तूं जान।
जिसके समस्त कर्म प्यारो, ज्ञान रूप अग्नि में भस्म ले जान।
साहिब जी : उसे पण्डित ज्ञानी ले जान।।

305 जो मनुष्य समस्त कर्मों में प्यारो, फल का त्याग कर बनता महान।
वह संसार आश्रम से प्यारो, रहित हो गया कर्ता मत जान।
साहिब जी : दुख सुख में एक समान ले जान।।

306 जिस का अंतःकरण ईन्द्रियों को प्यारे, मन माया जीत लियो ले जान।
समस्त भोगों की सामग्री प्यारो, परित्याग कर दिया ले जान।
साहिब जी : निज की पहचान महान।।

307 जो बिन ईच्छाओं के प्यारो, प्राप्त पदार्थ में संतुष्ट ले जान।
आशा रहित कर्म कर्ता प्यारो, पापों को प्राप्त मत जान।
साहिब जी : त्यागी का जीवन महान।।

308 ईच्छा रहित जो कुछ पाओ प्यारो, सदा संतुष्टि पाता ले जान।
हर्ष शोक आदि द्वंदों से प्यारो, पार होना महान ले जान।
साहिब जी : कर्मयोगी कर्मों में बंधा मत जान।।

309 जी देहाभिमान ममता से रहित प्यारो, सुरति सच्चे ज्ञान में स्थित महान।
यज्ञ सम्पादन के लिये प्यारो, कर्म में पूर्ण विलीन महान।
साहिब जी : यज्ञ की महिमां जान महान।।

310 यज्ञ में अर्पण शत्रु आदि भी प्यारो, ब्रह्मरूप का पाते स्थान।
हवन किये जाने योग्य द्रव्य प्यारो, ब्रह्मरूप का पाते स्थान।
साहिब जी : अग्नि में आहुति किया ब्रह्म समान।।

311 ब्रह्म कर्म में स्थित रहने वाले प्यारो, योग्य फल भी ब्रह्म ही ले जान।
कुछ योगी जन प्यारो, देवताओं के यज्ञ का अनुष्ठान करना महान।
साहिब जी : आत्म रूप यज्ञ का हवन महान।।

312 ब्रह्म रूप कर्ता के द्वार प्यारो, ब्रह्म रूप क्रिया भी ब्रह्म ले जान।
ब्रह्म रूप अग्नि में प्यारो, आहुति देना रूप क्रिया भी ब्रह्म ले जान।
साहिब जी : ब्रह्म कर्म में स्थित रहना भी ब्रह्म फल ले जान।।

313 कुछ योगी जन प्यारो, देवताओं के पूजन रूप यज्ञ करते ले जान।
पर ब्रह्म अग्नि में प्यारो, अभेद दर्शन रूप करते ले जान।
साहिब जी : आत्म रूप यज्ञ का हवन प्यारो, श्रद्धा से करते ले जान।।

314 परब्रह्म परमात्म में प्यारो, ज्ञान द्वारा एको भाव से स्थित होना महान।
ब्रह्म रूप अग्नि में प्यारो, यज्ञ के द्वारा यज्ञ को हवन करना महान।
साहिब जी : संयम रूप अग्नि में हवन की महिमां महान।।

315 कुछ योगी जन प्यारो, शब्दादि विषयों को ईन्द्रि रूप का हवन करते ले जान।
कुछ ईन्द्रियों की संपूर्ण प्यारो, प्राणों क्रियाओं ज्ञान प्रकाशित हवन महान।
साहिब जी : हर प्रकार के हवन की महिमां महान।।

316 'वे नाम' सब्द का प्यारो, सुरति से चिंतन करना ही हवन ले जान।
स्वांसा सुरति सब्द प्यारो, एक तार ले जान।
साहिब जी : सब फल सुरति सब्द का दान।।

317 सतगुरू चरणन में प्यारो, दण्डवत प्रणाम महान।
उनकी सुरति सूं सेवा प्यारो, सरल ज्ञानी साधक ले जान।
साहिब जी : तत्व ज्ञान का भेद महान।।

318 ''वे नाम'' दात को पा कर प्यारे, मन मोह माया का छूटे संग ले जान।
पापियों से भी अधम पाप कर्म, सब्द रूपी नौका द्वारा निसंदेह पार ले जान।
साहिब जी : चेतन सुरति से सुरति जगना महान।।

319 प्रज्जवलित अग्नि प्यारो, ईंधनों को भस्ममय कर देत है।
वैसे ही ज्ञान रूप अग्नि प्यारो, संपूर्ण कर्मों को भस्ममय कर देत है।
साहिब जी : महां चेतन सुरति पाप भस्ममय कर देत है।।

320 ''वे नाम'' सब्द ज्ञान बिन प्यारो, पवित्र वस्तु कुछ भी तो नहीं।
यह शुद्ध सब्द प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू बिन किसी।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष इस सब्द बिन नहीं।।

321 कुछ ही सच्चे मार्ग को लागे, चांद तक पहुंचा धर्म ज्ञान।
स्वर्ग वास पावे सो प्राणी, लाभ ही लाभ सब संग में सच्चा ज्ञान।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष पर रखो ध्यान।।

322 तासो 'वे नाम' अति प्रीति जनावें, संशय दुख हूं दूर।
धन संपति सुख बहु विधि पावे, सो रहन मुझ सूं दूर।
साहिब जी : सच्चा घर नहीं है दूर।।

श्री कृष्ण अर्जुन सूं कहते हैं:–

323 इसी प्रवृति अति फल दाई, सभी सूं प्रति बड़ती जाई।
तुम क्षत्री रणपति कहलाओ, धनुष तुम्हारी महिमां बड़ाई।
साहिब जी : सच्चे कर्म से होत बड़ाई।।

324 कहें श्री कृष्ण अर्जुन सुन लिये, सेवा सुमिरण में चित लाई।
करी करी कर्म मूझे सब आर्पो, कभी पाप दौष तोहे ना लागे।
साहिब जी : सच्च सच्च में जाई समाई।।

325 का के शिर नहीं कोई भारा, सत्य भाव मुझ में तुम धारो।
पांच हत्या नित हर मनुष्य ते होई, बिन जाने करे सब कोई।
साहिब जी : बांचे जन जो होये स्नेहि।

326 बिन सदगुरू कोई पार ना होई, कर्म संतन चरण धरे।
आठ पहर सेवा में काटे, सतगुरू कृपा पा जाई।
साहिब जी : बिन वे नाम दात निज घर ना जाई।।

327 कहें कृष्ण कैसे बचना अर्जुन हत्या, पांच निरख के लेना।
प्रथम हत्या जो पीसे पिसाना, दूसरा कुटै अन्न का दाना।
साहिब जी : तिसरा जाडू पोच्चा जो देई ले जान।।

328 चौथा कलश भरै जे धान, सतगुरू को बारम्बार अर्पण करना ले जान।
पांचवां रसोई चूल्हे का जो कार्य करे, हत्या पांचों जीव कमाना ले जान।
साहिब जी : जीवन से मृत्यों की ओर ले जाना ले जान।।

329 कहे अर्जुन यहि पांच बिन प्यारो, कैसे कोई जीवे रे।
यह पांचों कर्म किये बिन प्यारो, कैसे कोई जीवे रे।
साहिब जी : बिन सतगुरू सेवा बात बने ना रे।।

श्री कृष्ण कहत हैं:–

330 सुनु अर्जुन जीव कर्म ना लागै, नित नित संतन चरणन के संग।
जो कुछ करे सो, सतगुरू कारण, जले दीप ज्ञान जोत के संग।
साहिब जी : करे रसोई सतगुरू नाम के संग।।

331 हर कार्य ''वे नाम'' सब्द संग प्यारो, पुनिः जपे सुमिरण 'वे नाम' के संग।
कुछ सेव कमाये प्यारे, दीन दुखों को मिलावे 'वे नाम' के संग।
साहिब जी : करे हर पल सुरति से ''वे नाम'' सब्द का संग।।

332 ता पाछे प्रसाद जो पावै, सच्ची सेवा से हत्या निकट ना आवे।
ऐसे कार्य सुरति सब्द समावे, फिर दौष कोई निकट ना आवे।
साहिब जी : मन माया का संग छूट जावे।।

333 कर्म करो जग में तुम ऐसे, सतगुरू चरणन में ध्यान लगाई।
पाप ताप कोई निकट ना आवे, गुरू सेवा में दसवां भाग चड़ाई।
साहिब जी : श्रद्धा से कल्याण हो जाई।।

334 जो नर नारी कर्म जाल में जावे, फल भौगी फिरी योनिहिं में आवे।
जा वृति संग जग में आवे, फिरि फिरि ओ कर्म कमावे।
साहिब जी : काल का जाल संग संग समावे।।

335 संतन वाणी सुनो जग वालो, हंस आत्मां के मतवालो।
बुझेगा जब संत विवेकी, ज्ञान दृष्टि ते मन माया की टूटी प्याली।
साहिब जी : अंग अंग में सुरति जोत मतवाली।।

336 पूर्ण सदगुरू तीन लोक ते न्यारा, जो जाने सो हंसा हमारा।
''वे नाम'' सब्द की डौरी ऐसी, जा संग हंसा पाये निजघर प्यारा।
साहिब जी : सुरति का चेतन सुरति का संग प्यारा।।

337 जो कोई तीन लोक में कर्म कमावे, नित दिन सदगुरू सेव कमावे।
सब्द गहै विश्वास संग प्यारो, पल छिन सत्यलोक सदावे।
साहिब जी : सदगुरू पर विश्वास आ जावे।।

338 कोई कोई प्यारा ''वे नाम'' सब्द पावे, सतगुरू कृपा का पत्र बन जावे।
सब्द गाहे सुरति संग विश्वास प्यारो, पल छिन निज घर को जावे।
साहिब जी : दात पा पूर्ण मोक्ष पा जावे।।

339 कहैं कृष्ण सुनो अर्जुन वचन प्यारा, ज्ञान का गुण गुण काम तुम्हारा।
मैं तो सदा रहों जग मांहि, बिन पूर्ण सतगुरू जग में आना जान तुम्हारा।
साहिब जी : तीन लोक काल जाल पसारा।।

340 जन्म अनेक तोरो जग होयो, जन्म अनेक मेरो भी भयउ।
तूं अचेत माया संग बंधा प्यारे, मैं निर्मल जस पूर्ण चंदा।
साहिब जी : मन माया किया जग अंधा।।

341 जन्म जन्म के गुण मैं जानूं, अपने तेरे गुण पहिचानो।
आदि अंत की खबर मैं जानूं, अपने तेरे जन्मों को भी जानूं।
साहिब जी : दुख सुख कर्मों का बंधन मानूं।।

342 मनुष्य काम क्रौध अधिकारा, नहीं भूजे सतगुरू का भेद न्यारा।
सतगुरू की चेतन सुरति सूं प्यारो, जोड़ो निज की सुरति धारा।
साहिब जी : सतगुरू में समाई सत्यपुरूष की महांचेतन धारा।।

343 मन के द्वारा चार पाप प्यारो, छल मान क्रौध ईर्ष्या ले जान।
वचन के द्वारा तीन पाप प्यारो, गाली निंदा झूठ लो जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सुरति से छुटकारा ले जान।।

344 भंवरा पुष्प गंध लोभ में आकर प्यारो, कमल पुष्प में बंद हो जान गंवाता रे।
जिब्हा के रस के लालच में प्यारो, मछली कांटे में मूंह ढाल मरती रे।
साहिब जी : लालच में जी पड़ा मर जाता रे।।

345 हथिनी के काम पिपासा लालच में प्यारो, हाथी फंस कर पकड़ा जाता रे।
पतंग ज्योति के रूप पर प्यारो, मोहित हो जल मरता रे।
साहिब जी : मन माया मोह पार ना लगने देता रे।।

346 काल निरंझन ने प्यारो, काम क्रौध लोभ मोह अहंकार मन के अंग दिये रे।
यह सब मन वृतियों की शक्तियां प्यारे, जीवों को भ्रमाति रे।
साहिब जी : जीवों को शक्तियों के जाल में डाला रे।।

347 अलि मीन गज पतंग प्यारो, और मृग जरै एक ही आंच।
तुलसी वे नर कैसे बचिहें, जिन के लागो पांच।
साहिब जी : मन बुद्धि चित अहंकार संग माया की आंच।।

348 माला लकड़ पूजा पत्थर, तीर्थ जान सब पानी।
कहें कबीर सुनो भाई साधो, चारों वेद कहानी।
साहिब जी : किस को दूं ''सार सब्द'' महां दानी।।

349 कर्म ही करते नर्क स्वर्ग में वासा प्यारो, यही विधि काल जिन भ्रमावे।
कर्म ही भुगति गर्भ में आवे, यहि विधि काल जीव भ्रमावे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द दात पा निज घर को जावे।।

350 भौतिक विज्ञान शक्ति के कारण प्यारो, मनुष्य नारायणी चौला महान।
इस तन को पाने के लिये प्यारो, देवता भी लालायत ले जान।
साहिब जी : जिस इस भेद को जाना प्यारो, उसे तूं जान महान।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष की दात महान।।

श्री भगवानु वाच

351 कहज कृष्ण सुन परम प्यारे, धरणी सहत निज पाप अति भारी।
अति अधर्म होने जब लागे, धरणी भार भयो अति भारी।
साहिब जी : यही काल की बात निराली।।

352 विषयों में जग जागता प्यारो, योगी ध्याण में जाये।
जब ये जीव है सोवता प्यारो, ज्ञानी प्रभु गुण गाये।
साहिब जी : ''वे नाम'' दात पूर्ण मोक्ष दे जाये।।

353 छोड़ो मन की कामना प्यारो, निर ईच्छ हो जाओ।
अहंकार ममता जाये प्यारो, शांत मन हो जाओ।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द आत्म सुरति चेतन कर जाये।।

354 ब्रह्म ज्ञान को जान ले प्यारे, रिश्ते नातों का कर त्याग।
गुरू चरणन ध्या पाई प्यारो, ब्रह्म से हो अनुराग।
साहिब जी : सतगुरू सूं हो अनुराग।।

355 बिन सतगुरू कृपा के प्यारो, मन माया की ना टूटे कमान।
बिन सतगुरू कृपा के प्यारो, हाथ ना आवे सुरति दान।
साहिब जी : सतगुरू कृपा से होत कल्याण।।

356 हे मधुसूदन यज्ञ का स्वामी कौन है, नर में कैसे करे निवास।
जो जग में प्रभु भक्ति करें, मृत्यु के समय कैसे आते पास।
साहिब जी : मृत्यु उपरान्त ईष्ट लोक में पायो वास।।

श्री कृष्ण उवाच

357 इस जीवन में जो भी करें प्यारो, परीक्षा मृत्यु जान।
नर सूं सूमति अवस्था को धारता, मृत्यु पड़े सार आन।
साहिब जी : मृत्यु कर्म प्रधान।।

अर्जुन उवाच

358 ऐसी अवस्था में प्रभु, सुमिरण कैसे निज होत।
शरीर कार्य करता नहीं, कैसे नाम का सुमिरण होत।
साहिब जी : सुमिरण सुरति ध्यान सूं होत।।

श्री भगवान उवाच

359 जीव अविनाशी ब्रह्म ही जान प्यारे, आत्म नित्य अविनाशी जान।
भक्ति शरीर मन का रूप है, हंसा पड़ा मन माया के जाल।
साहिब जी : बिन सतगुरू छूटे ना मन माया का जाल।।

360 अभिष्ट स्वर्गों की प्राप्ति के लिये प्यारो, विशेष यज्ञ क्रिया का काम महान।
जब यज्ञ का पुण्य क्षीण हो जात प्यारो, जीव पृथ्वी पर माता पद महान।
साहिब जी : यज्ञ की महिमां महान।।

361 बोने और फैंक देने में प्यारो, अति अंतर ले जान।
बोया हुआ थोड़ा भला, आंत आंत मिलता ले जान।
साहिब जी : कर्म छूटे बने महान।।

362 जो कर्म ईश्वर को अर्पण किया, उसे बोये तूं जान।
आशा तृष्णा सब बह गई, आत्म हंसा होई तूं जान।
साहिब जी : समर्पण (खोना) ही बोया ले जान।।

363 भगवन विराट रूप में प्यारो, सूर्य चंद्र तारे समस्त देवता दरशावें।
वे रूप अति प्यारा जानो, आदि देवों के देव कहलावें।
साहिब जी : तीन लोक विस्तार आदि देव कहलावें।।

364 भगवन का विराट रूप प्यारो, तीन लोक विस्तार ले जान।
वह रूप मन माया कहलावे, आधि देव विस्तार ले जान।
साहिब जी : ज्योति निरंझन की महिमां ले जान।।

365 यह सब काल जाल का फंदा प्यारो, कोई विरला जाने भेद।
अन्तरध्याण विधि जे ना पास प्यारो, कोई ना पावे भेद।
साहिब जी : सुरति जागे तो ही पावे भेद।।

366 काया नाम जग सब गा रहा प्यारो, विदेह नाम बिन बने ना बात।
'वे नाम' सतगुरू सूं सब्द पाओ प्यारो, पूर्ण मोक्ष की मिलती दात।
साहिब जी : सत्यपुरूष सूं होती बात।।

367 मन माया संग आत्मां सुरति प्यारो, कैसे उतरो पार।
तीन लोक काल का जाल प्यारो, छूटे तो उतरो पार।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द करावे पार।।

368 पांच तत्व के मेल से प्यारो, बना सकल सरूप।
मन माया ने हंसा भरमाया प्यारो, कैसे नर जाने निज रूप।
साहिब जी : मन माया संग छूटे मिले सरूप।।

369 माया मन की जान है प्यारो, सब जग सरूप लिये भ्रमायो।
इस माया एक एक को खाया, कोई सुरति वान बच पायो।
साहिब जी : पूर्ण सतगुरू आन बचायो।।

370 माया मति कुमति करे प्यारो, सब को देत चक्राये।
नारद से मुणि भी गले, आम नर कहां बच पाये।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द से बच पाये।।

371 ऋषि मुणि गण गंधर्व अरू देवा प्यारो, जान ना सके निज रूप।
मन माया काल का रूप प्यारो, तीन लोक लोक का रूप।
साहिब जी : मन माया से पार हंसा रूप।।

372 हंसा आया सतलोक सूं, पड़ा मन माया की कैद।
बिन ''वे नाम'' सब्द न हंसा कोई प्यारो, ना छूटे तीन लोक की कैद।
साहिब जी : सतगुरू जग आता काटने कैद।।

373 सुरति निरति निज खेल प्यारा, ''वे नाम'' सब्द सूं छूटे कैद।
सच्चा 'वे नाम' दास जब मिले प्यारो, उसी सूं छूटती कैद।
साहिब जी : सुरति निरति के मेल से छूटे कैद।।

374 यह जाल अति माया जाल प्यारो, धारे सुन्दर रूप।
इसी सूं जीव भ्रमाया, ''वे नाम'' सब्द से पहचान ले रूप।
साहिब जी : तीन लोक के पार है सच्चा स्वरूप।।

375 बौद्ध महांवीर तक ना पा सके, कौन सच्ची सरकार।
निराकार भगवन को जान कर रह गये प्यारो, रहे बिन जाने साहिबन सरकार।
साहिब जी : मोक्ष पूर्ण मुक्ति उस पार।।

376 अंत काल जो स्मरण करे प्यारो, उतरे भव जल पार रे।
सदा ध्याण सतगुरू चरणन धरे प्यारो, काल की चले ना वार रे।
साहिब जी : सतगुरू वचन पर चलना खण्डे की धार रे।।

377 जो ध्यान करे सदगुरू रूप का प्यारो, ध्यान में तजे शरीर।
जीवित मरना हो गया प्यारो, हंस रूप पा निज घर को जावे तज के ये शरीर।
साहिब जी : सतगुरू भक्ति सूं पाओ हंसा लोक दरबार।।

378 प्रलयः काल के समय प्यारो, हर जीव का शून्य में वास रे।
चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष उपरांत प्यारो, हर जीव पुनः जग करता वास रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द दात से पूर्ण मोक्ष पा जाता रे।।

379 शरीर त्यागते समय प्यारो, जो जो भाव स्मरण होये।
जब नर उस भाव को संग लिये प्यारो, उसी योनी में जा समाये।
साहिब जी : विचारों का जाल भरमाये।।

380 मन माया सूं संग छूटे नहीं, कैसे करेगा ध्यान रे।
मन माया सुन्दर सपने देत प्यारो, कल और कल में रहते रे।
साहिब जी : तीन लोक सपनों का संसार रे।।

381 आशा तृष्णा का संग छूटे नांही प्यारो, सतगुरू सूं प्रीति ना होये रे।
सत्य प्रेम की भाषा आती नहीं प्यारो, फिर परम प्रेम कैसे जागे रे।
साहिब जी : सब छूटे प्रेम प्यास जग जाये रे।।

382 ''वे नाम'' सब्द सुरति स्वांसा संग प्यारे, मन माया का छूटे साथ रे।
सेवा सिमरण सत्संग में जाना प्यारो, जगावे सत्य प्रेम की तार रे।
साहिब जी : खोने में ही पाना जान रे।।

383 मन तो पल पल भरमा रहा, कौन करेगा ध्याण रे।
ये सब बिन ''वे नाम'' सब्द नहीं प्यारो, तुम लाख करो जे ध्याण रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सूं मन माया पार रे।।

384 मन पल पल आत्म उलझा रहा प्यारो, कौन कैसे करेगा ध्याण।
जब तक मन का सुरति संग संग प्यारो, आत्म सुरति कैसे करे ध्याण।
साहिब जी : बिन ''वे नाम'' सब्द लगे ना ध्याण।।

385 बिन पूर्ण सतगुरू कृपा के प्यारो, सब्द स्वांसा संग ध्याण कठिन ले जान।
सच्चा पूर्ण सदगुरू मिलने पर प्यारो, कुछ कठिन नहीं तूं जान।
साहिब जी : सुरति निरति का मेल महान।।

386 सांचा लोक सांचा पिता, सत्यलोक सत्यपुरूष को ले जान।
अमरपुर वासा निज साहिबन का प्यारो, वहीं जान सत्य लोक महान।
साहिब जी : सत्य लोक सत्यपुरूष में भेद ना जान।।

387 सतलोक साहिब संग संत है जाता प्यारो, नाम'' सब्द दात भी पाता रे।
सतगुरू साहिबन का तद्यरूप प्यारो, कोई भेद मत जानो रे।
साहिब जी : एक को पाओ दूजा संग समाता रे।

388 ''सार नाम'' निज जहाज प्यारो, जो चड़े सो उतरे पार रे।
पूर्ण सतगुरू सूं मिलती यह दात रे, सिमर सिमर उतरो पार रे।
साहिब जी : जग सुनता ना सच्ची बात रे।।

389 बिन ''वे नाम'' सब्द प्यारो, काल जाल छूट ना पाये रे।
''वे नाम'' दात चार लोक की सच्ची दात रे, बिन पाये पार ना जान रे।
साहिब जी : जो पाये दात को, तीन लोक से पार रे।।

390 सत्यपुरूष अति बड़े प्यारो, जिन का आर ना पार रे।
छोटे से छोटे जान ले प्यारो, उनका सच्चा खेल रे।
साहिब जी : छोटा बड़ा होना प्यारो उनका सच्चा खेल रे।।

391 सत्यपुरूष सर्वव्यापी प्यारो, सब का रखते ध्याण रे।
सब को हर देत पुकार पर पुकार प्यारो, पर नर ना देता सुरति ध्यान रे।
साहिब जी : कोई जागा साधक सुनता पुकार रे।।

392 निरंकार पालन पोशन कर रहा प्यारो, यह सब मन माया का जाल रे।
हंसा सुरति खाती पीती नहीं प्यारो, खाना पीना तन का सुरति से काम रे।
साहिब जी : सुरति जाना तन मन को अपना रूप रे।।

393 निज स्वार्थ के कारणे, औंकार करे सब काम।
हंसा मन माया की कैद में, ताही सूं मन लेता सब काम।
साहिब जी : मन माया सुरति को भ्रमाने का करते काम।।

394 मन ईन्द्रियों के सब काम प्यारो, हंसा सुरति सूं ले रहा जान।
बिन हंसा सुरति ईन्द्री जाल बेकार, तन बिन हंसा पार मत जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द से हंसा पार ले जान।।

395 ''वे नाम'' सब्द से आत्म जागती, तन मन का छूटे संग।
यह सब कार्य सतगुरू 'वे नाम' सूं, ता से छूटे मन माया का संग।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू का हर पल महां चेतन सुरति के संग।।

396 गुरू का संग ब्रह्मचर्य व्रत प्यारो, हर पल लाभ ही लाभ ले जान।
औंकार का करते जान प्यारो, और वेद शास्त्रों का लेत ज्ञान।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष की दात कोई प्यारा पाता ले जान।।

397 इन से जो लाभ नर को मिले, पूर्ण मोक्ष मत जान।
इन से चार मोक्ष मिलते प्यारो, पुण्य क्षीण होन पर नर पुनः आता जहान।
साहिब जी : पित्र लोक स्वर्ग सुन्न तथा सहस्त्रसार में वासा पाता जान

398 ईन्द्री के समस्त द्वार बंद करो प्यारो, मन को सुरति में केन्द्रित करो।
प्राण वायु को शस्त्र पर केन्द्रित करो प्यारे, शब्द में सुरति स्वांसा एक करो।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष से कोसों दूर रे।।

399 योग अभ्यास में स्थित होकर प्यारे, औंकार का करता जाप।
हर पल ध्याण गुरू चरणन रहे मन में समाये जाप।
साहिब जी : बिन सुरति छूटे ना संताप।।

400 जब जब हानी धर्म की प्यारो, बड़े पाप जग आन।
तब ही रक्षा करने के वास्ते प्यारो, भगवन का जग होवे आन।
साहिब जी : जग को भरमाने का सुन्दर काम ले जान।।

401 भगतों की भगवन रक्षा करें प्यारो, कामी क्रौधी पापी आदि डारें मान।
धर्म स्थापन के लिये प्यारो, युग युग धारें भिन्न भिन्न अवतार।
साहिब जी : सुरति चेतन बिन ना छूटे संसार।।

श्री कृष्ण उवाच

402 अर्जुन जो नर राग द्वैष क्रौध भय त्याग कर, मुझ में चित लगाये।
देह छोड़ मुझ को मिले, कहें कृष्ण समझाये।
साहिब जी : सुरति जागे बात बन जाये।।

403 जो भगवन को जैसे भजे प्यारे, वैसा ही फल पाये।
अर्जुन यह तीन लोक प्यारे, मुझ में आन समाये।
साहिब जी : कयामत की बात समझायें।।

404 कर्म करे सब प्रकृति प्यारे, हंसा रहे निर्लेप।
ज्ञान शब्द के ध्याण सूं प्यारे, दूर करो विक्षेप।
साहिब जी : आत्म हंसा कर्म काण्ड सूं रहे निर्लेप।।

405 सुख दुख शीत उष्ण में प्यारे, संतुष्ट रहे नर जोये।
उस को दुख व्यापे नहीं प्यारे, हंसा आनंदित होये।
साहिब जी : सत्य प्रेम आनंद आत्म अंग सोय।।

406 शुद्ध प्रेम सत्य आनंद सुरति धार, जब मन माया संग जाये।
मीरां को तुम देख लो, कोई ना सका भ्रमाये।
साहिब जी : कोइ ना सका भ्रमाये।।

407 मीरां राधा को फीका कर गई प्यारो, बिन देश काल संग कृष्ण भगवन।
राधा के तो संग थे प्यारो, आप कृष्ण भगवन।
साहिब जी : सच्चा प्रेम जान महान।।

408 मन माया दूरी का कारण बड़ा प्यारो, तीन लोक में हर थां मन ले जान।
कोन स्थान खाली पड़ा प्यारो, कण कण में भगवान।
साहिब जी : चौथा लोक महां सुरति स्थान।।

409 भक्ति योग गीता अंग है प्यारो, पर पूर्ण मोक्ष सूं कोसों दूर।
''वे नाम'' सब्द जिन जिन पायो, जोड़ी पूर्ण मोक्ष संग तार।
साहिब जी : महां चेतन सुरति सूं जोड़ा सतगुरू, चेतन सुरति की धार।।

410 जब लगि बूंद ना सिंधु समाये, तब लग संग अहंकार।
जब सुरति समावे महांचेतन सुरति संग प्यारो, तब मिटे माया संग अहंकार।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द करवे भव पार।।

411 जहां जहां मनुष्य आस धरत प्यारो, तहां तहां जान अहंकार का साथ।
आशा तृष्णा बह जावें तो, निज में निज का साथ।
साहिब जी : कल और कल का छूटे साथ।।

412 स्वर्ग नर्क उपवाद प्यारो, जहां दुई वहां तूं संकट जान।
एक ही तो निजधाम प्यारो, तहां हंसा साहिबन संग आनंदित जान।
साहिब जी : सत्य प्रेम आनंद सुरति के अंग ले जान।।

413 आत्म भोजन सत्य प्रेम आनंद प्यारो, तन भौजन लोभ मोह अहंकार रे।
हंस आत्मां राहगीर बन कर आई प्यारो, लुटेरा तन मन काल का जाल रे।
साहिब जी : मन माया सुरति को किया बेहाल रे।।

414 मदहोशी का पर्दा बुद्धि पर पड़ा प्यारो, नर कैसे धारे होश रे।
कर देती लालसा आंख को अंधा प्यारो, कान ना सुनत पुकार रे।
होश में ''वे नाम'' सब्द जो साध ले प्यारो, उसे जग दिखता मदहोश रे।
साहिब जी : पद प्रतिष्ठा का नशा कैसे धारे होश रे।।

415 दुख सुख रात दिन समान प्यारो, उन्हें सहना तूं सीख।
दुख सुख पर प्यारो, प्रतिबंध लग सकता नहीं विलग होना सीख।
साहिब जी : इस पल में रहना सीख।।

416 हमें ईच्छित वस्तु जब मिले, प्रसन्नता होत उसी पल।
अनिष्चित घटना जब घटे, दुखी होते उसी पल।
साहिब जी : कल और कल में जाना छोड़ो उसी पल।।

417 ''वे नाम'' सदगुरू परमहंसा से प्यारो, मिले जब सच्ची दात।
सुरति में हर पल सब्द रहे, स्वांसा संग सच्ची दात।
साहिब जी : तीन लोक सूं पार करावे ''वे नाम'' दात।।

418 ''वे नाम'' दात पाई मन वश करे प्यारो, जो सार नाम कहाये।
सुरति संग छूटे नहीं प्यारे, सच्चे निजघर जाये।
साहिब जी : महां चेतन सुरति संग जोड़ जाये।।

419 माया का सुख चार दिन प्यारो, फिर वही काल संग साथ।
सपनों सा संसार सब प्यारो, राज धन दोलत संग साथ।
साहिब जी : जागे छूटा जान सब संग साथ।।

420 धीरे धीरे सब होत प्यारो, धीरज सूं मन माया संग छूट जाये रे।
जिस की प्यास जगे अंदर से, प्यास वाला पल में पास आ जाये रे।
साहिब जी : ऋतु आये फल लग जाये रे।।

त अलि मीन गज पतंग, मृग जरे एक ही आंच।
तुलसी वे नर कैसे बचि हैं, जिन के लागे पांच।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द पार करावे पांच।।

क माला लकड़ पूजा पत्थर, तीर्थ जान सब पानी।
कहें कबीर सुनो भाई साधो, चारों वेद कहानी।
साहिब जी : ता से पार एक ना जानी।।

421 काल के मृत्यु लोक में प्यारो, संशय भ्रम धर्म सिद्धान्तों बिन कुछ नांहि।
मोक्ष के सत्य आध्यात्म का प्यारो, ज्ञान होन संभव नांहि।
साहिब जी : ज्ञान चदरिया मैली करने से लाभ कुछ नांहि।।

422 कर्मों के अनुसार प्यारो, नर्क स्वर्ग का पाना ले जान।
कर्म ही भुगति गर्भ में वासा प्यारो, यहि विधि जीव को भ्रमाना ले जान।
साहिब जी : सतगुरू पाना पार हो जाना ले जान।।

423 भौतिक बुद्धि रचनात्मक शक्ति प्यारो, वैज्ञानिक शक्तियां भी भ्रम ले जान।
यह नारायणी चौला पास तेरे, इस तन पाने को देवता भी लालायित ले जान।
साहिब जी : सुरति का ज्ञान जान महान।।

424 दुर्लभ मनुष्य तन पाना जान प्यारे, ये ब्रह्मण्ड पिंड धोखा ले जान।
पूर्ण सतगुरू सूं दात को पा लिया, पूर्ण मोक्ष को अंग संग ले जान।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष पाना ही सच्च काम ले जान।।

अर्जुन उवाच

425 पुनि अर्जुन यह शब्द दाहरायो, किन कारण जन्म तुम धरेयो।
ईच्छा रहित तुम अंतर्यामी, काहे आवागमण में पड़यो।
साहिब जी : जग में हर जीव काल जाल में पड़यो।।

426 ताका दुष्ट मित्र जग नांहि, कारण कवन जग आयु।
तुम अविनाशी जग के सब करता, कौन कारण जग आयु।
साहिब जी : धरणीपाप मिटाने आयु।।

श्री भगवान उवाच

427 कहत कृष्ण सुन परम प्यारे, धरणी सहत पाप अति भारी।
अति अधर्म जब होने लगे प्यारे, धरणी भार भयो अति भारी।
साहिब जी : पाप को कम करने आता हर भारी।।

428 विषयों में जग जाता प्यारो, योगी ध्यान में जाये।
जब यह जीव है सोचता प्यारो, ज्ञानी प्रभु गुण गये।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष ज्ञान से साधक पार हो जाये।।

429 छोड़ो मन माया की कामना प्यारो, निर ईच्छा हो जायें।
अहंकार ममता तजो प्यारो, मन शांत हो जाये।
साहिब जी : ''सार सब्द'' दात हर नर को हंसा बनाये।।

430 ब्रह्म ज्ञान को जान ले प्यारे, रिश्ते नातों का कर त्याग।
सतगुरू चरणन निज ध्यान प्यारे, ''वे नाम'' सब्द सूं अनुराग।
साहिब जी : सत्य की खोज जगावे अनुराग।।

431 मन बुद्धि वश काम प्यारे, सतगुरू सूं जोड़ो तार।
बिन सतगुरू कृपा के प्यारो, मन माया की ना टूटे तार।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द करावे भव पार।।

अर्जुन उवाच

432 हे मधु सूदन यज्ञ का स्वामी कोन है भगवन, नर में कैसे करे निवास।
जो जग में प्रभु भक्ति करें, मृत्यु के समय कैसे आते पास।
साहिब जी : मन तरंग मार दो तो पाओ संग साथ।।

श्री कृष्ण उवाच

433 इस जग में जो भी करें, परिक्षा मृत्यु से जान।
नर सुशुप्ति अवस्था को धारता, प्राण निकास द्वार सूं ले जान।
साहिब जी : हर निकास द्वार का भेद ले जान।।

अर्जुन उवाच

434 ऐसी अवस्था में प्रभु स्मरण, कैसे निज होत।
शरीर कार्य करता नहीं प्यारे, कैसे ''वे नाम'' सब्द का समिरण होत।
साहिब जी : अभ्यास से सब होत।।

श्री कृष्ण उवाच

435 सगुण उपासना जो करे प्यारे, प्रेम सहित चित लाये।
श्रद्धा से भक्ति स्मिरण करे, वे ही श्रेष्ठ कहलाये।
साहिब जी : मुझे ध्यावे मुझ में आन समाये।।

436 निज लाभ को भूल कर प्यारे, परमार्थ के करता काज।
मोह माया सब छूटे प्यारो, सतगुरू के करता काज।
साहिब जी : आत्म ज्ञान बिन छूटे ना प्यारो काल का जाल।।

437 श्री कृष्ण अमृत की खान प्यारो, बिन मान तजे बने ना महान।
मान तजे समर्पण उपझे प्यारो, श्री कृष्ण चरणन में ध्यान।
साहिब जी : माया कारण दुख का जान।।

438 श्री कृष्ण अर्जुन को दे रहे ज्ञान प्यारो, अर्जुन पकड़ो मन की तार।
दुख के बादल चहुं ओर ये फैले प्यारो, जीवन भूला अर्जुन महान।
साहिब जी : हर जीव काल के वश पड़ा ले जान।।

439 निर्मोहि होई ज्ञान विचारिये प्यारो, जब ''वे नाम'' सब्द की मिलती दात।
मूल सब्द दात जब पास में प्यारो, फिर मन की सुरति माने ना बात।
साहिब जी : श्री कृष्ण आये जग में दुख का करने नाष।।

440 जीव अविनाशी ब्रह्म प्यारे, आत्म नित्य अविनाशी जान।
भौतिक तन मन माया का रूप प्यारे, आत्म मन माया वश पड़ी ले जान।
साहिब जी : तन माया मन अंग ले जान।।

441 वैदिक यज्ञ पांच सामिग्री सूं प्यारे, आहुतियां करतीं सब काम।
श्रद्धा सोम वर्षा अन्न और वीर्य, आहुतियां सम्पूर्ण करें यज्ञ काम।
साहिब जी : कृत यज्ञ स्वधा औषधि का आप करते काम।।

442 अभिष्ट स्वर्ग लोक की प्राप्ति के लिये प्यारे, यज्ञ का कार्य होत।
जब यज्ञ का पुण्य क्षीण होत प्यारे, जीव पृथ्वी पर वर्षा कन बन आत।
साहिब जी : राजा बन जग आत।।

443 कर्म करे बिन चाह फल की, गुरू (सतगुरू) को अर्पण जान।
ऐसा है यह राज योग प्यारो, कर्म योग से आगे अर्पण जान।
साहिब जी : सतगुरू के हाथ कमान ले जान।।

444 एक ओर से कर्म करो, दूजी और सूं जोड़ो भक्ति तार।
जीव को सुंदर बनाते चलो, मन माया की टूटे तार।
साहिब जी : करनी करावे साधक को पार।।

445 बोने और फैंक देने में प्यारे, अति अंतर ले जान।
बोया हुआ थोड़ा भला प्यारो, अति आंत फल मिलता ले जान।
साहिब जी : देना ही देना कुछ ना चाहना काम महान।।

446 जो कर्म सतगुरू को अर्पण कर दिया प्यारो, उसे बोया हुआ ले जान।
आशा तृष्णा बह गई मन माया छूटि, आत्म हंसा होई ले जान।
साहिब जी : सदगुरू कृपा बनावे महान।।

447 वस्तु कहीं ढूंढे कहीं प्यारे, पकड़ी मत ले जान।
सदगुरू 'वे नाम' सा भेदी मिले प्यारो, पल में संग साहिबन को जान।
साहिब जी : सदगुरू सूं नाता जोड़ते ही पार ले जान।।

448 पांच पच्चीस बंध जीव बांधा प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू लिया फंद को जान।
योग योगन काटन आवें प्यारो, लिये सत्यपुरूष का सब्द महान।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू देते पूर्ण मोक्ष दान।।

449 जीव लाखों जन्मों से प्यारो, भरमों में पड़ा ले जान।
काल पुरूष भ्रमाये हर जीव प्यारे, सतगुरू जीव छुड़ावन हार ले जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द दात महान ले जान।।

450 सदगुरू जन तो हारा भला, जीतना मन माया की धार।
हारा प्यारा सदगुरू सब्द में रहे, जीता मन माया की लार।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष सब्द करावे भव पार।।

आत्मां की पहचान कैसे हो ?
ध्याण ही सीढ़ी सिमरण की जान प्यारे

451 आध्यात्मिक किरणें पूर्ण सतगुरू सूं प्यारो, साधक की सुरति पाती ले जान।
बिन 'वे नाम' नांहि कोई सतगुरू का प्यारा, अब ही सोया रे सोया जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सुरति की खान।।

452 पवन चढ़ावे बने सुन्न लोकों का वासी, अभी भी कच्चे का कच्चा रे।
सात चक्र के मार्ग मीन पपील चाल को पावें, पांच मुद्रायें भी काल चक्र में जानो रे।
साहिब जी : साहिबन स्वर्ग सुन्न लोकों से पार सतलोक वासी रे।।

453 जोगी बने योग कमावे, रोम रोम औंकार को गावे रे।
तीन लोक की तारी लावे प्यारो, अभी भी काल के गुण गावे रे।
अबहूं नांहि सतगुरू प्यारो साधक, अभी भी काल के चक्र में जानो।।

454 सात सुन्न की बात ही मत कर, सात महांसुन्न जे पार कर जावे रे।
महांसुन्न लोकों पर आसन मारे प्यारो, अभी भी उसे सोया जानो रे।
साहिब जी : सतगुरू सांचा सूरमा महांसुन्न पार अमरलोक समाये रे।।

455 ''वे नाम'' सब्द सतगुरू सूं पाकर प्यारो, मन माया सूं पार सच्चा द्वारा रे।
जभी भयो सतगुरू का प्यारा साधक, तभी भयो सत्यपुरूष का प्यारा रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द तीन लोक से पार करावे रे।।

456 पारस सुरति ''वे नाम'' दात प्यारे, परम सुरति का अंश ले जान रे।
जैसे सीपी स्वाति की बूंद को प्यारो, मोती में बदलती ले जान रे।
साहिब जी : उस अंदर यह शक्ति प्रधान रे।।

457 मृगनाभि में कस्तूरी का सृजन प्यारो, मृगवीर्य से बनती ले जान रे।
वीर्य कस्तूरी में बदलता प्यारो, उस की नाभि में पद्धत्ति ले जान रे।
साहिब जी : किसी और ढंग से बनती मत जान रे।।

458 सतगुरू चेतन सुरति 'वे नाम' सूं प्यारो, महां चेतन सुरति सूं पाई ले जान रे।
साधक की सुरति को प्रकाशित करे प्यारो, हर अंग चेतन ले जान रे।
साहिब जी : सतगुरू सुरति साधक अंग चेतन कर्ता जान रे।।

459 सुन्न महल में घौर अंधयारा प्यारो, ''वे नाम'' सब्द करे उजियारा रे।
हृदय के विकार प्यारो, काम क्रौध लोभ मोह अहंकार छूट जायें रे।
साहिब जी : सतगुरू सब्द सुरति मिटावे मन माया विकार रे।।

460 सुनो तात यह अकथ कहानी रे, समझत बने ना जाये ब्ख़ानी रे।
सत्यपुरूष अंश जीव अविनाशी रे, चेतन अमन सहज सुख राशि रे।
साहिब जी : सतगुरू सब्द सहज सुख राशी रे।।

461 हर जीव अज्ञान में, आत्म का भेद ना पाये रे।
मन बुद्धि जान ना पायें रे, नर आत्म को ड़ूंढ ना पाये रे।
साहिब जी : मन भक्ति में जीव उलझा रे।।

462 नहीं उपझे नहीं विनशे कबहुं, नहीं आवे नहीं जाये।
सत्यगुरू मिले तो पाये, सब्द से भेद को पाये।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द साहिबन समाये।।

463 मुक्ति मुक्ति सब जगत कहे, भेद विरला जाने कोये।
सिद्ध साध और भौगया, पार ना पाये कोये।
साहिब जी : सब्द बिन पार ना पावे कोये।।

464 अंधे को अंधा मिल, राह बतावे कोन।
प्रेमी को प्रेमी मिले, भक्ति भेद बतावे कोन।
साहिब जी : सच्चा साहिब मिलावे कोन।।

क प्रीतम को पत्तियां लिखूं, जो कहुं बसे विदेश।
मन में सुरति में जो बसे, वाको कोन संदेश।
साहिब जी : आत्म तो दे सुरति संदेश।।

465 'वे नाम' आया सत्यलोक से, लिये साहिबन की दात।
महां चेतन सुरति वह लोक है, पूर्ण मोक्ष की दात।
साहिब जी : पाई अमृत दात।।

क कबीर चिन्ता क्या करे, चिन्ता से क्या होये।
चिन्ता तो हरि की करे, चिन्ता करो ना कोये।
साहिब जी : चिन्ता करो ना कोये।।

क चेत सवेरे बांवरे, प्रेम में सुरति लगये।
भक्ति का मार्ग दूर, सतगुरू सब्द ले जाये।
साहिब जी : सतगुरू सब्द ले जाये।।

466 पत्ता गिरा ढाल से, पवन लिया उड़ाये।
दूर ही जा कर गिर पड़ा, बहुरि ना डाल पर आये।
साहिब जी : बहुरि ना ढाल पर आये।।

467 'वे नाम' जा के देख लिया, साहिबन का वे देश।
महांचेतन सुरति लोक वह, सब हंसों का देश।
साहिब जी : सब हंसो का देश।।

468 जग सत्ता मन हाथ में, जन्म मरन में पड़ा तूं जान।
सच्चा देश ना जानेया, सतगुरू बिन बने ना बात।
साहिब जी : सतगुरू बिन बने ना बात।।

469 दरिया भवजल अगम है, ''वे नाम'' सब्द करहु जहाज।
ताहि पर हंस चढ़ाई के, सहज से मिल कर सहज।
साहिब जी : सहज से मिल कर सहज।।

470 अमरपुर से आई दात है, आत्म को कराने पार।
जो पागया सो तर गया, ''वे नाम'' सब्द ही करावे पार।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द ही करावे पार।।

471 'वे नाम' जा के देख लिया, तीन लोक के पार।
सतलोक ही सच्चा लोक है, साहिबन का दरबार।
साहिब जी : आओ चलें उस पार।।

472 'वे नाम' पास दो वस्तुऐं, पूर्ण मोक्ष की दात।
ब्रह्मण्ड में किसी पास ना, सत्यपुरूष सूं आई दात।
साहिब जी : साहिबन सूं आई दात।।

473 आई आयात जग आ गये, साहिब ले चली चले।
ना अपनी खुशी जग आये, पर अपनी खुशी चले।
साहिब जी : अपनी खुशी ही चले।।

क सतगुरू शिष्य और साहिब जी, मिल करि भक्ति विवेक।
तीनों मिल त्रिधारा बनी, आगे गंगा एक।
साहिब जी : आगे साहिबन घर एक।।

क पारस और संतन में, बड़ो ही अंतर जान।
एक लोहा कंचन करे, संत कर लें आप समान।
साहिब जी : संत कर लें आप समान।।

क पुरूष रचन ते नारी है, नारी रचन ते पुरूष।
पुरूष पुरूषे जो रचा, ते बिरला संसार।
साहिब जी : ते बिरला संसार।।

474 आप शरीर हैं तो मरोगे, आत्मां हो तो अमर हो।
जीव निज को शरीर जाने, फिर क्युं कर अमर हो।
साहिब जी : बिन सतगुरू सब्द कबहु अमर ना हो।।

क बेगमपुर देश हमारा, सार सब्द ले जाये।
वेद कितेब भेद ना जानते, साहिबन संग घर जाये।
साहिब जी : साहिबन संग घर जाये।।

क तीन लोक से भिन्न वह अमरलोक कहलाये।
तहां जन्म मरन नांहि, नहीं तहां मोह अरू माया।
साहिब जी : नहीं तहां मोह अरू माया।।

475 सार नाम बिन पावे नहीं, अमरपुर साहिबन देश।
वेद कितेब जानत नहीं, सब हंसों का देश।
साहिब जी : सब हंसों का देश।।

र सांई इतना दीजिये, जा में कुटुम्भ समाये।
मैं भी भूखा ना रहुं, साधु ना भूखा जाये।
साहिबन संग गांठ ना बांध्ही, सतगुरू में समाना रे।
आगे पीछे हरि खड़े, जो मांगे सो दे।।

476 चिन्ता मन चित्त में बसे, तो ही चित्त में हानी।
बिना सतगुरू चिन्ता करे, यह मूर्ख की वाणी।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द बिन जग अज्ञानी।।

477 गया जिन पाया नहीं, आन गये से दूर।
जिन गया विश्वास करी, ता के सदा हुजूर।
साहिब जी : प्रीत प्रेम में बसें हुजूर।।

478 सुरति संग सब्द में जाये कर, सतगुरू में जा समाये।
आई लहर समुंद्र की, दुख दरिद्र सब जाये।
साहिब जी : दुख दरिद्र सब जाये।।

क सुमिरन में सुरति लगाये, मुख से कुछ ना बोल।
बाहिर के पट बंद कर, अंदर के पट खोल।
साहिब जी : अंदर के पट खोल।।

479 घट में ज्योति अनूप है, आना जाना संग साथ।
जुड़ी तार 'वे नाम' सूं, कलम धनी के हाथ।
साहिब जी : कलम धनी के हाथ।।

480 चिन्ता मन चित्त में बसे, तो ही चित में ग्लानि।
बिना सतगुरू चिन्ता करे, मूर्ख की यही कहानी।
साहिब जी : मूर्ख की कहानी।।

481 सुरति संग जिन गया नहीं, आन गये से दूर।
जिन गया सुरति विश्वास सूं, ताके साथ हुजूर।
साहिब जी : ताके साथ हुजूर।।

482 सुरति सब्द में रोवना, रोवन में ही राग।
पल में आ घर करे, जा घट में विराग।
साहिब जी : जा घट में वैराग़।।

क सुमिरन की गति यूं करो, जैसे नाद कुरंग।
पल भर संग ना छोड़िये, प्राण तजे ता ही संग।
साहिब जी : प्राण तजे ता ही संग।।

क घट में जोती अनूप है, सुरति तार में साथ।
जुड़ी तार सुरत सब्द की, कलम धनी के हाथ।
साहिब जी : कलम धनी के हाथ।।

क गावन में ही रोवना, रोवन में ही वैराग।
पल ही में आ घर करे, जा घट में वैराग।
साहिब जी : जा घट में वैराग।।

483 संत बड़े परमार्थी, शीतल मन माया का संग।
भक्ति प्यास बुझायें हर जीव की, दे दे चेतन सुरति का रंग।
साहिब जी : दे दे चेतन सुरति का रंग।।

484 प्रेम बिना दर्श नहीं, विरह बिना विराग।
प्रेम भक्ति में रची रहे, मोक्ष मुक्ति फल भाग।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द जगावे भाग।।

485 अनुभव सुरति ध्यान की, जो कोई पूछे बात।
सो गूंगे गुड़ खाई के, कैसे करे ''वे नाम'' सब्द की बात।
साहिब जी : सतगुरू सूं पावें ''वे नाम'' सब्द की दात।।

486 सदगुरू से चूकी सुरति जी, उस का बड़ा दुर्भाग्य।
''वे नाम'' सब्द से जो आत्म चूक गई, उस के फूटे भाग्य।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द जगावे रूठे भाग्य।।

487 ''वे नाम'' सब्द वाणी सत्यपुरूष की, अमरपुर से आई जान।
उस का जग में कोई काट ना, सत्यपुरूष की महिमां जान।
साहिब जी : सत्यपुरूष की महिमां जान।।

488 नहीं मोहताज आभूषण का, जिसे महां चेतन सुरति सत्यपुरूष दी।
अज्ञान शाश्वत अमर देश की, अमर दात साहिबन दी।
साहिब जी : अमर दात साहिबन दी।।

489 मरूस्थल में भी कभी कभी, बूंदा बांदी होती जान।
ता से कहीं पर जल के, अखंड स्त्रोत भी पाये जान।
साहिब जी : अखण्ड स्त्रोत भी पाये जान।।

490 यह भरोसा 'वे नाम' दिया, अमर लोक संग मान सरोवर भी जान।
जग में सच्ची किरण आनंद की, दुखों के बीच ले जान।
साहिब जी : दुखों के बीच ले जान।।

491 जगाओ आस विश्वास सतगुरू पर, क्षण भंगुर सुख की खोज करो।
बूंदा बांदी में कब तक, निज में (निज को) पाने की आस।
साहिब जी : निज में निज को पाने की आस।।

492 संसार में छिपा संगीत है, संगीतज्ञ की पहचान भी संग साथ।
सदगुरू सब्द साहिब दात है, दोनों से उठे संगीत एक साथ।
साहिब जी : दोनों से उठे संगीत एक साथ।।

493 स्वर्ग में भी सुख कैसे मिले, ईर्ष्या द्वैष भय संग जान।
जो मांगा सो पाया रे, दुख का कारण जान।
साहिब जी : दुख का कारण जान।।

494 प्रेम बिना धीरज नहीं, विरह बिना वैराग़।
सदगुरू बिन जावे नहीं, मन मान का दाग़।
साहिब जी : मन मान का दाग़।।

495 प्रेम भक्ति में रची रे, मोक्ष मुक्ति फल पाये।
सब्द ही सुरति स्वांसा रहे, नहीं आवे नहीं जाये।
साहिब जी : सब्द स्नेहि साहिबन रंग में रम जाये।।

496 पिया पिया रस जानिये, उतरे नहीं ख़ुमार।
नाम में सुरति समाई रे, पिये अमी रस धार।
साहिब जी : पिये अमी रस धार।।

497 प्रेम छिपाये कहां छिपे, जा घट प्रगट होये।
जो को मुख भोले नहीं, नैन देत हैं रोये।
साहिब जी : नैन देत हैं रोये।।

498 जा के चित्त अनुराग है, ज्ञान मिले नर सोये।
बिन अनुराग ना पावे, कोटि करे जो कोये।
साहिब जी : कोटि करे जो कोये।।

499 विरह बड़े चरणन पड़े, ह्रदय देर ना धीर।
सुरति स्नेहि ना मिले, मिटे ना मन की पीड़।
साहिब जी : मिटे ना मन की पीड़।।

500 सुख के संगी साथी, दुख में रहते दूर।
कहें कबीर परमार्थी, दस सुख सदा हुजूर।
साहिब जी : सज्जनों में बसें हुजूर।।

501 नहीं मोहताज ज़ेवर का, जिसे खूबी साहिब ने दी।
नहीं मान ''वे नाम'' सब्द का, जिसे अनमोल दात दे दी।
साहिब जी : जिसे अनमोल दात दे दी।।

502 मेरी सुरति लीना बैराग, सच्चे साहिब से मिलने का।
करना हर जीव को बैरागी, निजघर ले जाने का।
साहिब जी : निजघर ले जाने का।।

503 सतगुरू सब्द सत्यपुरूष हैं, मन के पार से आये जान।
दिखने में तो मनुष्य हैं, सच्चे अस्तित्व को जान कर पहचान।
साहिब जी : सही अस्तित्व को जान कर पहचान।।

504 मोत कभी होती नहीं, मान की टूटे तान।
तन पांच तत्व का बना, उन्हिं में समान जान।
साहिब जी : उन्हिं में समाना जान।।

505 काम प्रेम भक्ति में जाना, अति भेद तो जान।
भक्ति अति प्रेम रूपा है, अमृत रूप में समाना जान।
साहिब जी : अमृत रूप में समाना जान।।

506 काम बर्फ समान जान तूं, मन तरल ले जान।
आत्म हंसा रूप है, महां चेतन सुरति अंश ले जान।
साहिब जी : महां चेतन सुरति अंश ले जान।।

507 मन की भरत्यो होती नहीं, वह तो आप अहंकार।
मान की मृत्यु जाग कर, जब खुले भक्ति द्वार।
साहिब जी : जब खुले भक्ति द्वार।।

508 अमृत भावता तृप्ति भावती, निज की पहचान कराये।
ऐसी साधना जब करो, बीज वृक्ष फूल बन जाये।
साहिब जी : बीज वृक्ष फूल बन जाये।।

509 संगीत में उस का दीदार हो, डूबने का खेल पहचान।
वे ही संगीतज्ञ संगीत में, उस की कर पहचान।
साहिब जी : प्रेम भक्ति संगीत साहिबन पहचान।।

भक्ति विरह वैराग़

मीरां जी को समर्पित दोहे – तर्ज : गीता का ज्ञान सभी जन को ...

म1 ऊँची चढ़ चढ़ पंथ निहारूँ, रोय रोय अखियां राती।
यो संसार सकल जग झूठा, झूठे संगी साथी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, एक सतगुरू सच्चा साथी।।

म2 दोउ कर जोड़ या अरज़ करूँ छूँ, सुन लो मेरी बाती।
यो मन मेरो बड़ो हरामी, ज्यों मद माता हाथी।
यह भेद मीरा जी देती हैं, मन से बड़ा ना हाथी।।

म3 सतगुरू हाथ धरो सिर उपर, आंकुस दे समझाती।
पल पल पीव को रूप निहारूँ, निरख निरख सुख पाती।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू चरण चित्त राती।।

म4 मेरी आरती मेटि गुसाँई, आई मिलो माहि सागी री।
मीरा व्याकुल अति अकुलाणि, पिया की उमंग अति लागी री।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिरह बाण डर लागी री।।

म5 निस दिन पंथ निहारूँ पीव की, पलक ना पल भर लागी रे।
पीव पीव मैं रटुँ रात दिन, दूजी सुद्धि बुधि भागी रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पीव में मेरी सुरति लागी रे।।

म6 राम मिलन के काज सखी, मेरे आरती उर जागी रे।
तलफ़त तलफ़त कलपन परत है, विरह बाण उर लागी रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, विरह बाण सूं तड़प उर जागी रे।।

म7 म्हारे जन्म मरण रा साथी, थारूं नहीं बिसरूँ दिन राती।
थां देखेया बिन कलप पड़त है, जानत मेरी छाती।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, याद में तड़पूं जैसे मीन जल बिन मर जाती।।

म8 मिलता जा ज्यों ही गुरू ज्ञानी, थारी सुरति देखी लुभानी।
मेरा नाम बूझ तुम लीजो, मैं हूं विरह दिवानी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं,, मैं साहिब विरह में हुई दिवानी।।

म9 रात दिवस कल नहीं परत है, जैसे मीन बिन पानी।
दरस बिन मोहि कुछ ना सुहावे, तलफ़त तलफ़त मर जानी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं,, मीरां चरणन चेरि सुन लीजै सुख दानी।।

म10 जल से प्रीति करि मछली ने, बिछुरत प्राण तजे।
मृगा की प्रीति लागी नादां से, सनमुख सेल सहे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन जागे अति कष्ट जीव सहे।।

म11 दीपक से प्रीति लागि पतंगा की, वार फेर जीय दे।
मीरां की प्रीति लागि है संतों से, सतगुरू चरणन चित्त दे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू चरणी वार फेर जिय दे।।

म12 भर मारो रे बाण मेरे सतगुरू, विरह लगाई बैना।
पावन पंगा कानन बहिरा, सूझत नांहि नैना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू दर्स बिन कुछ ना देखें नैना।।

म13 खड़ी खड़ी रे पंथ निहारूं, मरम नां कोई जाना।
सतगुरू औषधि् ऐसी दीन्हो, रूप रूप भई चैना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द औषध महान।।

म14 सतगुरू जैसा वैद नां कोई, पूछो वेद पुराणा।
मीरां रे प्रभु गिरधर नागर, अमर लोक में रहना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू संग अमरलोक में रहना।।

म15 तुम बिछड़ियो दुख पांऊ जी, मेरा मन माहि मुरझाऊं जी।
मैं कोयल ज्युं कुरलाऊं जी, मेरा मन मांहि मुरझाऊं जी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू दर्स बिन बेचैन हो जाऊं जी।।

म16 मोहि बाधन विरह सतावे जी, कहिया पार पावै जी।
ज्युं जल प्यासा मीना जी, तुम दरसन बिन खोना जी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द ध्यान में तन मन भुलाऊं जी।

म17 ज्यु चकवी रैण ना जीवा, आगे भाण सुहावै जी।
ऊ दिन कबै करोला जी, म्हारे आंगण पांव धरोला जी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मीरां गुरू पद रज की प्यासी जी।।

म18 दरस बिन दुखन लागे नैन, दरस बिन दुखन लागे नैन।
जब से तुम बिछड़े मोरे प्रभु जी, कबहु ना पायो चैन।
सब्द सुनत मेरी छतिया कांपे, मीठे लागे तुम बैन।।

म19 एक टक–टकी पंथ निहारूँ, भयी छेः मासी रैन।
विरह विथह कासे कहुं, सजनी बह गई करवत ऐन।
मीरां रे प्रभु कब रे मिलोगे, दुख मेटन सुख देन।।

म20 री मेरे पार निकस गया, सतगुरू मारेया तीर।
विरह भाल लागि अंतरि, व्याकुल भयो शरीर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, लागा सतगुरू विरह का तीर।।

म21 ईत–उत–चित्त चले नांहि, कबहु डारि प्रेम जंजीर।
के जाणे मेरो प्रीतम प्यारो, और नां जानो प्रीत।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू संग जोड़ो प्रेम जंजीर।।

म22 कहा करूं मेरे बस नहीं सजनी, नैनन जरत दोऊ नीर।
मीरां कहे प्रभु तुम मिलयां बिन, प्राण धरत नहीं धीर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिबन प्रेम में नैना जरत नीर।।

म23 राम नाम की निंदा ठाने, कर्म अकर्म ही कुमावे।
राम नाम बिन मुक्ति ना पावे, फिर चौरासी के जावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू निंदा प्रेम योनि को पावे।।

म24 साध संगत में कबहु ना जावे, मूर्ख जन्म गंवावे।
जा मीरां सतगुरू के चरणें, जीव परम पद पावे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू शरणी जीव परम पद पावे।।

म25 गली तो चारों बंद हुई, मैं सतगुरू सूं मिलुं कैसे जाये।
ऊँची नीची राह लपटीली, पांव नहीं दहराये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, अंदर का द्वार कैसे खुल पाये।।

म26 सोच सोच कर पग़ धरूं जत्न से, बार बार डिग जाये।
ऊँचा नीचा महल पिया का, म्हां सूं चढ़या ना जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतपुरूष महल पर चढ़या ना जाये।।

म27 पिया दूर पंथ निहारूं जीणो, सुरत सकोला खाये।
कौस कौस पर पहरा बैठया, पैंड पैंड बटमार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, कौस कौस पहरा ले जान।।

म28 यह विधना कैसो रच दीनी, दूर बसायो न्यारो गांव।
मीरां रे प्रभु गिरधर नागर, सतगुरू दियो बताये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिबन घर अति दूर ले जान।।

म29 सतगुरू कृपा सूं, मन की विधना साध संगति मिटाये।
जुगन जुगन से बिछड़ी मीरां, घर में लीनी लाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जा पहुंची साहिबन दरबार।।

म30 सदके करूं जो शरीर, जुगे जुगे वारणौ।
छोड़ी छाड़ी कुल की लाज, साहिबन तेरे कारणौ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हर पल रहो साहिबन चरणा।।

म31 मीरां रे प्रभु गिरधर नागर, दरसन दो निहारे राम जी।
सुरत मेरी निज नाम से, सतगुरू कृपा से जागी जी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतपुरूष में सुरति समाई जी।।

म32 याद करूं जब वेग पधारो, राखो पावनिया।
कृपा कीजे दरसन दीजो, शरणे का जनिया।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिछर ना दूंगी पाये पलक में राखूं।।

म33 एक समय मोतियन के धोखे, हंसा चुगत जुवार।
सरवर छांड तलैया बहे, पंख लपट रही गार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं,, हंसा मोती खाये।।

म34 साहिब का घर दूर है रे, जैसे लगो खजूर।
चढ़े सो चाखे प्रेम रस, पड़े तो चकनाचूर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिब घर अति दूर।।

म35 हाड चाम की देह बनी रे, नव लख नाड़ी दश कोर।
मीरां रे प्रभु गिरधर नागर, लगी मोल सों डोर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जोड़ो मूल सब्द सूं सुरति डौर।।

म36 भव सागर सब सूखि गयौ है, फ़िकर नांहि मोहि तरनण की।
मीरां रे प्रभु गिरधर नागर, आस भयी सतगुरू सरनण की।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जोड़ो सुरति सतगुरू सरनण की।।

म37 नैनन बनज बसाऊँ री, जो मैं साहिब पाऊँ री।
इन नैनन मोरा साहिब बसत है, डरती पलक नां नाऊँ री।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पलकों में साहिब बसाऊँ री।।

म38 त्रिकुटि महल में बना है झरोखा, तहां मैं झांकी लगाऊं री।
सुन्न महल में सुरत जमाऊं, सुख की सेज बिछाऊं री।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बार बार बलिहारी जाऊं री।।

म39 साहिब जी मैं तो, मूल नाम के रंग राती।
पंच रंग मेरा चौला रंग दे, मैं झुरमुट खेलन जाती।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मैं गिरधर के रंग राती।।

म40 चंदा जाऐगा सूर्य जाऐगा, जाऐगा धरण अकासी।
पवन पानी दोनों ही जाऐंगे, अटल रहे साहिब अवनासी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मैं तो मूल राम के रंग राती।।

म41 सुरत निरत का दिवला संजो ले, सुरति की कर बाती।
प्रेम हटी का तेल बना ले, जगा करे दिन राती।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दिवला जले दिन राती।।

म42 जिस के पिया परदेस बसत हैं, लिखी लिखी भेजे पात्ति।
मेरे पिया मो मांहि बसत हैं, कहुं ना आती जाती।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मूल राम के रंग राती।।

म43 पिहर बसूं ना बसुं सास घर, सतगुरू सब्द संगति।
ना घर मेरा ना घर तेरा, मीरां सतनाम में समाती।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मूल नाम में रंग राती ।।

म44 मैं तो तेरो सरण पड़ी रे सतगुरू, ज्युं जाने त्युं तार।
अठसट तीर्थ आयो भ्रमि भ्रमि, सुरति नांहि मानी हार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति नांहि मानी हार।।

म45 या जग में साहिब जी कोई नहीं अपना, सुनियो तारण हार।
मीरां दासी साहिब भरोसे, जम का फंद निवार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग का फंद निवार।।

म46 भई हूं दिवानी तन सुद्ध, कोई ना जानी न्यारो बात।
मीरां कहे बीती सोई जाने, मरन जीवन तुम हाथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मरना जीना छूटा मन साथ।।

म47 अब क्यों रे मूर्ख भूले रे, पंथी घणी दिन थोरो रे।
उगो रे सूर्य पूरव घर पुगो तो, दोड़ सके तो दोड़ो रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जो दोड़ सके वो दोड़ो रे।।

म48 घर चलो हिम्मत मत हारो, चिंता को पीछे छोड़ो रे।
नगर पहुंचया निभे होसी, बीच रमण को फोड़ो रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मार्ग मिल्यो म्हाने नेड़ो रे।।।

म49 सतगुरू सब्द सब्द लखाया, मोहे पिया मिले ईक छिन में।
पिया मिलया मोहे कृपा कीन्हो, दीदार दिखाया साहिबन ने।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दीदार पाया साहिबन रे।।

म50 सतगुरू सब्द सुरति लखाया, ध्यान लगाया धुण में।
मीरां रे प्रभु होई दिवानी, मगन भयी सार सुरति में।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ध्यान लगाया धुण में।।

म51 मानुष जन्म तुझको मिला, पाने भजने को मूल नाम।
प्यारे तूं सब कौल भूला, जीवन खोया खा काल का बाण।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जीवन खोया मन के काम।।

म52 मैं खड़ी तेरी ईक झलक के लिये, चरणों में सदा रहने के लिये।
मेरे मन की ख़बर तुझको है प्यारे, मैं हर स्वांसा ली बस तुम्हारे लिये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तुझ को पाने के लिये।।

म53 मानुष जन्म तुझको मिला, पाने भजने को मूल नाम।
जब भी सुरति सूं तुझको आवाज़ दूं, तज दूं मान सम्मान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आंखों में अश्वन बहें आप के मान में।।

म54 मेरी किश्ती भंवर में अटकी पड़ी, तूं तारे डोबे हाथ में तेरे पड़ी।
मैं तो दासी थारी जन्म जन्म की, जीवन डौर हाथ तेरे पड़ी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जीव डौर हाथ तेरे पड़ी।।

म55 कृपा करि मोहे दरसन दीजो, बीते दिवस ध्याना
मीरा रे प्रभु साहिब अविनासी, थारो ही नांव भाणा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति डौर सूं ध्यान ध्याना।।

म56 मुझे साहिब जी दरसन दो, मुझे तुम्हारे नाम की लौ लागी।
साहिब जी मेरा ध्यान सदा, तुमरे नाम सूं सुरति जागी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सार नाम ध्यान सुरति लागी।।

म57 जन्म बड़ो घर पावियो, यूं आई बड़ा घर माये।
मूढं मूल करि कोई जाने, यूं राज रीत ठुकराये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग को दिया ठुकराये।।

म58 निंदा म्हारी भले ही कर जो, लेसी पलकें बिछाये।
बिन साबुन और पानी के, सभी मैल धुल जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं,, निंदक सदा दुख पाये।।

म59 धन धन मीरां बड़भागन, साहिब हेत लगाये।
बार बार करूं मैं विनती, दुष्ट रहेया पछताये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं,, निंदक पल पल दुख पाये।।

म60 जागे म्हारा जग पति राई, हंसा बोलो क्युं नहीं।
साहिब थे छो जो हृदय मांहि, पट खोलो क्युं नांहि।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पट खोलो क्युं नांहि।।

म61 सदकै करूं जो सरीर , जुगे जुगे ईन चरणों।
छोड़ा छाड़ी कुल की लाज, साहिब जी तेरे चरणों।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तेरे कारणों छोड़ी कुल की लाज।।

म62 मीरा रे प्रभु गिरधर नागर, दरसन दो म्हारे राम।
सुरत निज नाम से लगी जी, आ गलियो मेरे राम।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दरसन दो म्हारे राम।।

म63 एक समय मोतियन के धोखे, हंसा चुगत जुवार।
सरवर छांड तलैया बैठे, पंख लपट रही गार (कीचड़)।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा पड़े काल के द्वार।

म64 सरवर सूखे तरवर कुम्हलाये, हंसा चले उडार।
मीरा रे प्रभु कब रे मिलोगे, लंम्बी भुजा पसार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, हंसा चले साहिबन द्वार।।

व्याख्या : साहिब जी मेरी आत्मां जो आप के निजधाम में आनंदमयी थी, इस काल के संसार में आने से मैली हो गई है। जैसे एक बार मौतियों के धोखे में हंसा ने ज्वार चुगे थे और फिर वह हंसा वापिस निजघर ना जा पाया। मेरी हंस रूपी आत्मां मान सरोवर छोड़ कर इस संसारिक कीचड़ में जो कि माया रूपी कीचड़ है, में आकर धंस गई है। आप ही सतगुरू मुझे संसारिक कीचड़ से निकाल सकते हैं और निजघर ले जा सकते हैं।

म65 अरज करी अबला कर जोरे, साहिब तुम्हारी दासी।
मीरा रे प्रभु साहिब सतगुरू जी, काटो जम की फांसी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बन साहिबन की दासी।।

म66 जप तप तीर्थ चार पदार्थ, सतगुरू चरणन में ही शामलिया।
प्रेम करिने मारे मंदिर पधारो, जात वरण चरणन में शामलिया।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, काल भगवन सभी को छलिया।।

म67 राम नाम सब्द को पा ले, नहीं ऐसा जन्म बारम्बार।
क्या जानूं कछु पुण्य प्रगटे, मानस जग अवतार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू महिमां चेतन सुरति धार।।

म68 बढ़त पल पल घटत छिन छिन, जात ना लागै वार।
बिछ के ज्यों पात टूटे, लगै नहीं पुनि डार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'वे नाम' दाम से जोड़ो तार।।

म69 भौ सागर अति जोर कहिए, विषम अंधी धार।
राम नाम का बांध, उतरो परले पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दुख सुख सूं वह घर पार।।

व्याख्या : मनुष्य को सतगुरू ''वे नाम'' रूपी नौका से भव सागर पार करने की चेष्टा करनी चाहिए।

म70 सतगुरू संत ज्ञानी प्यारो, पल पल करत पुकार।
दास मीरा करत पुकार है, जीवन जग दिन चार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, यह जग स्वपनों का संसार।।

म71 मनुष्य जन्म पदार्थ पायो, ऐसी बहुर ना आती।
अबके सुरति ज्ञान विचारो, राम राम सुरति गाती।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' की सुरति भाती।।

म72 सगुरा सूरा अमृत पीवे, निगुरा प्यासा जाती।
मेरी सुरति मगन भई सुख अंदर, साहिब का गुण गाती।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति में प्रेम जोत जग जाती।।

म73 जब से सतगुरू दात है पाई, कहिं नहीं आती जाती।
मोर कहे इक आस साहिब की, आंसू सूं कह जाती।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, प्रेम धार आंसू बहाती।।

म74 सत्संग नो रस चाख प्राणी, तूं सत्संग नौ रस चाखे तो जागें भाग।
प्रथम लागे तीखो ना कड़वो, निज पहचान पर प्रकटे आग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, 'मै' को सतगुरू वचनों की आग।।

म75 और काया नी गर्व ना कीजै, अंते यह तन छे राख।
हस्ती ने छोड़ा माल खजाना, कोई ना जावे साथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू संगत से सब साथ।।

म76 सत्संग घड़ी मां मुक्ति, सतगुरू दर्शन महिमां एक साथ।
बाई मीरां कहे साहिबन को पा ले, सतगुरू चरणों की सुरति राख।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू चरणों की सुरति राख।।

म77 थोड़े समय में मोक्ष प्राप्ति का, अनुपम साधन सतगुरू सत्संग जान।
सब संत भी यही कहते हैं, वे सब इस के साक्षी जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, केवल पूर्ण संत ही साक्षी जान।।

म78 सुरति तूं तो वृक्षन की लत ले, थारो काई करे डर रे।
काटन वाले सूं बैर नहीं है, नहीं सोपन को स्नेह रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बुरा करने वाले का भी भला रे।।

म79 जो कोई बावे कंकार पत्थर, उनको भी फल दे रे।
पवन चलावे इन्द्र झकोले, दुख सुख आपहि सहि रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, दुख सुख इक सम जान रे।।

म80 सीत गहाम तो शिर पर सहि है, पच्छिन को सुख देई रे।
आसन अचल मनसा नहीं डोले, तूं ध्यान घणी को घई रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, वृक्ष समान ध्यान लेई रे।।

म81 जे तूं चावे पूर्ण मोक्ष जीवन में, सुरत सब्द ले लेई रे।
जैसे चातग धन को रटत है, वैसे चरण सुरति घेई रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, पूर्ण मोक्ष दात ले लेई रे।।

व्याख्या : जिस तरहं पपीहा स्वाति नक्षत्र की बूंद को ही रटता रहता है, उसी प्रकारसाधक को सुरति से ''सार नाम'' जो निजधाम से सतगुरू को मिलता है उस नाम को पूर्ण मोक्ष पाने के लिये जपना चाहिए।

म82 तलफ़ तलफ़ जीवन जाये प्यारो, कब रे मिले सत्यपुरूष आप।
भई हूं दिवानी तन सुध भूली, कोई ना जानी म्हारी बात।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, साहिब जी सुन लो हमारी बात।।

म83 नींदजली नहिं आवे सारी रात, किस विधि होये प्रभात।
साहिब जी मरन जीवन, जानो निज हाथ।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, भव पार लगना अपने हाथ।।

म84 ''सार नाम'' सुरति सूं लीजै प्राणी, कोटिक पाप कटे रे।
जन्म जन्म के खत जो पुराने, नाम ही लेत फटे रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''सार नाम'' सुमिरन से होत पार रे।।

म85 ''सुरत सब्द'' अमृत भरियो, पीवट कौन नटे रे।
मीरां रे प्रभु साहिब अविनासी, तन मन तांहि पटे रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मन माया संग छूटे रे।।

म86 सात रंग मेरा चौला रंग दे, सुरति सूं झुरमुट खेलन जाती।
झुरमुट में मेरा साहिब मिलेगा, खोल आडम्बर गाती।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मोरा सतगुरू रंग राती।।

म87 जैसे हीरा हनत निहाई, ऐसे हम आत्म बनी आई।
जैसे सोना मिलत सोहागा, तैसे हम आत्म सुरति लागी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''सुरति सब्द'' से आत्म हंसा होई।।

म88 जैसे कमल नाल विच पानी, तैसे हम आत्म मन माना।
जैसे चंदही मिलत चकौरा, जैसे हम तन मन जोरा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''सार सब्द'' सुरति से जोरा।।

म89 मैं तो राजी भई सुरति में, मोहि पिया मिले इक छिन में।
पिया मिल्या मोहि किरपा कीन्ही, दीदार दिखाया साहिबन ने।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं,, तन मन गया किया संग साहिबन ने।।

म90 सतगुरू सब्द लखाया सुरति में, ध्यान लगया सुरति धुन में।
मीरां रे प्रभु साहिब मिले रे, मगन भई सार सुरति में।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द की महिमां सुरति में।

म91 अब तो मेरा मूल नाम, दूसरा ना कोई।
माता छोड़ी पिता छोड़े, छोड़े सगे भाई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, होनी हो सो होई।।

म92 सतगुरू संग बैठ बैठ, लोक लाज सब खोई।
सतगुरू देख दौड़ दौड़ आई, जगत देख रोई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू महिमां जाने कोई कोई।।

म93 प्रेम आंसू डार डार कर, अमर बेल ली बोई।
मार्ग में तारन मिल गये, सतनाम देई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''सत सब्द'' से मेला होई।।

म94 सतगुरू आगे शीष मैं राखूं, सब्द महिमां सुरति में होई।
अंत में से तंत काढयो, पीछे रही ईक सोई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, आत्मां से मन मान जाने पर हंसा होई।।

म95 राणे भेजेया विष का प्याला, पीवत मस्त होई।
अब तो बात हर थांह फैली, अब जाने सब कोई।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जब पूर्ण हंसा होई।।

म96 अपमान मोह मान त्याग कर, आप को साहिब जी मीरा ने।
मीरा कहे जग जाये है, या में रहता अच्छा बुरा ईक ना।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, जग में अच्छे बुरे से लेन ना देन।।

म97 सुरत सुहागन नर कुंवारी, दासी क्युं रही।
युगों युगों से मीरां कुंवारी, सतगुरू मिले ना कोई रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, बिन सतगुरू बात ना बने रे।।

म98 सतगुरू मिलया नांहि, कुंवारी मीरां यूं रही।
सतगुरू मिले बिन कैसे, सुहागन बने बिन यूं रहे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू मिले सुहागन होये रे।।

म99 जब बाबुल दियो, दीजो रत्न धन चार पदार्थ प्रेम रे।
गैणो म्हारे ज्ञान रत्न रे, पिरोयो हार ''सार नाम'' रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''सार नाम'' की महिमां जान रे।।

म100 छोड़या छुड़ाया मामा मौसा, बुआ दस बनेड़ी।
छोड़या म्हारी सहेलियां रे, पहनी ''सार नाम'' की बेड़ी।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, रिश्ते नातों की तौड़ो बेड़ी।।

म101 अब मूहं चढ़ गई, ढौल बजाये घर चली अपने रे।
भंवर गुफ़ा रे ध्यान स्थाना, सतगुरू सब्द संग साथ रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरत कमल सतगुरू वासा रे।।

म102 मैं सतगुरू संग प्रीत लगाई, संगत सतगुरू पांऊ रे।
सतगुरू साहिब तो एक हैं रे, फूल वास दौ नाहिं रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतपुरूष तो एक रे।।

म103 बड़े घर की ताड़ी लागी रे, म्हारी सुरति उणारथ भागी रे।
कामना तृष्णा मर गई रे, मैं तो जाये मिलूं परम हंसा सूं रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति निजघर की ओर लगी रे।।

म104 भाग हमारे जागियो रे, जब हंसा चला उस तीर।
अमृत प्याला छाड़ि के, कुन पीवे कड़वा नीर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''सुरत सब्द'' में सुरति नीर।।

म105 ''सार नाम'' मेरी सुरति बसियो रसियो, सतगुरू सूं जुड़ गई तार।
मैं मंद भागण कर्म अभागन, सतगुरू सेवा सूं दूर।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सुरति सूं जोड़ो सतगुरू संग तार।।

म106 तन करूं ताल मन करूं ढफली, सोती सुरति जगाउं ऐ माये।
निरत करूं मैं प्रीतम आगे, तो प्रीतम पद पाऊं ऐ माये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निरत कर रजाऊँ सतगुरू ऐ माये।।

म107 कहें निरंझन सुन हो ज्ञानी, कथि हो जान तुम्हारी वाणी।
युगत महात्म सबै बताऊं, तुम्हारा नाम ले पंथ चलाऊं।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, निरंकार भक्ति वेद ब्खानी।।

म108 कहें ज्ञानी सुन काल विचार, हंस हमारा होये नहीं न्यारा।
निसवासर रहे लौ लीन, सब्द बिना होये नहीं विचारा।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सब्द बिना होये नहीं विचारा।।

म109 सतगुरू सब्द सुरति धार, अनहद मन वाणी से पार।
घूं घूं की ध्वणि चलने से, सतगुरू निष्काम सुश्मिन सम से पार।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, तीन ढंग सूं करते पार।

म110 मो अबला पर कृपा करिजो, गुण सतगुरू का गाऊँ ऐ माये।
मीरा रे प्रभु साहिब प्यारे, रज चरणर की पाऊँ ऐ माये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, गुण सतगुरू का गाऊँ ऐ माये।।

म111 घर आई पीछा मत ताको जी, बिन तन निज को देखयो रे।
मीरा ने अति भक्ति कमाई, ज़हर प्याला झेल्यो रे।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, विश्वास की महिमां अपार रे।।

म112 साहिब प्यारे अब तो ही सूं, लागो रे नेह।
लागी प्रीत तोड़े रे बाला, आधि को कीजै नेह।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, मूल सूं कीजै नेह।।

म113 जो हूं ऐसी जानती रे बाला, प्रीति कियां दुख होये।
नगर ढंढोरा फेरती रे, प्रीत करो मत कोये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, विरह की आग बुझाये कोये।।

म114 पल पल सतगुरू रूप निहारूं, निरख निरख सुख पाति।
मीरा के प्रभु सतगुरू रविदासा, सुरति चरण कमल पाति।
यह भेद ''वे नाम'' जी देते हैं, सुरति चरण कमल की दासी।।

न पांच तत्व को तन रचया, जान्यो संत सुजान।
इस में कुछ सांचो नहीं, नानक सांचो मान।
साहिब जी : नानक सांचो मान।।

क यह तन विष की बेलड़ी, सतगुरू अमृत की खानी।
शीष दिये जो सतगुरू मिले, तो भी सस्ता जान।
साहिब जी : नानक सांची मान।।

क यह तन विष की बेलड़ी, सतगुरू अमृत की खानी।
शीष दिये जो सतगुरू मिले, तो भी सस्ता जान।
साहिब जी : तो भी सस्ता जान।।

क अकह नाम कैसे कै जानी, लिखि नांहि जाये पढ़ी नहीं वाणी।
कलियुग साधु कहै हम जाना, झूठ शब्द मुख करहिं ब्ख़ाना।
साहिब जी : झूठ शब्द मुख करहिं ब्ख़ाना।।

द पिण्ड ब्रह्मण्ड और वेद कितबै, पांच तत्त के पास।
सतलोक यहां पुरूष विदेहि, वह साहिब करतारा।
साहिब जी : वह साहिब करतारा।।

तु ह नाम विदेहि जब मिलें, अंदर खुलें कपाट।
दया संत सतगुरू बिना, को बतलावे बाट।
साहिब जी : सतगुरू सब्द दिखावे बाट।।

क मन जाता है जाने दे, गह के राख शरीर।
उतरा पड़ा कमान से, क्या कर सकता तीर।
साहिब जी : बिन सुरति नांहि चेतन शरीर।

510 सेवक सेवा में रहे, सेवक कहिये सोये।
कहे 'वे नाम' सेवा बिन, सेवक कबहु ना होये।
साहिब जी : सब्द सुरति सूं छूटे जग की आस।।

511 दुख सुख दोनों परिक्षा हैं, सुख बिन परिक्षा मत जान।
सुख दुख से बड़ी परिक्षा, सुख की पकड़ महान।
साहिब जी : दुख सुख कर्मण फंद महान।।

512 सुख दुख अपनी राह पर, सुरति से लेन ना देन।
सुरति सब्द में रहकर, जान दुख सुख एक सम्मान।
साहिब जी : चेतन सुरति सुख दुख ईक समान।।

513 दोऊ नैन बह कर प्यारो, बनाई प्रेम की धार।
प्यास उठी विरह विराग की, मन माया का कैसा सार।
साहिब जी : मन माया का कैसा सार।।

514 संत बड़े परमार्थी, शीतन सुरति अंग।
तपन बुझाऐं हर जीव की, दे दे चेतन सुरति का रंग।
साहिब जी : सतगुरू शरणी प्रेम प्रीत का रंग।।

515 सुख दुख अपनी राह पर, सुरति की ना की पहचान।
''वे नाम'' सब्द को पाकर, सुख दुख एक सम्मान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द प्रेम प्रीत की खान।।

516 संगीत में प्रेम की ज्योति जगे, डूबने की महिमां जान।
वे ही संगीतज्ञ संगीत में, उसी की कर पहचान।
साहिब जी : उसी की कर पहचान।।

517 अमृत भावता तृप्ति भावती, निज की कर पहचान।
ऐसी साधना जब करो, बीज वृक्ष फूल बने महान।
साहिब जी : बीज वृक्ष फूल बने महान।।

518 मन की मृत्यु होती नहीं, वे ही आप औंकार।
मान की मृत्यु जाग कर, जब प्रेम खोले भक्ति द्वार।
साहिब जी : जब प्रेम खोले भक्ति द्वार।।

519 काम बर्फ सम्मान है, मन भाव हर और बहते ले जान।
आत्म से बनना हंसा रूप है, साहिबन अंश रूप महान।
साहिब जी : साहिबन अंश रूप महान।।

520 काम प्रेम भक्ति में प्रवेश, बिन ''वे नाम'' दात मत ले जान।
भक्ति महां (विकार) चेतन रूप हैं, महां चेतन सुरति में समाना जान।
साहिब जी : महां चेतन सुरति में समाना जान।।

521 मोत कभी होती नहीं, मान की टूटे तान।
मन पांच तत्व का बना, उन्हिं में समाना जान।
साहिब जी : उन्हिं में समाना जान।।

522 सतगुरू सब्द सत्यपुरूष हैं, चौथे लोक से आये जान।
दिखने में तो मनुष्य हैं, सत्यपुरूष तद रूप ले जान।
साहिब जी : सत्यपुरूष तद रूप ले जान।।

523 हर सुरति लीना बैराग़, सच्चे साहिबन से मिलने का।
करना हर जीव को बैरागी, निजघर ले जाने का।
साहिब जी : निजघर ले जाने का।।

524 नहीं मोहताज मन माया का, जिसे दात साहिबन ने दी।
मत कर मान ''वे नाम'' सब्द का, जिसे पूर्ण मोक्ष दात दे दी।
साहिब जी : जिसे पूर्ण मोक्ष दात दे दी।।

525 तृप्ति आतृप्ती के मध्य में, निज को पाया जान।
साध ही निज को रहने दो, सब उस की कृपा जान।
साहिब जी : सब उस की कृपा जान।।

526 आत्म अंर्तयामी को कोई, बुद्धि से परखना मत जान।
इस बिन देखने सुनने वाला नहीं, ता से अर्न्तयामी जान।
साहिब जी : ता से अंर्तयामी जान।।

527 जब भजन पूरा हो जात है, तब सुरति का फूल खिले।
तन सुगंध से भर जात है, सुरति से खेल चले।
साहिब जी : सुरति से खेल चले।।

528 जब तक मैं से आशायें तेरी, भय ही कारण जान।
मिटना पड़ता ध्यान में, तब पी की खोज महान।
साहिब जी : तब पी की खोज महान।।

529 आत्म सत सुरति आनंद है, चेतन सुरति अंश महान।
यह जग आसत्य मिथ्या है, सत्यपुरूष ले जान।
साहिब जी : सच्चा भेद सतगुरू सूं ले जान।।

530 श्रद्धा अनुभाव विवेक से, जानने की यात्रा महान।
झूठे विश्वास सब छोड़ कर, सच्ची सरल राह पर चलना जान।
साहिब जी : सच्ची सरल राह पर चलना जान।।

531 यह तन विष की बैलगाड़ी, सतगुरू अमृत की खान।
शीष दिये जे संत मिलें, तो भी सस्ता जान।
साहिब जी : तो भी सस्ता जान।।

532 राज घाट धन्य पाये के, क्यों करता अभिमान।
पड़ोसी की देख दशा, वही तेरी पहचान।
साहिब जी : वही तेरी पहचान।।

533 तंत्र मंत्र सब झूठ है, मत भरमावे कोये।
''वे नाम'' सब्द पाये बिना, जग पार करे ना कोये।
साहिब जी : जग पार करे ना कोये।।

534 ''वे नाम'' सब्द सुख खानी, काल शब्द दुख राशी।
''वे नाम'' सब्द से बंधन कटें, काल शब्द में फांसी।
साहिब जी : काल शब्द में फांसी।।

535 चेत सवेरे भांवरे, फिर पीछे पछताये।
सुरति को जाना दूर है, कहें साहिब भुजाये।
साहिब जी : कहें साहिब भुजाये।।

536 शीतल शब्द ऊचारिये, आंह आन्ये नांहि।
तेरा प्रीयतम तुझ में, वैरी भी तुझ मांहि।
साहिब जी : वैरी भी तुझ मांहि।।

537 कुटिल वचन नहीं बोलिये, शीतल से मिले चैन।
सार सब्द की दात से, निजघर की होत पहचान।
साहिब जी : निजघर की होत पहचान।।

538 पतंगे की प्रीति जीत सूं, पल पल जलते अंग।
सुरति जीती संग जुड़ गई, पल को भी ना मोड़े अंग।
साहिब जी : पी को भी ना मोड़े अंग।।

539 मीरा योग में ना गई, भक्ति भेद लिया जान।
पग़ घुंघरू बांद वे नाच उठी, भेद की बात ले जान।
साहिब जी : भेद की बात ले जान।।

540 भक्त का होना ना होना, जोहरी की सी रीत।
बूंद समाना सिंधु में, फिर कहां हैरी जात।
साहिब जी : फिर कहां हैरी जात।।

541 भक्ति में बुद्धि से लेन ना देन है, ना समझी की बात ले जान।
आद और अंत प्यारे का नहीं, उस से जुड़ा हर पल ले जान।
साहिब जी : उस से जुड़ा हर पल ले जान।।

542 तुम्हारी पुकार से वे आया है, देरी की क्या बात।
इसी पल उस को भौग लो, सुरति प्रतीति की बात।
साहिब जी : सुरति प्रतीति की बात।।

543 परमात्मां सत्यपुरूष व्यक्ति मत जान, जो हर एक में बस रहा।
अकेला होना उसकी महिमां जान, पूर्ण से पूर्ण पा पूर्ण शेष ले जान।
साहिब जी : पूर्ण शेष ले जान।।

544 आरम्भ भक्ति का प्रेम है, सार्थक की पीड़ा ले जान।
ना चीज़ की पीड़ा नहीं, अब उस का संग ले जान।
साहिब जी : अब उस का संग ले जान।।

545 परम भौग इसी ज्ञान में, स्वांस स्वांस में संग साथ।
एक छलांग प्रेम की, फूलों का खिलना एक साथ।
साहिब जी : फूलों का खिलना एक साथ।।

546 योग तो लम्बी सीढ़ी है, महांवीर की दिशा ले जान।
हांकाड़ पहाड़ सी बात, भक्ति पहले छिन में सिद्धि जान।
साहिब जी : भक्ति पहले छिन में सिद्धि जान।।

547 परम भौग की प्यास कैसी, जब परम प्रेम संग साथ।
मन मान का संग गया, महां चेतन सुरति संग साथ।
साहिब जी : महां चेतन सुरति संग साथ।।

548 समर्पण ही साध की भक्ति है, सुरति उससे जोड़ लो जान।
हम तो जोड़े ही हैं प्यारो, टूटा संग मत जान।
साहिब जी : टूटा संग मत जान।।

549 उस से टूटे जन्म जन्म से, बिन सत्यपुरूष सब्द की दात।
अब उसी संग पुकार उसकी, इसी पल जोड़ो संग सुरति बात।
साहिब जी : इसी पल जोड़ो संग सुरति बात।।

550 जा से दात उसी की पुकार, हर कार्य में संग ले जान।
सोच विचार का संग गया, ध्यान में सतगुरू का संग महान।
साहिब जी : ध्यान में सतगुरू का संग महान।।

551 जब पूरे टूट जाओ, तुम्हारी हार में वे ही संग ले जान।
भक्त के पास उत्तर नहीं, प्रेम की सीढ़ी जान महान।
साहिब जी : प्रेम की सीढ़ी जान महान।।

552 भक्ति प्रेम से प्रकटाई, बुद्धि हृदय से मत ले काम।
सत्यपुरूष हर और छाये प्यारो, सुरति सब्द स्वांसा से ले काम।
साहिब जी : सुरति सब्द स्वांसा से ले काम।।

553 भक्ति आप ही पूर्ण शक्ति प्यारो, निज को खे कर पाना है।
बूंद का सागर में खो जाना, पाने का ईशारा दे जाता है।
साहिब जी : पाने का ईशारा दे जाता है।।

554 भक्ति का ज्ञान से लेन ना देन प्यारो, मै बुझे के निःसब्द इशारे समझो।
ना समझी मन औंकार की, समझदारी रोक लेती ईशारे समझो।
साहिब जी : समझदारी रोक लेती ईशारे समझो।।

555 समझदारी पैरों की जंज़ीर प्यारो, चलने देती मत जान।
ना ध्यान ना भक्ति, तरक जाल हर ओर फैला जान।
साहिब जी : तरक जाल हर ओर फैला जान।।

556 गेण पीड़ा से प्यारो, प्रार्थना उठती महान।
आंखे देखें उस प्यारे की, जिस को देखना काम महान।
साहिब जी : जिस को देखना काम महान।।

557 प्रमाण पल में प्यारो, रूप भक्त की आंखें मूरत में जाने।
यह सब खोकर ही प्यारो, मिलता दर्श महान।
साहिब जी : मिलता दर्श महान।।

558 ईश्क नहीं आसान, बस ईतना सा समझ लीजिये।
एक आग का दरिया है, इसे डूब के जान।
साहिब जी : इसे डूब के जान।।

559 समर्पण करो खुद को प्यारो, सतगुरू चरणन में सुरति सूं रे।
मै को छोड़ो प्रीत सूं, सतगुरू संग नाता जोड़ो रे।
साहिब जी : सतगुरू संग नाता जोड़ो रे।।

560 जब मैं और मेरी गई प्यारो, तभी प्रेम भक्ति जागों रे।
प्रेम है जीवन प्रेम सतगुरू, महां प्रेम साहिबन जान रे।
साहिब जी : महां प्रेम साहिबन जान रे।।

561 सतगुरू में सत्यपुरूष का वासा प्यारो, सतगुरू साहिबन एक रूप रे।
जो पूर्ण सतगुरू को है पाता, वह भक्ति में खो जाता रे।
साहिब जी : वह भक्ति में खो जाता रे।।

562 जैसे नैनों में पुतली, त्युं सत सब्द सुरति माहिं।
अंधा नर जाने नहीं, सो तो सुरति माहिं।
साहिब जी : सो तो सुरति माहिं।।

563 मन बुद्धि चित्त जब संग में, कैसे कोई उतरे पार।
सुरति धारा जब तक नांहि, कैसे कोई जाने भक्ति सार।
साहिब जी : कैसे कोई जाने भक्ति सार।।

564 सार नाम लिया तिन सब लिया, सब जन्मों का भेद।
बिन नामें जग में रहे, काल जाल संग नांहि भेद।
साहिब जी : काल जाल संग नांहि भेद।।

565 लाल रंग का सूर्य जब दिखे, मन प्रेम रूप हो जाई।
हर दिशा प्रेम ही प्रेम प्रकटे, जीवन फूल समान खिल जाई।
साहिब जी : जीवन फूल समान खिल जाई।।

566 निज सूं पार हो आये, सच्चे संत कबीर।
''सार नाम'' सब्द वर्षा करी, पिगलाई मन मान की जंज़ीर।
साहिब जी : मन मान की जंज़ीर।।

567 मन कहीं बैठता ही नहीं, परमात्मां मिले बात बने।
सहज होये बिन भगवान नांहि कोई प्यारो, ठिकाना पाया मत जान।
साहिब जी : ठिकाना पाया मत जान।।

568 एक सफलता जान जीवन में, मोत से पहले उस को सुरति में बैठा जान।
चित्त अशांत जब तक परम–धन से दूर, तेरा सौभाग्य एकांत दूर बैठा जान।
साहिब जी : अशांत चित्त दुखों की खान जान।।

569 धन मान से बात बने नहीं, महत्वाकांक्षा हर पल संग साथ।
शांति जो थी वह गई, और पाने में शांति कैसे संग साथ।
साहिब जी : तृष्णा लाये अशांति संग साथ।।

570 सतगुरू के प्रेम में खो जा, दान उसी को दे दो रे।
जिस ने दिया दान, निज को उसी के चरणो में दे दो रे।
साहिब जी : उसी के चरणों में दे दो रे।।

571 तन स्वपन्न मन स्वपन्न, अर्थात सब कुछ स्वपन्न।
आत्मां परमात्मां स्वपन्न प्यारो, तीन देवता भी जान तूं स्वपन्न।
साहिब जी : तीन लोक भी जान तूं स्वपन्न।।

572 सार सुरति सब्द हल्का करे, सूखे पत्ते समान।
प्रेम भक्ति की दौड़ प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू हाथ कमाना।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द संग जोड़ी सुरति तान।।

573 'वे नाम' जा के देख लिया, परम हंसों का भक्ति अमर देश।
भक्ति खेल हर परम हंसा सुरति में, भक्ति सुरति का देश।
साहिब जी : भक्ति सुरति का देश।।

574 जग प्रेम सत्ता औंकार के हाथ में, जीव मन मान से पार मत जान।
मन को सेवे मन की पूजा, प्रेम प्यास जागी मत जान।
साहिब जी : काम में भटका हर जीव ले जान।।

575 'सार सुरति' सब्द मन मान से हल्का करे, सूखे पत्ते समान।
'वे नाम' सतगुरू हाथ दात प्यारो, देत भक्ति का भेद महान।
साहिब जी : देत भक्ति का भेद महान।।

576 आत्म ज्ञान से प्यारो, मन भी प्रेम दौड़ में बंधा जान।
सब्द सुरति स्वांसा भक्ति प्रकटाये, हर नर भक्ति डौर से पार ले जान।
साहिब जी : हर नर भक्ति डौर से पार ले जान।।

577 तन मन दोनों प्रेम में, सार सब्द की दात जब संग।
प्रेम भक्ति की ओर चले, सतगुरू साहिब भी संग।
साहिब जी : सतगुरू साहिब भी संग।।

न जप तप संयम साधना, सब सुमिरन के मांहि।
साहिब जी जानत संत जन, सुमिरन सम कुछ नांहि।
साहिब जी : सकल तन रोग की औषध सांचा नाम।।

578 नाम से नासे रोग, हरे सब पीड़ा सुरति नाम।
''वे नाम'' सब्द को जानो, गुप्त सांचा नाम।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द की महिमां महान।।

क स्वपन्न में भी चिंतन पर आश्रित प्यारो, सुरति कुंद ले जान।
क्यों भटकता फिर रहा है, तूं तलाशे चार में।
रास्ता शाहरग में है, दिल भर पे जाने के लिये।।

न ईड़ा पिंगला सुखमन बूझे, आपे अलख लखावे।
उसके उपर सांचा सतगुरू, अनहद सुरति सब्द समावे।
धुन बाजे घोरा, मगन भया मन मोरा।
सब्दे मारा मर गया, अब मरूं ना दूजी बार।
सब्द ते पाया नानका, गुरू सब्द लगा प्यार।
चेतना एकाग्रता में है, रंग भी रोशनी को दीप्त करते जान।

579 सुषुम्ना नाड़ी, चेतन जोत ददिप्त करती है।
क्रीम रंग का हल्का रंग है, तो आत्म निखर जाती है।
साहिब जी : सार सुरति अमर जोत जगाती है।।

580 सब कुछ किया सतगुरू का, जिन के संग सत्यपुरूष आप।
जीव के बस कुछ है नांहि, आपे आप चलावे आप।
साहिब जी : सतगुरू करें साध के काज सब आप।।

न नाम जपदेयां खिन दिल ना कीजै भाई, साह का विश्वास ना कीजै जी।
अपने भाणे विच सदा रखयो, स्वांस स्वांस साहिबन की ओट लीजिये जी।
साहिब जी : जीते जी सतगुरू ओट ले लीजिये जी।।

581 दृढ़ संकल्प से हर कार्य करो, निर्बल कुछ भी पा सकता नहीं।
सार सुरति धुर लोक से आई प्यारो, बिन सतगुरू पकड़ी जाये नहीं।
साहिब जी : बिन सतगुरू पकड़ी जाये नहीं।।

582 सत्यपुरूष नाम में, नाम सतगुरू से पाया जान।
सत्यपुरूष ऐसी बनत बनाई प्यारो, जैसा कर्म करोगे वैसा ही फल जान।
साहिब जी : जैसा कर्म करोगे वैसा ही फल जान।।

583 प्रेमी की शरण सतगुरू चेतन सुरति से, वे ही पल पल प्रेम में साथ।
सतगुरू को रजाना काम है, सत्यपुरूष पल पल साथ।
साहिब जी : सत्यपुरूष पल पल साथ।।

584 जो बाहिर वही तो अंदर प्यारे, अंदर से जोड़ो तार।
संसार मिटा हृदय में सत्य ला, अंदर से जोड़ती तार।
साहिब जी : अंदर से जोड़ती तार।।

585 आत्मां माया के गहरे अंधेरे में प्यारो, जन्मों जन्मों से सोई पड़ी तूं जान।
सतगुरू का मिल जाना ही प्यारो, गहरे नशों का भेद पाना जान।
साहिब जी : गहरे नशों का भेद पाना जान।।

बु श मोती अन्न और पारस सब, रक्खा रह जायेगा।
पास समुन्दर के रहकर भी, तूं प्यासा मर जायेगा।
साहिब जी : तूं प्यासा मर जायेगा।।

586 अगर तूं सतगुरू शरण ना आया, तो माया रूपी हिरण नष्ट कर देगा।
जीवन अंत निष्चित प्यारो, जो जागे वोहि सत भक्ति की राह पायेगा।
साहिब जी : बिन सतगुरू कोई ना तरेगा।।

व्याख्या : अगर तूं सदगुरू की शरण में नहीं आयेगा तो एक दिन माया रूपी यह हिरण खेत उजाड़ देगा, जीवन का अंत तो निष्चित है परन्तु जो इस अंत को इस अर्थ को समझ ले वही भक्त है।

बु श साडे वल मुखड़ा मोड वे प्यारिया, साडे वल मुखड़ा मोड़।
आपे पाईयां कुण्डियां ते, आपे खिचदायें डौर।
अर्श कुर्सी ते बागां मिलियां, मक्के पै गया शौर।
बुल्लेशाह असां मरना नहीं, मर जावे कोई होर।

587 एक भरौसा एक बल, राम नाम पर विश्वास।
स्मरण मात्र से प्यारो, शुभ मंगल और कल्याण क्यास।
साहिब जी : नाम बल पर राखो आस।।

588 ''वे नाम'' सब्द सुरति दीप धरूं, पल भर को भी ना टूटे तार।
भीतर से भीतर बाहिरौ (जलाओ), चार लोक उजियार।
साहिब जी : चार लोक उजियार।।

589 कामी जनों को स्त्री प्रिय प्यारो, लोभी को धन प्रिय ले जान।
भक्त को सतगुरू प्रिय, साहिबन को प्रिय संत ले जान।
साहिब जी : साहिबन को प्रिय संत ले जान।।

590 'वे नाम' दास सा दीन प्यारो, मत कोई प्यारा मिल जाये रे।
सतगुरू सा दीन हित्त प्यारो, पकड़ो जन्म मरण छूट जाये रे।
साहिब जी : सतगुरू ही पार लगाये रे।।

591 सब्द शब्द भोह अंतर, सतगुरू सूं जानो एक।
जल और लहर देखने में भिन्न भिन्न प्यारो, जानो वास्तव में एक।
साहिब जी : सतगुरू साहिब भी एक।।

तु सीता लखन समेत प्रभु, मोहन तुलसी दास।
हर्षत सुर बरसत सुमन, सगुण सूमंगल बास।
साहिब जी : सगुन सूमंगल बास।।

592 ''वे नाम'' सब्द सुरति धरो, रहो धनी के द्वार।
धनी सतगुरू 'वे नाम' हैं, पल पल सुमिरो सब्द सुरति की धार।
साहिब जी : पल पल सुमिरो सब्द सुरति की धार।।

593 एक बार जो संग साथ हैं जाते, जाये बहुरि विहंगम चाल जब पाते।
सुरति से दर्शन साहिबन का, एक साथ निजघर को जाते।
साहिब जी : सतगुरू शरणागत निजघर हैं जाते।।

594 सतगुरू कृपा से प्यारो, सूक्ष्म से सूक्ष्म तन की प्राप्ति जान।
साधक ब्रह्मण्ड का अवलोकन करता चलता, मन का खेल छूटा ले जान।
साहिब जी : विहंगम चाल की महिमां महान।।

595 सत्यपुरूष रूप वर्णन से बाहिरा, सुरति से आव्यक्त को व्यक्त में प्रयास जान।
पारस सुरति परमपुरूष में समाने से आती, सुरति में समाना जान।
साहिब जी : परम भक्ति का खेल महान।।

596 परम प्रक्षवान महांचेतन सुरति अति, सत्यपुरूष महांचेतन सुरति सूं जान।
साहिबन कृपा करी 'वे नाम' पर, दिये दर्शन महान।
साहिब जी : दिये दर्शन महान।।

597 सुरति की पलट हंसा कर दीना, क्षन एक की बात।
कोटि जन्म का खेल प्यारो, पल में साथ की बात।
साहिब जी : पल में साथ की बात।।

598 अमरलोक सब पुरूष से प्यारो, सो बिरला संसार।
पुरूषे पुरूषे सो रचा, परम हंसा हैं सार।
साहिब जी : परम हंसा हैं सार।।

599 सतपुरूष मोर रंगरेज, चुनरी सुरति रंग डारो।
उज्जवल निर्मल रंग दिया प्यारो, सुरति प्रकाशित कर डारो।
साहिब जी : सुरति प्रकाशित कर डारो।।

600 भरौसे के बल पर प्यारो, भक्ति का बीज पनपता जान रे।
अपना प्रेम और कृपा रखना, उसी को मांग लिया जार रे।
साहिब जी : उसी को मांग लिया जार रे।।

601 जग में दुख सुख, एक समान ले जान रे।
जिस हाल में राखे, उसी हाल में प्रेम जान रे।
साहिब जी : सतगुरू सुरति प्रेम प्रीत की खान रे।।

602 सतगुरू आज्ञा निरखत रे, प्रेम की डौरी संग साथ।
भक्ति में सुरति हर पल रहे, सब्द स्वांसा सुरति एक साथ।
साहिब जी : सब्द स्वांसा सुरति एक साथ।।

603 आहार विचार शुद्धम जब प्यारो, सुरति निरति शुद्धम ले जान।
आप ही साधकों का ध्याण रखत हैं, आप ही हैं देवनहार महान।
साहिब जी : आप ही हैं देवनहार महान।।

604 आप ही अमरलोक के सच्चे साहिब, पूर्ण पुरूष कहाई।
सर्व में व्यापक आपु रहई, केवल पूर्ण सतगुरू सूं भेद कहई।
साहिब जी : केवल पूर्ण सतगुरू सूं भेद कहई।।

605 सार नाम बिना सुरति अंधी जानो, सुरति स्थिर नाम से जानो।
पाई दात निजघर को जावे, परम हंसों से सच्चा घर पहचानो।
साहिब जी : परमहंसों से सच्चा घर पहचानो।।

606 सब कल्पनायें मन की प्यारो, आत्मां हमारा ध्यान ले जान।
ध्यान पल पल मन घुमाता प्यारो, सार नाम करावे ध्यान।
साहिब जी : सार नाम करावे ध्यान।।

607 हर कोई मन के उलझाव में प्यारो, ''वे नाम'' सब्द से उलझाव जाये रे।
ध्यान सुरति डौर स्वांसा संग लग, पल में मन से पार हो जाये रे।
साहिब जी : पल में मन से पार हो जाये रे।।

608 अंतःकरण में आत्म वासा प्यारो, सच्चे भेद से जानो दूर रे।
सारा खेल मन का प्यारो, सार सब्द से पाओ सच्चा भेद रे।
साहिब जी : सार सब्द से पाओ सच्चा भेद रे।।

609 सुरति संभाले काज है, तूं मत भरम भुलाये।
मन मान से लेन ना देन है, सुरति के संग रहाये।
साहिब जी : सुरति के संग रहाये।।

610 सुरति ही हमारी आत्मां, तन में सात भागों में बटी जान।
तन के 9 खंड एक शरीर हैं, सुरति ही करति हर काम ले जान।
साहिब जी : आनंद मूल चमक आदि ले जान।।

611 सुरति को सब अंगों से निकाल कर, एकाग्र करना काम ले जान।
इसी में सब ताकत प्यारो, इस ख़जाने को एक करना जान।
साहिब जी : इस ख़जाने को एक करना जान।।

612 सदगुरू ही सत्य पिता आत्मां के, सत्य धर्म गुरू भाई ले जान।
लज्जा धीरज सतगुरू शरण में प्यारो, शीलता सहजता सत्संग में जान।
साहिब जी : शीलता सहजता सत्संग में जान।।

613 आत्मां का आनंद संतोष प्यारो, ''वे नाम'' सब्द सुमिरन में जान।
सदगुरू दर्शन में क्षमा भाव प्यारो, आत्म विवेक सदगुरू वाणी महान।
साहिब जी : आत्म ज्ञान विवेक सदगुरू वाणी महान।।

614 सदगुरू ''वे नाम'' सब्द प्यारो, सुरति चेतन करे महान।
आशा तृष्णा का संग गया, मन बुद्धि वश में ले जान।
साहिब जी : मन बुद्धि वश में ले जान।।

615 ''वे नाम'' सब्द ही मूल अकह नाम प्यारो, जा में साहिबन वास।
मन मान के छल समझ में आते प्यारो, सुरति में हर पल साहिबन वास।
साहिब जी : सुरति में हर पल साहिबन वास।।

616 सार नाम सुरत नाम प्यारो, देते सदगुरू आप रे।
बड़े भाग मनुष्य तन पाया, सदगुरू का पाया साथ रे।
साहिब जी : लोभ मोह अहंकार का छूटा साथ रे।।

617 मन तरंग में जगत भुलाना, सूक्ष्म रूप में तरंगे बुद्धि में अति जान रे।
मन की ईच्छा जान प्यारे, सुरति सूं लेन ना देन रे।
साहिब जी : सुरति सूं लेन ना देन रे।।

काव्य – आप का न्यारा घट

क या घट भीतर हीरा मोती, या ही में परखन हारा रे।
या घट भीतर काशी मथुरा, या ही में रहता प्यारा रे।
या घट भीतर देवी देवा, या ही में ठाकुर द्वारा रे।
या घट भीतर ब्रह्ममा विष्णु, शिव सनकादि अपारा रे।
या घट भीतर रिद्धि सिद्धि के, भरे अटल भण्डारा रे।
या घट भीतर तीन लोक हैं, या ही में सत्यपुरूष प्यारा रे।
तीन लोक में मनहि विराजी, भेद जानत संत प्यारा रे।

काव्य

क हर हंसा शुद्ध आत्मां प्यारो, ईच्छा से लेन ना देन रे।
इस में चाह नहीं, संकल्प विकल्प से लेन ना देन रे।
आत्मां मन बंधन में प्यारो, अजन्मा नित्य सहज जा रे।
आत्मां ईन्द्रीयातीत प्यारो, व्योमातीत पंच भौतिक तत्वों से परे जान रे।
न्युनाधिक नहीं होती, जन्म मरण से दूर जान रे।
अनश्वर अखंडित निर्लम्भ, आनंद स्वरूप सहज जान रे।
प्रेम भक्ति से भरा पड़ा, चिंतन से निज जान रे।
कभी तन कभी मन जान्ति निज को, सच्ची भूल की पहचान रे।
अंदर अंधकार में पड़ी पड़ी, निज की खोई जान रे।
करूणमय कहलाता भगवन, अंतःकरण प्रकाशित नांहि रे।
क्यों करूण नहीं दिखा रहा, कैसा सहज आनंदमय जान रे।

क सब घट मेरा सांईया, खाली घट ना कोये।
बलिहारी वा घट की, जा घट प्रगट होये।
साहिब जी : जा घट प्रगट होये।।

क ज्यों तिल मांहि तेल है, ज्यों चककम में आगि।
तेरा साई तुझ में है, जाग सके तो जागि।
साहिब जी : ईक जागा ही मन माया त्यागी।।

618 रगड़ रगड़ से प्यारो, चंदन से अग्नि प्रकट हो जात है।
सार सब्द साहिबन सुरति प्यारो, आत्म ज्योत चेतन कर जात है।
साहिब जी : चेतन सुरति सात सुरति एक कर जात है।।

619 नासिका में किरकिल वायु प्यारो, सभी वायुओं का संतुलन ठीक करती जान।
यह वायु विश्राम देती प्यारो, यह वायु खराब होन पर दिमाग खराब करती जान।
साहिब जी : खराब होने पर दिमाग खराब करती जान।।

620 बिन जल प्यास बुझती नहीं, उष्मां से खाली जान रे।
जल में शीतलता प्यारो, तासीर शीतल जान रे।
साहिब जी : तासीर शीतल जान रे।।

621 तन को जिस शीतला की मांग प्यारो, केवल शुद्ध जल में जान रे।
जल में शीतला ही सच्ची प्यारो, तन शीतल कर जात रे।
साहिब जी : तन शीतल कर जात रे।।

622 मिटटी सर्दी में गर्मी देती प्यारो, गर्मी में देती ठंडाक रे।
मिटटी मौसम के विरूद्ध में प्यारो, आटोमेटिक सिस्टम महान रे।
साहिब जी : आटोमेटिक सिस्टम महान रे।।

क यह काया है समरथ केरी, काया की गति काहु ना हेरी।
साहिबा काया अथाह है, कोई बिरला जाने भेद।
साहिब जी : कोई बिरला जाने भेद।।

ब्र न आदमी का जिस्म क्या है, जिस पर सैला है जहां।
एक मिटटी की ईमारत, एक मिटटी का मकान।
साहिब जी : एक मिटटी का मकान।।

ब्र न खून का गारा है इसमें, ईंट इसकी हड्डियां।
चंद स्वांसों पे खड़ा, ऐ खयाले आसमां।
मौत की पुरज़ोर आंधी, आके जब टकरायेगी।
टूट कर यह ईमारत, खाक में मिल जायेगी।।

623 जिस स्वांस में सुमिरन नहीं प्यारो, बेकार स्वांसा जान रे।
जो स्वांसा नाभि में जाती प्यारो, मूंह से गंध ले होती बाहिर।
साहिब जी : मूंह से गंध ले होती बाहिर।।

624 सपने में आंतरिक कोशिकायें क्रियाशील हो रही, बाहरी शांत ले जान।
नींद की कोशिका में प्रवेश पर प्यारो, सुरति कुंद हो जाती जान।
साहिब जी : सुरति कुंद हो जाती जान।।

न ईड़ा पिंगला सुखमन बूझे, आपे अलख लखावे।
इस के उपर सांचा सतगुरू, अनहद सुरति सब्द समावे।
धुन बाजे घोरा, मगन भया मन मोरा।।

न शब्दे मारा मर गया, अब मरूं ना दूजी बार।
शब्द ते पाया नानका, गुरू शब्द लगा प्यारा।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द कराये पारा।।

625 सुषुम्ना नाड़ी सुरति को प्यारो, एकाग्र करने में सहायक ले जान रे।
पल में सुरति सब्द से प्यारो, चेतन होती ले जान रे।
साहिब जी : चेतन होती ले जान रे।।

626 सत्संग में सतगुरू दर्शन करने आया कर, ध्यान का खेल महान रे।
बुद्धि गई चित्त गया, सुरति चेतन होत महान रे।
साहिब जी : सुरति चेतन होत महान रे।।

627 ''वे नाम'' सब्द चेतन प्यारो, साहिब आप को आप ददिप्त करते जान रे।
मन बुद्धि चित्त गया प्यारो, अत्यंत सूक्ष्म रूप में अनुभूति जान रे।
साहिब जी : अत्यंत सूक्ष्म रूप में अनुभूति जान रे।।

628 पुहूप वास से पातला प्यारो, पानी से जान अति झीन रे।
वायु गति से तेज प्यारो, ईन्द्रियातीत रंग रूप से पार रे।
साहिब जी : आत्म में परमात्म दर्शता जान रे।।

629 काव्य : सत्यपुरूष की कृपा

1 'वे नाम' सतगुरू पाने से पहले, ब्रह्मचारी पक्का जान रे।
2 काम काज भी छोड़ा प्यारो, सतगुरू सूं पाई सच्ची दात रे।
3 यह काम सब निराकार भगवन अनुसार, सत्यपुरूष भी दिया साथ रे।
4 पपील मीन की चालों को पाया, लोक लुकान्तरों की करि सैल रे।
5 निर्बन्ध हो रहा जग में प्यारो, प्रेम सत्य पाया हथियार रे।
6 परमार्थ में सदा से ध्यारो, दासा बन जग में रहता रे।
7 विहंगम चाल सत्यपुरूष से पाई, सार सुरत सब्द की संग दात रे।
8 सत्य लोक की संग सैल करि, परमहंसों का पाया संग साथ रे।
9 सत्यपुरूष कड़ि खेल खिलाये, अमृत प्याला पिया मीरा के हाथ से रे।
10 निःअक्षर को बांटने का हुकुम मिला, चलाया पंथ 'वे नाम' सुरति धार रे।
11 जाप अजापा अनहद छूटे, पारस सुरति का पाया साथ रे।
12 पारस सुरति सत्यपुरूष हैं देते, पल पल रहते संग साथ रे।
13 जो आवे दात पा जावे, चेतन सुरति से मन माया का छूटे साथ रे।
14 कोई प्यारा संत जग में आता, सत्यपुरूष की कृपा जान रे।
15 जो कोई ''वे नाम'' सब्द को पावे, पूर्ण मोक्ष का अधिकारी जान रे।
16 सुषुम्ना खोलना काम महान प्यारो, सब्द सुरति स्वांसा एक करनी जान रे।
17 सतगुरू नाम दान की प्रक्रिया प्यारो, सतगुरू सुरति उज्जवल करना जान रे।
18 नाम बिन सुरति अंधी प्यारो, मन माया में फंसा नर जान रे।
19 सुरति में साहिबन पासा प्यारो, सुरति चेतन से होता नर पार रे।
20 उठ जाग री सुरति सुहागिन जागरी, प्रेम भक्ति से नर होता पार रे।
21 चिंतन मनन सुख, दुख मन के अंग जान रे।
22 तीन लोक में मनहि विराजी, इस से पार होना ''वे नाम'' सब्द से जान रे।
23 आत्म की समझ ईन्द्रियों से नांहि, दिव्य दृष्टि् से होता सब काम रे।
24 ''वे नाम'' सब्द निर्लम्भ, स्वंय में ओत प्रोत जान रे।
25 निःअक्षर सब्द, किसी पर आधारित मत जान रे।

26 सब्द से स्वयं साहिबन तत्व आत्मां प्रकाशत करता जान रे।
27 आत्म में परमात्म दरशे, नाम दान का काम रे।
28 जप तप संयम साधना, सब सुमिरन के अंग रे।
29 सब संत जानत प्यारो, सुमिरन सम कुछ नांहि रे।
30 प्रेम भक्ति सत्य आनंद गुण खानी, सत्संग बिनु बात बनी मत जान रे।
31 निःअक्षर मूल सब्द ''वे नाम'' गहि चले, जागना ना जागना खेल संसार।
32 पुहूप सास से भी सूम, पानी से अति झीन जान रे।
33 सुरति स्थिति में महां चेतन सुरति अत्यंत सूक्ष्म, अनुभूति साधक करता जान रे।
34 मन खेल खेलता अपना, चिंतन में आत्मा ध्यान को उलझाता जान रे।
35 सत्संग में आना कार्य बड़ा प्यारो, सतगुरू दर्शन से होत सब काम रे।।

काव्य

क पुहूप वास से पातला, पानी से अति झीन रे।
वायु से उतावला, साहिबन दर्शन कोन रे।
कारण तन योगी पाते प्यारो, महांकारण तन ध्यान में प्राप्त होता जान रे।
ज्ञान देहि बड़ा अदभुत तन प्यारो, संसार बहुत कम याद जान रे।
विज्ञान देहि छड़ी देहि प्यारो, ता में आनंद का अनुभव जान रे।
दुख का अनुभव होता प्यारो, ब्रेन परिधी से कौसों दूर रे।
पंच मुद्रायें छअी देहि तक प्यारो, निरंकार में समाना जान रे।
योगी तुरियातीत तक प्यारो, बिन अखां देखना बिन कन्ना सुनना रे।
बिना नाक के सूंघना बिन हथां करना, सुरति से सब होते जान रे।।

630 मन चिंता का विषय प्यारो, चिंतन मनन सुख दुख मन का काम रे।
आत्म का इन से लेन ना देन प्यारो, निज स्वरूप की अनुभूति महान रे।
साहिब जी : निजस्वरूप की अनुभूति महान रे।।

631 हर तन विष की बेलरी, सतगुरू सूं होत पहचान रे।
सतगुरू को आपा सौंप दे, निज की होत पहचान रे।
साहिब जी : निज की होत पहचान रे।।

632 सार नाम बिना सुरति अंधयारी, मन माया किया बेहाल रे।
जन्म जन्म का बंधन मसकला प्यारो, प्रेम भक्ति ही करावे पार रे।
साहिब जी : पल में डारे धोये रे।।

633 नाम 'वे नाम' मुक्त मणि, पुरूष आप उच्चारा।
सार सब्द सुरत सब्द सार यह, हंस सुरति में सब्द उच्चारा।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सुरति पूर्ण मोक्ष द्वारा।।

ओम तत सत्त / सत्त सुरति आनंद

634 ओम त्रिदेव कहलाते प्यारो, ब्रह्मा विष्णु और महेश।
तत्त निरंजन औंकार जानिये, सत्त में परम पुरूष का वास।
साहिब जी : सत्य प्रेम आनंद में सत्यपुरूष वास।।

635 नाम हमारा मुक्ता–मणि, पुरूष आप ही राखी।
सब्द शिरोमणि सार प्यारो, हंसा सब्द सुरति राखी।
साहिब जी : साध की आस सतगुरू राखी।।

636 यही नाम सुरति में पहुंचावे, सुमिरत सुरति स्वांसा संग पार रे।
पल पल सब्द सम्भार करो प्यारो, सुरति सब्द सुरति से पार रे।
साहिब जी : सुरति सब्द सुरति से पार रे।।

637 तन मन का संग जब छूटता प्यारो, सुरति महां चेतन हो जाये रे।
काल पुरूष अब कुछ ना करी सके, चेतन सुरति जब संग साथ रे।
साहिब जी : चेतन सुरति जब संग साथ रे।।

638 आप ने जीवन के दुख सुख देकर प्यारे, अपना आप छुपाये रे।
जब भी प्रेम से कुछ मांग प्यारे, अपनी जुदाई का दर्द दे दिया रे।
साहिब जी : अपनी जुदाई की चेतना दिप्त कर दी रे।।

639 जिन जिन प्रेम किया प्यारो, तिन तिन पाया साहिबन दीदार रे।
प्रेम से भक्ति और जो चले प्यारो, सोहि पहुंचे साहिबन दरबार रे।
साहिब जी : सोहि पहुंचे साहिबन दरबार रे।।

640 मन भाव दे भरमावता प्यारो, काम भौग डरजावें रे।
ध्यान में हर पल बाधा बने, आशा तृष्णा का साथ छूट जावे रे।
साहिब जी : आशा तृष्णा का साथ छूट जावे रे।।

641 पल पल नर कल और कल में खोया हुआ, आशा तृष्णा किया बे हाल रे।
जिन जिन ''वे नाम'' सब्द को ध्याया प्यारो, प्रेम भक्ति लिया उस पार रे।
साहिब जी : प्रेम भक्ति लिया उस पार रे ।।

642 प्रेम भक्ति निष्कामी करे प्यारो, पाप पुण्य में भद गया रे।
सहज अवस्था को पा लिया प्यारो, सहज ने सहज बनाया रे।
साहिब जी : सहज ने सहज बनाया रे।।

643 ''वे नाम'' सत्यपुरूष का प्रेम रूप प्यारो, प्रेम भक्ति में खोया रहता रे।
प्रेम भक्ति बिन कुछ भाता नहीं, वे ही स्वांस स्वांस में रहता रे।
साहिब जी : वे ही स्वांस स्वांस में रहता रे।।

644 बिनु सत्संग ना सतगुरू दर्शन, नहीं ऊपझे प्रेम भक्ति प्यास।
मोह मान गये बिनु प्यारो, कैसे उठे सत्त प्रेम भक्ति प्यास।
साहिब जी : कैसे उठे सत्त प्रेम भक्ति प्यास।।

645 संत चरणों की सेवा बिना, नहीं उठे प्रेम प्रीति अनुराग।
मूंड मुंडाये घर गृहस्थी त्यागी, नहीं उपझे प्रेम भक्ति अनुराग।
साहिब जी : नहीं उपझे प्रेम भक्ति अनुराग।।

646 जैसे निर्मल पावन पवन प्यारो, पाई कुसंग सुसंग।
सत्संग से कुबास सुबास प्यारो, संतन दर्शन साहिबन संग।
साहिब जी : संतन दर्शन साहिबन संग।।

647 निष्काम भाव से सेवा जब, भेद पाप पुण्य खो जाई।
''सार नाम'' सब्द जब दात संग में, निजघर का पूर्ण भेद पा जाई।
साहिब जी : निजघर का पूर्ण भेद पा जाई।।

648 परम सत्य सब में स्थित होकर भी प्यारो, सब्द से दूरी बनाये रहता है।
केवल प्रेम से पकड़ा जाता प्यारो, सुरति संग एक हो जाता है।
साहिब जी : सुरति संग एक हो जाता है।।

649 सतगुरू के दर्शन की प्यासी अखियां, सुरति निरति करी कुर्बान है।
भेंट क्या दूं तेरे चरणों पर, चरणों में रहने की प्यास है।
साहिब जी : चरणों में रहने की प्यास है।।

650 वियोग में तेरे प्यारे, सहे अति के दुख हैं रे।
तेरा प्रेम ही एक सहारा प्यारो, सब कुछ खोया निज उस का रे।
साहिब जी : सब कुछ खोया निज उस का रे।।

651 नहीं कुछ अब है पास मेरे, सुद्ध बुद्ध सब अपनी खोई रे।
नौं द्वार सब बंद पड़े हैं, आया दसवें द्वार पर रे।
साहिब जी : दीदार करने साहिबन के रे।।

652 'वे नाम' का घर दूर है, जैसे सुरति ध्यान।
''वे नाम'' सब्द की दात से, पावे पूर्ण ज्ञान।
साहिब जी : पावे पूर्ण ज्ञान।।

653 'वे नाम' का घर दूर है, वह है अमरपुर धाम।
विहंगम चाल 'वे नाम' सूं, ले चले निजधाम।
साहिब जी : ले चले निजधाम।।

654 कामी क्रौधी बहुते मिले, प्रेम मिला ना एक।
प्रेमी को प्रेमी मिले, भक्ति से दोनों एक।
साहिब जी : भक्ति से दोनों एक।।

655 जानों सीप समुन्द्र की, खारा जल नहीं देत।
पानी पीती स्वाति का, शोभा सागर देत।
साहिब जी : शोभा सागर देत।।

656 साहिब सतगुरू के मेल से, उपझे प्रेम भक्ति एक संग।
दोनों एक रूप तूं जान ले, प्रणाम करो एक संग।
साहिब जी :जो आगे कर संग।।

657 पूर्ण सतगुरू सो जानिये, निज सत्यपुरूष सूं दात हो पाई।
उन के चरण कमलों में, सुरति दी पछाई।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष दात पा जाई।।

658 मिलने में विलम्भ ना कीजिये, प्रेम की डौर जग आई।
''वे नाम'' दात को पा कर, प्रेम भक्ति की जोत जग जाई।
साहिब जी : प्रेम भक्ति की जोत जग जाई।।

659 तीन लोक के उपर परमधाम है, कोई ''वे नाम'' सा संत ही जाने भेद।
हमरी कही कोई प्यारा माने, कबीर साहिब बाद दूसरा लाया भेद।
साहिब जी : साहिबन प्यार जग आया भेद।।

660 ''वे नाम'' सब्द सत्यपुरूष ही जानो, महां चेतन सुरति महांसागर जान।
निर्गुण सगुर्ण भक्ति से उपर प्यारो, सीमां रहित महांसागर जान।
साहिब जी : जो चीन्हें उस पार ले जान।।

661 सब घट साहिब जोत है, खाली घट एक ना जान।
बलिहारी उस घट की, जिसमें ''वे नाम'' सब्द पाई महान।
साहिब जी : प्रेम प्यास जगये महान।।

662 सुरति से पत्तियां लिखुं, सतगुरू जी हो आये उस देश।
सुरति में नयन में अंदर के कानों में, हर पल पाओ प्यारा संदेश।
साहिब जी : सुरति महांचेतन सुरति का एको देश।।

663 बिन सुरति सब जग अंधा, सुरति को जन्म जन्मांतरों का लेखा याद रे।
स्वपन में जो होता याद है, अंतःकरण सब काम करता रे।
साहिब जी : जागने पर प्यारो ब्रेन निकाल देता रे।।

664 सुरति निरति दिव्य दृष्टि् प्यारो, सतगुरू सुरति सूं सुरति चेतन जान।
मन माया धुल गई प्यारो, कोई गल्ति होना अब मत जान रे।
साहिब जी :सुरति चेतन करे काम महान रे।।

665 पांच शब्द से आगे प्यारो, भेद सत्युपुरूष का न्यारो रे।
जाने कोई सतगुरू का प्यारो, सत प्रेम आनंद का वासी रे।
साहिब जी : सत प्रेम आनंद का वासी रे।।

666 सिद्ध साध व्रिदवादि भी प्यारो, पांच शब्द में अटके जान रे।
मन मान के चक्र में प्यारो, जन्म मरण में अटके जान रे।
साहिब जी : जन्म मरा छूटा मत जान रे।।

667 सुश्मिना का भेद 'वे नाम' के पासा, पावेगा कोई साधक प्यारा रे।
''वे नाम'' सब्द की दात बिना, कोई ना जानो पार रे।
साहिब जी : आओ चलें उस पार रे।।

668 सुरति कमल सतगुरू का देश, पूर्ण मोक्ष का द्वार रे।
उल्टा जाप जब होता प्यारो, पूर्ण मोक्ष उस पार रे।
साहिब जी : जीवित मरना ही जात रे।।

669 साहिब हमारा पुहूप वास से पातला, वायु से उतावला जान रे।
जल से उतावला जान प्यारो, 'वे नाम' में वासा जान रे।
साहिब जी : पल पल झलक साहिबन जान रे।।

670 औंकार का तहां वास नांहि प्यारो, नहीं मन मान पसारा रे।
सत्यपुरूष सब परम हंसों का प्यारा, अनहद शब्दों से पारा रे।
साहिब जी : ऐसा देश हमारा रे।।

671 ईंगला विनशे पिंगला विनशे, चेतन होत सुष्मिन नाड़ी रे।
सुरति कमल में ताड़ी लागी, निजघर की लगती उडारी रे।
साहिब जी : हंसा सुरति साहिबन संग मारे उडारी रे।।

672 सुरति निरति घट घट समाई प्यारो, जैसे कस्तूरी मृग कुण्डल में जान।
ऐसे स्वांस स्वांस में प्राण बसें, सोये की कैसे होत पहचान रे जान।
साहिब जी : निजघन की कर पहचान।।

673 साहिब चित्तवत हैं हर हंसा को प्यारो, तूं पल पल चितवत संसार रे।
कहें 'वे नाम' कैसे निबे, तोहि मोहि बिच सच्चा प्यार रे।
साहिब जी : भक्ति भेद का सच्चा सार रे।।

फ फरीदा काले भैढे कपड़े, काला भैढ़ा वेसु।
गुनाहि मारेयां मैं फिरा, लोक कहें दरवेसु।
साहिब जी : दर दर भटके दरवेसु।।

674 साहिब चित्तवत हर हंसा को, तूं पल पल चित्तवत संसार।
कहें 'वे नाम' कैसे निभे, तोहि मोहि विच प्यार।
साहिब जी : बिन सब्द ना उभरे सांचो प्यार।।

675 सुरति निरति घट घट समाई है, जैसे कस्तूरी मृग कुण्डल में जान।
ऐसे स्वांस स्वांस में प्राण हैं, सतगुरू सूं होत पहचान।
साहिब जी : सतगुरू करावें जीव निज पहचान।।

676 ईंगला विनसे पिंगला विनसे, चेतन होत सुष्मिन नाड़ी जान।
सुरत कमल में ताड़ी लागी, पूर्ण सतगुरू की कर पहचान।
साहिब जी : सतगुरू शरणागत जानें सतगुरू महिमां महान।।

क पहूप वास से पातला, वायु से अति झीण।
जल से उतावला प्यारो, ''वे नाम'' सब्द में वासा जान।
साहिब जी : हर स्वांस स्वांस में जान।।

677 सुरत कमल लोक सतगुरू का, पूर्ण मोक्ष द्वार।
उल्टा जाप जब होत है, पूर्ण मोक्ष उस पार।
साहिब जी : सतगुरू सब्द सुरत कमल द्वार।।

678 ''वे नाम'' सब्द शिरोमणि, मिली अमरपुर जाये।
सत्यपुरूष दास पर कृपा करि, दी दात कुटिया में आये।
साहिब जी : दो बार कृपा की वर्षा की आये।।

679 निरंकार में पैठ कर, ''सार सब्द'' में सुरति लगायें।
सुरति निरति का मेल जब, हंसा रूप पा जाये।
साहिब जी : काल जाल मिट जाये।।

680 संतन सत्संग में गंगा बहे अग़म की, चरण में किया अस्नान।
अभी झरत भिगसत कंवल, सुरति चेतन भयी महान।
साहिब जी : सत्संग गंगा करे सुरति चेतन महान।।

681 मन दुविधा मन स्वभाव प्यारो, उसे मिटाना भी दुविधा जान।
सुरति को सतगुरू चेतन सुरति से, चेतन करना मिटावे मन मान।
साहिब जी : दुविधा को रहने देना ही सच्चा ध्यान।।

682 अंधेरे को रहने दो, दिया लो जलाये।
समर्पण में देरी कैसी प्यारो, बिन सोचे छलांग लगाये।
साहिब जी : सोच विचार सब खो जाये।।

683 जीवन असुरक्षा का दूसरा नाम प्यारो, कर इस सत्त की पहचान।
सत्त पहचान से अकांक्षा विलीन प्यारो, असुरक्षा से मुक्ति जान।
साहिब जी : ''सार सब्द'' ही सुरक्षा जान।।

क लाली मेरे लाल की, जित देखूं तित लाल।
लाली वेखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।
साहिब जी : मैं भी रंग गई लालो लाल।।

684 बिन सुरति ना जागे जग अंधरा, जन्म जन्मांत्तरों का लेखा याद।
स्वपन्न में जो होता याद है, जागने में मन भुलावे याद।
साहिब जी : मन ही देता हर याद।।

685 सुरति में पत्तियां लिखूं, 'वे नाम' जो हो आये उस देस।
नैनन में कानों में, आवे 'वे नाम' प्रेम संदेस।
साहिब जी : पल पल आवे प्रेम संदेस।।

686 सब घट साहिबन जोत है, खाली घट एक ना जान।
बलिहारी उस घट की, जा घट प्रेम महान।
साहिब जी : प्रेम भक्ति भेद महान।।

687 जो खाली सो भरा हुआ, जो भरा खाली जान।
निज की जब पहचान हो, दोनों में उसे ले जान।
साहिब जी : निजघर की कर पहचान।।

688 जब भरा था तब प्रेम नांहि, अब प्रेम है मैं नांहि।
मैं और तूं का होना गया, अब प्रेम बिन और कुछ नांहि।
साहिब जी : प्रेम बिन जग में कुछ नांहि।।

689 जब मैं है तूं भी संग है, मैं और तूं मन मान।
प्रेम में दोनों बह गये, अंदर बाहर प्रेम महांसागर जान।
साहिब जी : प्रेम भक्ति से भव पार ले जान।।

690 तुझ में प्रेम सुरति महांसागर भरा, मन मान तुच्छ समान।
सतगुरू से आपा जान ले, प्रेम भक्ति बिन धोखा जान।
साहिब जी : उसी को हर ओर ले जान।।

691 सतगुरू पाने में विलम्भ ना कीजिये, चेतन सुरति महांसागर जान।
प्रेम भक्ति में रहना स्वभाव तेरा, मन मान से लेन ना देन।
साहिब जी : अमृत पाना ही सच्चा दान।।

692 हम सब आये उस देस, जहां सत्यपुरूष का खेल।
दीपक झरे अग़म का, बिन बाती बिन तेल।
प्रेम भक्ति सागर अग़म का, जहां महांचेतन सुरति का खेल।
जगमग जगमग हो रहा, बिन चाँद सूरज का खेल।
साहिब जी : अग़म के दीपक का खेल।।

693 परमपुरूष नहीं निरंझन प्यारो, ये तीन लोक काल का देस।
उसी के आगे 'वे नाम' कहत है, वह सुरत सब्द का देस।
साहिब जी : सत्यगुरू सेव से वह देस।।

694 रक्षक का कोई भेद ना जाने, जो भक्षक तहां ध्यान लगाहि।
पूर्ण सत्तगुरू की बात ना माने, किस संग झूठी प्रीती लगाहि।
साहिब जी : काल के काल में ही रह जाहि।।

क पुरूष कहो तो पुरूष नांहि, पुरूष भया माया के मांहि।
शब्द कहो तो शब्दे नांहि, शब्द भया माया के छांहि।
साहिब जी : वह तो शब्द में समांहि।।

695 प्रेम प्यासी अखियां तेरी, काम प्यास से लेन ना देन।
सुरति सच्चे प्रेम भक्ति का अंश है, माया का प्रेम से लेन ना देन।
साहिब जी : माया का प्रेम से लेन ना देन।।

696 जो जागा सो जानेगा, सोया संग काल की धार।
सतगुरू बिन पहचान ना, महांचेतन सुरति की धार।
साहिब जी : हर सुरति उसी की धार।।

697 वियोग में साहिबन के, सहे अति दुख महान।
प्रेम भक्ति ही सहारा तेरा, सच्चे प्रेम पर छोड़ा अभिमान।
साहिब जी : सच्चे प्रेम पे छोड़ दो मन मान।।

698 'वे नाम' प्रेम घर अति दूर, निजधाम निजघर महान।
महां प्रेम सब्द की दात सूं, महां प्रेम सागर में समाना जान।
साहिब जी : निज को मिटाना ले तूं जान।।

699 'वे नाम' प्रेम घर अति दूर है, महां प्रेमी का घर निजधाम।
बिन ''वे नाम'' सब्द बात बने नांहि, मन मान मिटावे नाम।
साहिब जी : सत्तपुरूष का सांचा नाम।।

क राम जपुं नां रहीम जपुं, मुख से जपुं ना नाम।
सुरति सब्द में हर पल रहे, नाम में ही विश्राम।
साहिब जी : नाम में ही पाओ विश्राम।।

700 आत्म राम प्रेम भक्ति धारा है, सकल घट भीतर प्रेम।
सुरति प्रेम सब्द में डाल दे, गोते गोते में प्रेम।
साहिब जी : हर गोते में प्रेम।।

701 धरती गगन पवन और पानी, हर एक में सुरति प्रेम।
लेन देन में ग़म नांहि, भर अपनी सुरति में प्रेम।
साहिब जी : स्वांस स्वांस में सुरति प्रेम।।

702 प्रेम बिन बादल बरखा़ घनी, छेः ऋतु बारहां मास।
बाजे प्रेम नगारा गगन में, बाजे अनहद बारहां मास।
साहिब जी : प्रेम बसे हर स्वांस की स्वांस।।

703 प्रेम संदेश 'वे नाम' का, बाजत है दिन रैन।
काम क्रौध से संग छूटा नांहि, अंदर कैसा चैन।
साहिब जी : प्रेम भक्ति की टूटी तान।।

704 श्री कृष्ण का प्रेम भरमा गया, जग भटका ले जान।
नर अपने अपने ढंग से ले रहा, अपनी अपनी पहचान।
साहिब जी : हर एक विजाति में अटका जान।।

705 परमात्मां दूर से दूर, और पास से भी पास।
हर एक का अपना विश्वास ही, प्रेम जोत के पास।
साहिब जी : प्रेम भक्ति सूं साहिबन पास।।

706 दुख सुख विकार आदि से मुक्त जो, प्रेमी जान महान।
वह शांत चेतन परमात्मां सम, प्रेम भक्ति में लीन।
साहिब जी : प्रेम भक्ति में रहो लवलीन।।

707 संकल्प विकल्प क्रम जब, बुझे दीप समान शांत ले जान।
शुद्ध चेतन स्वरूप वह, संकल्प नष्ट से जग छूटा ले जान।
साहिब जी : संकल्प विकल्प काल समान।।

708 जग में सब्द बिन हर नर अंधा प्यारो, किसी सूं लेन ना देन।
निज की तो पहचान ना प्यारो, कैसे पावे सच्चा ज्ञान।
साहिब जी : जग झूठा ले जान।।

709 धर्म क्षेत्र पाखंड का शिकार प्यारो, मन माया का ना जाना भेद।
निज की तो पहचान है नहीं, भगवन का देता है भेद।
साहिब जी : झूठ छल कपट संग में निज का ना पाया भेद।।

710 वेदों का गुण गाता प्यारो, सत्य प्रेम आनंद का ना पाया भेद।
सुरति निरति की महिमां जानी ना, आत्म का देता भेद।
साहिब जी : सोयों को सोने का भेद।।

711 सतगुरू आज्ञा पर प्यारो, कोई कोई धरे ध्याण।
सत्य प्रेम जग खो गया है प्यारा, हर ओर झूठ का चलता भाग।
साहिब जी : मन मान का काम महान।।

712 जहां विचार वहीं स्थान ाण ना प्यारो, सतगुरू का संग महान।
साहिब जी : सुरति जागी बने सब काम।।

713 कंई जन्म पाये जग अंदर प्यारो, खिला खिलाया ना कोई फूल।
सच्चे घर का भूला पता प्यारो, निज की ना जानी भूल।
साहिब जी : स्वपनों में रहना ही सच्ची भूल।।

714 निज की पहचान मन मान मृत्यु प्यारो, तीन लोक में बिन सतगुरू बने ना काम।
अंधा नर जाने नांहि, सतगुरू बिन बने ना काम।
साहिब जी : जागे बिन बने ना काम।।

715 हर नर जग में भटक रहा प्यारो, निज सुरति की ना करता बात।
अनंत भक्तियों में नर उलझा हुआ प्यारो, सुरति निरति की ना करता बात।
साहिब जी : अंधों की अंधों से बात।।

716 'वे नाम' सतगुरू ''वे नाम'' सब्द देत प्यारो, जगाने जगत में आया।
ये मन मान का खेल प्यारो, इस पल में जगाने आया।
साहिब जी : 'वे नाम' जग को जगाने सतपुरूष सूं सच्ची दात है लाया।।

717 बात बात पर प्यारो, हर कार्य में झूठ का संग साथ।
यह मन मान का खेल प्यारो, इस पल का कर ले साथ।
साहिब जी : सतगुरू का सुरति सूं कर साथ।।

718 आत्म से मन को अलग करता प्यारो, सुरति निरति प्रकाशित ले जान।
पूर्ण सुरक्षा ''वे नाम'' सब्द में प्यारो, मन भी चेतन ले जान।
साहिब जी : सुरति का खेल महान।।

719 हंसा की चौंच में गुण प्यारो, पानी तजता दूध से लेता काम महान।
सतगुरू सुरति प्यारो, मान तजती सुरति निरति का संग महान।
साहिब जी : सतगुरू चरणन का पल पल करो ध्याण।।

720 सतगुरू की सुरति में गुण प्यारो, आत्म से मन तजना ले जान।
कौटि जन्मों के चक्र से प्यारो, ''वे नाम'' सब्द पार करता ले जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द की महिमां महान।।

721 मन सुरति की शक्ति से प्यारो, संचालित होता ले जान।
जिस की शक्ति से चेतन प्यारो, उसी को बंधन में डाला ले जान।
साहिब जी : यही है सुरति की मूल पहचान।।

722 सतगुरू 'वे नाम' संग प्यारो, मन मान का छूटा संग ले जान।
सुरति स्वरूप का भेद प्यारो, मान ना होने देता ले जान।
साहिब जी : मन माया से सब दुख ले जान।।

723 संकल्प का होना प्यारो, मन मान का सुरति के संग से पार।
मन की ऊर्जा सुरति प्यारो, सुरति ऊर्जा मन को पल पल करती पार।
साहिब जी : सुरति ऊर्जा पल में करती पार।।

724 सुरति अज्ञान में जान प्यारो, जाने तन मन को निज अंग महान।
सब कार्य तन के लिये प्यारो, निज कल्याण का कार्य छूटा ले जान।
साहिब जी : इस पल में रहना काम महान।।

छेः तन की महिमां

725 महां कारण तन अति निराला अदभुद शरीर, मन पूरी अनुभूति करता जान।
इस शरीर से ब्रह्मण्डों की यात्रायें प्यारो, तीसरे तिल में भृकुटि मध्य ले जान।
साहिब जी : ''वे हूं' का पूरा भेद मिलता ले जान।।

726 तन ही मन मन ही तन प्यारो, स्थूल सूक्ष्म इस मन के दो रूप।
स्थूल में कर्म ईन्द्रियां ही मन प्यारो, सूक्ष्म में मन बुद्धि चित्त रूप।
साहिब जी : सूक्ष्म मन बुद्धि चित्त अहम है रूप।।

727 जब साधक सुशुप्ति अवस्था में, तब मन अति चेतन ले जान।
तुरिया अवस्था जब बड़े प्यारो, सुरति अति चेतन ले जान।
साहिब जी : जाग्रत अवस्था में दोनों एक सी चेतना ले जान।।

728 तुरियातीत अवस्था में प्यारो, मन निष्क्रिय अवस्था में पहुंचा जान।
सुरति पच्चानवें प्रतिशत चेतन प्यारो, महांचेतन अवस्था ले जान।
साहिब जी : मन की टूटे कमान।।

729 देखना सुनना चलना प्यारो,इस तन से होता जान।
दहीं को मथ न्यारा प्यारो, मक्खन पाना ले जान।
साहिब जी : पूरा ब्रह्मण्ड मुट्ठी में बसा ले जान।।

730 ज्ञानदेहि में तपस्वी योगी ब्रह्मनिष्ठ प्यारो, अहं ब्रह्मस्मी कहलाता ले जान।
ब्रह्मां सृजन करने की शक्ति पाता, वसिष्ठ विश्वामित्र पास दात ले जान।
साहिब जी : राजा बलि महान ले जान।।

731 ज्ञानदेई से गठरी लाल है, फिर कैसे जन निज को कहलाता कंगाल।
हर नर अंदर ये सब प्यारो, फिर भी बनता फिरता कंगाल।
साहिब जी : सुन्न लोक लुकांतर देख सकता फिर भी जाने कंगाल।।

732 विज्ञानदेई अति तीव्रगामी तन प्यारो, महांसुन्न से पार कराता जान।
मन का संग कम प्यारो, सुरति अति चेतन ले जान।
साहिब जी : अति सूक्ष्म तन प्यारा ले जान।।

733 विज्ञानदेई मीन चाल से चलती प्यारो, चट्टानों को भी करती पार रे।
'वे नाम' साहिब जी सतगुरू प्यारो, छेः तन किये पार रे।
साहिब जी : 'वे नाम' ने किये छेः तन पार रे।।

734 कारण तन और महां तन पाने पर प्यारो, पपील चाल गति जान रे।
पहलो पहल धीमी प्यारो, एक लोक की ही सैल जान रे।
दिन दिन बड़ती चाल प्यारो, एक से दौ तीन लोकों की सैल महान रे।।
साहिब जी : देखना चलना सुनना देत पहचान रे।।

735 ज्ञानदेहि जब मिलती प्यारो, मीन चाल मिल जाती रे।
तीन से चार लोकों की सैल प्यारो, डेढ़ घंटे में हो जाती रे।
अति तीव्र गति से चलती सुरति, मन का कुछ भाग संग साथ रे।
साहिब जी : जहां रूकना रूक सकता जान रे।।

736 विज्ञानदेहि में अति तीव्र तन मिलता प्यारो, महांसुन्न लोकों की सैल महान रे।
मन का संग अति कम प्यारो, सुरति निन्यानवें प्रतिशत चेतन जान रे।
साहिब जी : अति सूक्ष्म तन की महिमां जान रे।।

737 महां शक्तियां आ जाती प्यारो, जब ज्ञानदेहि विज्ञानदेहि पा लेता रे।
जो कहे वह होता प्यारो, ईच्छा पूरी होती ले जान रे।
साहिब जी : मरन मारन सम्मोहन वषिकरण शक्तियां पाता जान रे।।

738 अंत वाहक शरीर प्राप्त होता प्यारो, जब कोई सतगुरू का हो जाता रे।
ध्यान में बैठना सच्चा काम प्यारो, इस तन से कहीं भी जाया जाता रे।
साहिब जी : पल में कहीं भी पहुंचने का काम करती ले जान रे।।

739 दुनियां अपने में खोई प्यारो, 'वे नाम' की एक ना माने रे।
सांच सदा दुख देत सोये को, झूठे कर्म में मन माने रे।
साहिब जी : किस से कहुं प्रेम भक्ति की मानो रे।।

क देह घेर का दण्ड है, भुगतत हैं सब कोये।
ज्ञानी भुगतत ज्ञान से, मूर्ख भुगतत रोये।
साहिब जी : सतगुंरू संग साध पार होये।।

740 तीन लोक से पार देस हमारा, पूर्ण चेतन देस सुरति धारा रे।
जो पाये ''वे नाम'' सब्द को, वोहि हंसा प्यारा रे।
साहिब जी : सतगुरू पार करावनहारा रे।।

काया अंदर सप्त चक्र महिमां

741 सुश्मिना उपर शब्द झंकार है, सरस्वती नदी भी बहती जान।
सुन्न मंडल से उठत है, सुरति निरति सूं होत पहचान।
साहिब जी : अब सुरति थिर भई जान।।

742 असुरक्षा डर की जननी, वचन शक्ति महान।
सुरक्षा की स्वीकृति ही, असुरक्षा से मुक्ति जान।
साहिब जी : चेताने वाली बात करते संत सुजान।।

743 सात चक्र तन में प्यारो, आठवां शीष उपर सुरत कमल ले जान।
पहला मूल दल कमल प्यारो, गुद्धा स्थान ले जान।
साहिब जी : यहां गणेश जी का वासा ले जान।।

744 स्वादिष्ठान दूसरा चक्र प्यारो, शीष्ण ईन्द्री पर ले जान।
ब्रह्मां सावित्री का वासा तहां, ब्रह्म लोक कहलाता ले जान।
साहिब जी : तहं से सृष्टि् उत्पति ले जान।।

745 मणिपुर चक्र नाभी स्थान पर, विष्णु लोक कहलाता ले जान।
यहीं से पालन पौषन जगत का हो रहा, विष्णु भगवान कर्ता ले जान।
साहिब जी : विष्णु भगवान जगत पालनहार जान।।

746 हृदय चक्र चौथा लोक ले जान, यहां शिव पार्वती वासा ले जान।
शिव मृत्यु के देवता कहलाते, देह तजने का चक्र ले जान।
साहिब जी : शिव मृत्यु के भगवान।।

747 विशुद्ध चक्र कण्ठ में, शक्ति लोक कहलाता ले जान।
कण्ठ में माता शक्ति का वास, सपन अवस्था में आत्म वासा ले जान।
साहिब जी : स्वपन अवस्था में आत्म वासा ले जान।।

748 छठा आज्ञा चक्र दौ नेत्रों के मध्य में, आत्म लोक कहलाता ले जान।
आत्म तहां स्वांस लेता प्यारो, सतगुरू का संग ले जान।
साहिब जी : आज्ञा चक्र में सतगुरू संग ले जान।।

749 सातवां सहस्त्रार सार चक्र प्यारो, त्रिकुटि उपर ले जान।
यहां चेतन ब्रह्म का वास है, यही निरंझन लोक ले जान।
साहिब जी : निरंझन लोक की महिमां महान।।

750 आठवां चक्र अष्टकवंल दल प्यारो, गंग यमुना घाट ले जान।
सुश्मिना से उपर द्वार प्यारो, खुला अजर किवाड़ा ले जान।
साहिब जी : आठ अटा की अटारी ले जान।।

751 सुरति निरति सैल करे नभ उपर, सुश्मिना नाड़ी टेड़ी ले जान।
सुरति सैल करे नभ उपर, सुरत कमल में पहुंची ले जान।
साहिब जी : सत्यपुरूष के पाओ दर्श महान।।

752 परम सुरतिवान मेरे साहिबा, वो ही मुझ में बैठ लिख रहे।
मुझे तो कुछ आता जाता नांहि, पग़ पग़ पे चलना सिखा रहे।
साहिब जी : पढ़ पढ़ साहिबन संग सब खो रहे।।

753 किरकल वायु वासा नासिका में, सुश्मिना की ओर चले।
देवदत्त का वासा पलकों में, सुश्मिना की ओर चले।
साहिब जी : तन से ना काम चले।।

754 दसों वायुओं की शक्ति से प्यारो, सुश्मिना का खुलना ले जान।
उपर मन नीचे कफ प्यारो, सुश्मिना का दसों वायुओं से खुलना ले जान।
साहिब जी : सुश्मिना द्वार खुलना महान ले जान।।

755 मन पवन के धक्के से प्यारो, कफ़ गल जाती महान।
पूर्ण मरना हो गया, सुरति निरति दोनों स्थिर ले जान।
साहिब जी : उस पल को कठिन पाना ले जान।।

756 सुरति आनंदमयी प्यारो, मन के कारण विच्छेदित्त ले जान।
सुरति लग जाये जहां, वहीं पे पहुंचाये ले जान।
साहिब जी : ध्यान की महिमां जान।।

757 निजघर की पहचान होते हुऐ, निज को अज्ञानी ले जान।
ताण होते हुऐ प्यारो, निज को निर्ताण ले जान।
कुछ ना होते हुऐ प्यारो, निज को बांट देना ले जान।
साहिब जी : संतन की सच्ची पहचान ले जान।।

758 अपना किया भुगते नर जग में, किसी सूं लेन ना देन रे।
जे सतगुरू पूर्ण पाया नांहि, हर पल काल का संग साथ रे।
साहिब जी : जो बीजे आये हाथ रे।।

759 अकाल मृत्यु जो मरे, निष्चय बने प्रेत।
काल का पल पल संग किया, पानी कहां जहां रेत।
साहिब जी : ईक से दस हज़ार वर्ष आयु जानो प्रेत।।

760 ''वे नाम'' सब्द धन पायो नाहिं, झूठ का हर पल साथ।
जग से जाता खाली वह, कुछ ना आता हाथ।
साहिब जी : कुछ भी ना जाता साथ।।

761 तृष्णा लोभ मोह से पार जो, ''वे नाम'' सब्द दात संग साथ रे।
उसका काल क्या ले जावे, जो बैठा 'वे नाम' जहाज रे।
साहिब जी : आओ चलें साहिबन दरबार रे।।

762 निज को भूला सब संसार है, निज प्यारे प्रेमी को भूला जान।
बिन पूर्ण संत बात बने नांहि, उसी सूं प्रकट होता जान।
साहिब जी : सतगुरू प्रेम प्रीत की खान।।

763 औंकार का तहां वास ना, नांहि मन मान पसार।
सत्यपुरूष सब हंसों का पिता, अनहद शब्दों से पार।
साहिब जी : एसो हंसा देश हमार।।

764 सुष्मिन भेद 'वे नाम' सूं, पावे कोई सच्चा साध।
''वे नाम'' सब्द की दात बिन, कोई ना उतरे उस पार।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द लगावे पार।।

765 सिद्ध साध त्रिदेव भी, पंच शब्द में अटके जान।
मन मान के चक्कर में पड़े, जन्म मरन में अटके जान।
साहिब जी : आन जान में अटके जान।।

766 पंच शब्द से आगे, अमर सत्यपुरूष का देस।
जाने कोई सच्चा साध ही, पूर्ण मोक्ष का देस।
साहिब जी : अमरपुर साहिबन का देस।।

767 सतगुरू से दिव्य दृष्टि् से पहचान कर, जब सब्द सतगुरू संग साथ।
मन माया धुंध हट गई, पल में सतगुरू सुरति साथ।
साहिब जी : महां चेतन सुरति संग साथ।।

768 श्रवण द्वार से प्राण जब जाई, तत्काल प्रेत देह पा जाई।
एक हज़ार से कम आयु नहीं प्यारो, अति दुख सहता भाई।
साहिब जी : प्रेम योनि भयंकर कष्ट सताई।।

769 नेत्र द्वार से जब प्राण निकासा, आत्मा मक्खी मच्छर आदि तन को पाई।
आखें खुली की खुली रहती, कर्मण अनुसार देहि पाई।
साहिब जी : पल पल मृत्यु भय सताई।।

770 स्वांस द्वार से प्राण जब जाई, अण्डज खान में वासा पाई।
उड़ने वाले पक्षी योनि में प्यारो, आत्म जा समाई।।
साहिब जी : भर पेट भौजन ना पाई।।

771 मुख द्वार से प्राण निकासा, अन्न खानी में वासा पाई।
सुसरी सुण्डी आदि प्यारो, मुख खुले का खुला रह जाई।
साहिब जी : कीड़े का जीवन अल्प है भाई।।

772 शीष्ण द्वार से जीव जब जाई, जलचर योनि में जा प्रकटाई।
मछली मैंढक कछुआ आदि तन पाई, मरते समय मूत्र बाहर आ जाई।
साहिब जी : जलचर जीव जल में जा समाई।।

773 मल द्वार से प्राण निकासा, नर्क लोक में पासा पाई।
मृतक के गुद्या स्थान से प्यारो, मल बाहर आ जाई।
साहिब जी : नर्क लौक यम अति सताई।।

774 जग में कुछ पाने बनने में प्यारो, अति समय लग जाई।
सतगुरू अपनी सुरति से प्यारो, शक्तियां साधक में सुरति से भर जाई।
साहिब जी : सतगुरू शरणी भव पार लगाई।।

775 जब तक मन था प्यारो, सतगुरू सूं कौसों दूर।
''वे नाम'' दात से साहिबन वासा, मन गया कौसों दूर।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सूं मन कौसों दूर।।

776 प्रेम गली अति सांकरी, जा में सुरति निरति ना समाई।
सुरति निरति सम सुश्मिना खुले, प्रेम जोत जग जाई।
साहिब जी : सुश्मिना खुले भीतर प्रकाश प्रकटाई।।

777 'वे नाम' बिन आत्म शुद्ध ना होई प्यारो, कौटिन यत्न करे जे कोई।
जो वस्तु 'वे नाम' ने पाई प्यारो, जग में किसी के पास ना होई।
साहिब जी : ''वे नाम'' दात भव पार कराई।।

778 ''वे नाम'' दात पाने से प्यारो, मन से सुरति छूट जाई।
छूटता संसार का आकर्षण प्यारो, सुरति चेतन हो जाई।
साहिब जी : मन छूटे तो आत्म हंसा हो जाई।।

779 बिन आंखों के अंधा मत जान प्यारे, अंदर के दौष अंधा करते ले जान।
यह काम बुद्धि का नहीं प्यारो, सुरति चेतन से बनें काम ले जान।
साहिब जी : सब्द सिमरन से सुरति चेतन ले जान।।

780 चेतन सुरति से देख प्यारे, चश्मे दिल से खेल महान।
अंदर मन के संग प्यारो, कल और कल शत्रु देख महान।
साहिब जी : जागे तो मिटे भय अज्ञान।।

781 जग से जब जाऊंगा प्यारो, फिर मत रोना सत्य के लिये।
सत्य प्रेम आनंद संग लाया प्यारो, तुम सब को देने के लिये।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू रहते पालो सब्द दात मोक्ष के लिये।।

782 हर नर नार को लूट रहा प्यारो, माया मन मान ले जान।
इस जग में हंसा प्यारो, पुराने वस्त्र त्याग नवीन धारण करता ले जान।
साहिब जी : जन्म मरन चक्कर में आत्म फंसा जान।।

783 देह घेर का दण्ड प्यारो, भुगतत हैं सब कोये।
ज्ञानी मूर्ख दोनों भुगतते, बिन ''वे नाम'' दात बच्चे ना कोये।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सुरति मुक्त कराये।।

784 काक मुशण्डी ने प्यारो, गरूड़ देव को दिया आत्म ज्ञान।
काक मुशण्डी आत्म ज्ञान के विशषज्ञ, प्रशणों के उत्तर दिये महान।
साहिब जी : सुरति जागते ही जानो आत्म महान।।

785 गुरू अपमान से काग़ा का तन पायो, मन मान ने मारा हर जीव।
सर को झुकाना आया नहीं, मन मान से हारा हर जीव।
साहिब जी : समर्पण प्रेम से पाओ प्यारा प्रीतम पीव।।

786 शिव मंदिर में यह सब घटा प्यारो, शिवजी के शाप से यह रूप।
सत्य स्थान पर गुरू निंदा प्यारो, काग का दिया यह रूप।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सुरति काग़ा धारे हंसा रूप।।

787 गुरू का ध्याण प्यारो, पहुंचा उनके पास।
शिवजी का शाप कैसे मिटे, काग़ के रूप में आत्म ज्ञान तेरे पास।
साहिब जी : भोले नाथ भीतर भी क्रौध का वास।।

काक भुशुण्डी का ज्ञान :

788 सुनो तात यह अकथ कहानी, समझ बने ना जाये बखानी।
ईश्वर (सत्यपुरूष) अंश, जीव (सुरति) अविनाषी।
चेतन अमल सहज सुखरासी, सो माया वश भयो गुसाईं।
बंधयो जीव मरकट की नाई
सब में आत्म (सुरति) जोत प्यारो, नांहि कोई और हंसा ही जानो।

आत्म

789 आत्म चेतन है आता सजीव प्यारो
तन जड़ जान ले प्यारे, आत्म जड़ मत जानो।
ता पर यह अमल प्यारो, मल से पार इसे जानो।
गंदगी से रहित हंसा कहलाती, तन गंदा जिस में यह रहती।
आत्म अत्यंत निर्मल जानो, प्यारो सुरति ही जानो।
गंदगी से परे सहज प्यारो, आत्म निर्मल जानो।
छल कपट आशा तृष्णा कल काल से, पार इसे जानो।
मन तो छल कपट की धारा, आत्म का इन से दूर किनारा।

हंसा

790 हंस आत्मां नितांत सहज सुरति प्यारो, आनंद से भरी ले जान।
काया से भ्रमित हो रहा आत्म, पशु पक्षी जीव जंत में एको सुरति जान।
साहिब जी : हंसा सुरति से सारा जग चलायेमान ले जान।।

भावार्थ :– ''आत्म ज्ञान बिना नर भटके, क्या अंदर क्या बाहिर''
आत्मा – मेरा, मेरा
व्यक्ति – व्यक्तित्व – बुद्धि चित्त अहंकार
माया – शरीर मन – व्यक्तित्व है

791 जहां से सब हंसा आये प्यारो, अजर अमर साहिबन का देश।
पानी पवन धरती तहां ना, आकाश सूर्य चांद तारों के बिन देश।
साहिब जी : 'वे नाम' हो आया साहिबन सुरति देश।।

792 रात दिन बिन देश हमारा, बिन आदि जोति गौरी गणेश बिन वे देश।
ब्रह्मां विष्णु महेश तहां ना, जोगी जंगम मुणि नांहि दरवेस।
साहिब जी : देवी देवों को सतलोक नाहिं प्रवेश।।

793 'वे नाम' ले आये, सच्चा संदेश उस घर सूं।
''वे नाम'' सब्द गहि चलो प्यारो, पल पल पुकार साहिबन सूं।
साहिब जी : चलो निजघर पा साहिबन दात 'वे नाम' सूं।।

794 कोई मूल सब्द पकड़े नांहि, शाखायें पत्ते टहनियां पकड़ी ले जान।
सार सुरत सब्द जो कोई गहे प्यारो, सच्चे घर की होत पहचान।
साहिब जी : बिन सब्दे नर भूला निज पहचान।।

795 'वे नाम' ज्ञान हैं दे रहे, सुनो गाओ सच्चा संदेश।
नीचे त्रिलोकि विस्तार प्यारो, उपर सतगुरू देश।
साहिब जी : ''वे नाम'' दात सूं पाओ साहिबन देश।।

796 सत सुरत नाम प्यारो, सतगुरू का सुख अमरलोक निजधाम।
सुख राशी अमृत नाम प्यारो, अभय अमर वाणी बताती निजधाम।
साहिब जी : 'वे नाम' वाणी अमरलोक गुणगान।।

797 गुप्त रूप से जाना और आना प्यारो, मुक्त करने का करता काम।
सतपुरूष को जो जानसी, तिसका सदगुरू 'वे नाम' है नाम।
साहिब जी : सतपुरूष जाननहारा सतगुरू 'वे नाम'।।

798 कौटि नाम संसार में, भटकाने का करते काम।
''वे नाम'' सब्द जो गुप्त प्यारो, निजघर ले जाने का करता काम।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सुरति निःसब्द निष्काम।।

799 'वे नाम' देते संदेश सतलोक का, कोई कोई माने उपदेश।
नाम भेद जो भी जानही प्यारो, सोहि पहुंचे निज देश।
साहिब जी : 'वे नाम' वाणी में सत सुरति संदेश।।

800 पल पल माया हारे 'वे नाम' सूं, न्यारा ज्ञान देत जगत को आन।
निर्गुण ज्ञान से आगे प्यारो, सहज से सहज होने का ज्ञान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सुरति सहज अवस्था ले जान।।

801 सतगुरू को पाना ही प्यारो, अनामी पुरूष का पाना ले जान।
सब सुख सहजे सहज से पाईये, 'वे नाम' की संगति आन।
साहिब जी : 'वे नाम' शरणागत साध सहज ही ले जान।।

802 सतगुरू भक्ति से प्यारो, वरदान सर्व सिद्धियां पाना ले जान।
और कोई भक्ति प्यारो, सरल सुगम फलदायक मत ले जान।
साहिब जी : सहज भक्ति से सुरति चेतन होती ले जान।।

803 चित से चिंता और संताप प्यारो, सतगुरू मिटाने का करते काम।
अकाल मृत्यु भय हारने का प्यारो, जगत में महान बनाने का करते काम।
जगत में संत की महिमां प्यारो, पहचान की आंख सुरति से नहीं काम।।

804 सतगुरू को तन मत जानो, तन में सहज सतगुरू ले जान।
सतगुरू परम सुरति में लीन प्यारो, जग को सच्ची राह चलते ले जान।
साहिब जी : सतगुरू परमसुरति धारा ले जान।।

805 संतमत में साधक सतगुरू पर प्यारो, ध्याण केंद्र करता ले जान।
सतगुरू चेतन सुरति से साधक प्यारो, परम सुरतिवाण होत ले जान।
साहिब जी : सतगुरू सुरति में साहिबन समाये तूं जान।।

806 संतन शक्ति का वर्णन नहीं प्यारो, पर उनकी पहचान कौन करे।
वस्त्र से बालों से पहचान कैसे, चेतन सुरति की महिमां कौन करे।
साहिब जी : जागा जीव ही चेतन सुरति पहचान करे।।

807 छिन एक ध्याण विदेहि समाई, ताकि महिमां कौन बताई।
सार नाम सुरति स्वांसा में प्यारो, तीन लोक से पार हो जाई।
साहिब जी : सुरति से पल छिन में ध्यान लग पार हो जाई।।

808 पूर्ण सतगुरू 'वे नाम' ही प्यारो, जन्म मरण से पार करावे।
मन मान से कुछ काम ना प्यारो, सुरत कमल से निज घर ले जावे।
साहिब जी : 'वे नाम' शरणागत ही निजघर को जावे।।

809 ''वे नाम'' सब्द ही सत्यपुरूष जानिये, महां चेतन सुरति धार।
निर्गुण सर्गुण भक्ति से पार है, सीमा रहित महां चेतन धार।
साहिब जी : ''वे नाम'' धारा मन माया पार।।

क सुख में सिमरण ना किया, दुख में करता याद।
कहे साहिब तां दास की, कौन सुने फरियाद।
साहिब जी : बिन प्रेम कोई कैसे सुने फरियाद।।

810 तीन लोक से आगे की, सतगुरू 'वे नाम' देत पुकार।
हमरी कही जो मान ले, तीन लोक से उतरे पार।
साहिब जी : आओ चलें उस पार।।

द ईष्ट स्वांगि बहु मिले, हिरसी मिले अनंत।
दरिया ऐसा ना मिला, राम रत्ता कोई संत।
साहिब जी : साध वही जो राम रत्ता कोई संत।।

द बाहर घाव दिखे नांहि, भीतर से चकनाचूर।
दरिया बाण गुरूदेव का, कोई झेले सूर सधीर।
साहिब जी : कोई साधक झेले सूर सधीर।।

द दरिया बाण गुरूदेव का, कोई झेले सूर सधीर।
लागत ही व्यापे सही, रोम रोम में पीर।
साहिब जी : प्रेम प्रीत ही मिटावे पीर।।

811 प्रेम चोट ''वे नाम'' सब्द की, सहे साध महान।
लागत ही घाव करे, सतगुरू की चोट महान।
साहिब जी : सतगुरू की चोट महान।।

812 बिरहन भांवरी पी के वियोग में, ढूढंन अंदर बाहर जाये।
खाली की खाली रहे, पुकार पे पुकार लगाये।
साहिब जी : पी का बिछोड़ा खाये।।

813 विरहन सुरति विरह विराग में, पल पल घटे लहु और मास।
अपने पिया के कारणे, स्वांस स्वांस में आस।
साहिब जी : हर सिसकी में आस।।

814 'वे नाम' साहिब कृपा करि, विरह में स्वांस की स्वांस।
विरह की प्यास बड़ती गई, सतगुरू बिन कौन बजावे प्यास।
साहिब जी : सतगुरू आन बुझावे प्यास।।

815 विरह व्यापी हृदय में, स्वांस स्वांस संग साथ।
नाम धन पाया नांहि, सुरति संग छूटा साथ।
साहिब जी : बिन सुरति छूटा संग साथ।।

816 'वे नाम' आत्म मल भरी, ''वे नाम'' सब्द से निर्मल होये।
साबुन लगावे 'वे नाम' प्रेम का, सुरत सिला पर निर्मल होये।
साहिब जी : पूर्ण सतगुरू धोबी कहलाये।।

817 ''वे नाम'' सब्द स्वांस स्वांस ले, दूजा नांहि ध्याये।
''वे नाम'' सब्द ऐसे साध पर, प्रेम चोट काम कर जाये।
साहिब जी : प्रेम की चोट काम कर जाये।।

818 ''वे नाम'' सब्द सुरति रहे, सब धर्मों का मूल।
'वे नाम' केवल गुरू से, संशय मिटे ना सूल।
साहिब जी : सतगुरू मिटावे संशय और सूल।।

819 ''वे नाम'' सब्द सुमिरा नांहि, चौरासी छुट ना पाई।
चौरासी के जाल से, मन मान का संग ना जाई।
साहिब जी : सतगुरू आन चौरासी छुड़ाई।।

820 चौरासी भवजल अगम का, संशय मोह की बाढ़।
सतगुरू की प्रेम डौर पकड़ लो, जो लावे प्रेम भक्ति की बाढ़।
साहिब जी : सतगुरू प्रेम भक्ति की बाढ़।।

821 ''वे नाम'' सब्द से सूरज उगया, अंदर के नैन खोलो भरपूर।
मन माया अंधे देखा नांहि, उससे सतगुरू कौसों दूर।
साहिब जी : बिन प्रेम सतगुरू कौसों दूर।।

822 ''वे नाम'' सब्द से सूरज उगया, अंदर के नैन खुले भरपूर।
तजि मन मान अंधा नांहि, अब सतपुरूष नांहि दूर।
साहिब जी : सतगुरू दर्श सतपुरूष हुजूर।।

823 साहिब सुरति दात शिरोमणि, मिली सतपुरूष सूं जाई।
आज तक कोई कोई पहुंचा, जहां महांचेतन सागर पाई।
साहिब जी : सतगुरू सुरति महांचेतन सागर समाई।।

क सब की गठरि लाल है, कोई नहीं कंगाल।
गिरह खोलन नहीं जानते, तोहि भयो कंगाल।
साहिब जी : सतगुरू सुरति करे मालामाल।।

824 सुरति दात शिरोमणि, मिली सतपुरूष सूं जाई।
किसी किसी को दात और दर्शन मिले, महांचेतन सागर कहलाई।
साहिब जी : प्रेम भक्ति संग जाई।।

825 जग ने महांचेतन सत्ता को खो दिया, जब झूठे संत जग आये।
''वे नाम'' सब्द से सत्ता जाग उठी, 'वे नाम' जब साहिबन दरस पाये।
साहिब जी : 'वे नाम' ने साहिबन दरस पाये।।

826 धरति गगन पवन जल नांहि, बिन बादल बरसात।
सूर्य नांहि चंदा नांहि, उगया दिन और रात।
साहिब जी : यह है अमरपुर देस की बात।।

827 जहां तेज पुण्झ रवि अग्नि बिन, नांहि उष्म ना सीत।
बिन धरति सब चल रहे, बिन मात और पीत।
साहिब जी : तहां साहिब ही सच्चे पीत।।

828 तज विकार आकार सब, सतपुरूष संग महान।
सुरति में महांचेतन सुरति धार कर, बनें परमहंस महान।
साहिब जी : अमरपुर देस अति महान।।

829 जग में कथनी में गुजरन करे, अनुभव झूठी गठरि जान।
परम जोत नहीं परिचय भाई, धुऐं से क्या लागे ध्यान।
साहिब जी : सार सब्द में सुरति ध्यान।।

830 सुरति को महांचेतन सुरति से, मथ न्यारा किया जान।
पलट कर फिर मन माया में, उसे समाया मत जान।
साहिब जी : निजघर का वासी उसे मत जान।।

831 मूल नाम ही 'वे नाम' प्यारो, ''वे नाम'' सब्द की करो बड़ाई।
युग युग हम संसार में प्यारो, मूल नाम से गयो मुक्ताई।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द में आप साहिब समाई।।

832 बिन 'वे नाम' एक ना पहुंचे, कहे सुने कुछ काज ना होई।
सत्य और सत्य 'वे नाम' में प्यारो, बिन पाये कोई पार ना होई।
साहिब जी : बिन जागे बात बने ना कोई।।

833 कहें 'वे नाम' जगत में भाई, जो पावे ''वे नाम'' सब्द पार हो जाई।
जग में रह कर प्यारो, सोयों को जगावे मेरे भाई।
साहिब जी : सत्य को सत्य से पार हो जाई।।

834 बेचून खुदा ही प्यारो, निरंकार महान ले जान।
आकाशी पिता भी प्यारो, मन रूपी पिता ले जान।
साहिब जी : वेदों से भी निरंकार का भेद ले जान।।

835 'वे नाम' सुरति धारा पंथ, किसी की निंदा करता मत जान।
जग में सभी प्यारो, किसी ना किसी की भक्ति करते ले जान।
साहिब जी : निज की पहचान से होत सब काम।।

836 सत्य धर्म भक्ति उपासना प्यारो, सदकर्म का ज्ञान सतगुरू सूं जान।
उनके अनुभव का लाभ प्यारो, बिन भेद भाव के ले जान।
साहिब जी : सतगुरू कृपा सूं ही सतभक्ति पनपे ले जान।।

837 वेद कर्म उपासना का प्यारो, धर्म व्योवहार का ज्ञान देते ले जान।
सच्ची भक्ति से दूर प्यारो, साहिबन अंश को किया ले जान।
साहिब जी : माया जाल की पूजा ले जान।।

838 निज में ही सत्य को प्यारो, पाना महान काम ले जान।
एक सतपुरूष को प्यारो, पाना ही सच्चा काम ले जान।
साहिब जी : सतपुरूष को सतगुरू से पाना ही काम ले जान।।

839 जा का सतगुरू अंधा प्यारो, चेला भी अंधा ले जान।
अंधे को अंधा मिला प्यारो, दोनों कूप में पड़े ले जान।
साहिब जी : ज्ञानी गुरूओं से बचना काम महान।।

840 थोथा ज्ञान किस काम का प्यारो, वेदों के ज्ञान से पार मत जान।
हम वासी उस देश के प्यारो, सब सुरति से काम करते ले जान।
साहिब जी : पंडित शास्त्रियों से बने ना काम ले जान।।

841 पुस्तकें रटने पढ़ने से प्यारो, मन माया का खेल ले जान।
ऊंचे ऊंचे नाम देने से प्यारो, पार होता एक ना जान।
साहिब जी : सांसारिक ज्ञान से कोई पार हुआ मत जान।।

842 तीन लोक स्वामी मन रूप प्यारो, कालपुरूष पंच तत्वों में भटके ले जान।
हर नर असीम शक्तियों का प्यारो, मालिक महान ले जान।
साहिब जी : गहरी बेहोशी में हर जीवात्मां ले जान।।

843 मन बुद्धि चित्त अहंकार प्यारो, लोभ मोह वासना अहम प्रकटाती ले जान।
अमर देश के खेल को जानो, अमर दीपक जलता ले जान।
साहिब जी : अगम दीपक जलता बिन बाती बिन तेल जान।।

844 तीन लोक के स्वामी प्यारो, भेद ना देत अमरलोक महान।
गुरूवा लोक सांसारिक तत्वों के प्यारो, बने फिरते ले जान।
साहिब जी : सच्चे देश का भेद 'वे नाम' देते ले जान।।

845 हर जीव को मन ने प्यारो, गहरी बेहोशी में डाला ले जान।
सुरति अपनी चाल की प्यारो, भूल भेठि ले जान।
साहिब जी : बिन सब्द सुरति सोई ले जान।।

846 बिनु पग़ सुरति प्यारो, चले चारों ओर ले जान।
बिन काना सुने प्यारो, सुरति से सुरति ले जान।
साहिब जी : सुरति की महिमां महान।।

847 अन्न दाने का प्यारो, भौग ना करती ले जान।
अमरलोक का अमृत पीती, जब कभी सत्तपुरूष देते ले जान।
बिन मन वाणी प्यारो, सुरति से सुरति की वारता ले जान।
साहिब जी : तीन लोक से चौथे लोक में सुरति से हर काम ले जान।।

848 तन बिनु परस अनुभव प्यारो, सुरति से सुरति का भेद ले जान।
ज्ञान का चक्र भी प्यारो, तीन लोक से चौथे लोक पहुंचे ले जान।
सतगुरू के गुण प्यारो, सुरति अति तीव्र गति ले जान।
सतगुरू पल पल संदेश प्यारो, साहिबन सूं लेते देते ले जान।
साहिब जी : सुरति की महिमां जान महान।।

849 वास्तव में प्यारो, शाश्वत सत्य ही अमर ले जान।
सुरति का चिंतन प्यारो, ''वे नाम'' सब्द की दात से जान।
साहिब जी : सुरति का बोध ही सत्य का भेद ले जान।।

850 आत्म ज्ञान से प्यारो, पूर्ण मुक्ति संभव ले जान।
आत्म सुरति ही प्यारो, संसार उत्पति का मूल स्त्रोत महान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द पाना ही सत्य पाना महान।।

851 सत्य सब्द ''वे नाम'' सब्द प्यारो, इस को पाना ही निजघर पाना ले जान।
'वे नाम' ने प्यारो, उस सत्य प्रकाश का अनुभव किया।
साहिब जी : सुरति सब्द स्वांसा से जीवत मरना महान।।

852 सतगुरू आज्ञा पर सुरति धरो प्यारो, जैसे भुजंग की सुरति मणि में ले जान।
कहें 'वे नाम' साधकों को प्यारो, यहि सच्चे गुरू मुख की पहचान।
साहिब जी : आज्ञा का पालन ही साधक की पहचान।।

853 सतगुरू आज्ञा का उलंघन प्यारो, साधक भूल कर भी ना करे काम।
जो करे सुने सो काल प्यारो, यहि है सच्चा ज्ञान।
साहिब जी : हर पल धरो सतगुरू चरणन मे ध्याण।।

854 सतगुरू वचन अमृत समान प्यारो, सत्य असत्य सुरति में मत लिये।
कर्म भर्म सब मन से प्यारो, सतगुरू चेतन सुरति सूं सुरति एक कीजिये।
साहिब जी : मन माया का संग मत कीजिये।।

855 ईष्ट किसी को चाहिये नहीं, स्वार्थ पूर्ति की करते बात।
हनुमान जी से ताकत का पाना, लक्ष्मी से धन दौलत की बात।
साहिब जी : गणेश जी से कार्य सिद्धि की बात।।

856 मन बुद्धि चित्त अहंकार से प्यारो, जो भी करते कार्य महान।
विनाषकारी जान सब, सुख इन में मत जान।
साहिब जी : यह सब दुख का कारण जान।।

857 ''वे नाम'' सब्द सत्य प्रेम आनंद दात प्यारो, भृंगी मत कहलाई।
सब्द में सुरति वासा साहिबन का, काग हंस हो जाई।
साहिब जी : सब्द से सच्चा रूप पा जाई।।

858 सुरति उसको दीजिये प्यारो, चेतन सुरतिवान जो हो।
हिंदु मुस्लमान सुरतिवान प्यारो, भृंग मता की पहचान जिसे हो।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष का चाहवान कोई हो।।

859 'वे नाम' सतगुरू शब्द मत काटो प्यारो, जब तक तन में प्राण।
सुरति सतगुरू सब्द में प्यारो, सुरति की तार सूं जोड़ो प्राण।
साहिब जी : स्वपन अवस्था सुरति का दृष्टा पर ध्याण।।

860 कारण तन से स्वपन देखना प्यारो, भक्ति अवस्था का देत प्रमाण।
सुरति को सतगुरू आकार पर प्यारो, स्थिर करना काम महान।
साहिब जी : स्वपन दृष्टा पर लाना जान।।

861 मूर्ति पूजा से छुटकारा प्यारो, मूर्ति कैसे कर पाये बात।
एक वो बात करे ना प्यारो, तुम मन में रहते दिन रात।
मन माया का खेल खिलाती, सुरति से होत ना बात।
साहिब जी : सतगुरू बिन बने ना बात।।

862 सतगुरू साधक को चलाता, सिखाता प्यारो सहारा देता छुड़ाता ले जान।
काम क्रौध लोभ मोह से प्यारो, निज को छुड़ाना ले जान।
साहिब जी : निज को छुड़ाना काम महान ले जान।।

863 इस भवसागर में प्यारो, काल निरंझन महा प्रबल ले जान।
तृष्णा लोभ मोह माया प्यारो, मन माया अंग महान ले जान।
साहिब जी : सतगुरू के सत्य उपदेश सुरति में बिठाना ले जान।।

864 पुरूष प्रताप 'वे नाम' पास प्यारो, 'वे नाम' प्रताप से सतलोक वासा जान।
'वे नाम' सदुपदेश से प्यारो, जीव का निजघर वासा ले जान।
साहिब जी : सतगुरू वाणी की महिमां ले जान।।

865 सदगुरू सार सब्द सुरत सब्द में प्यारो, उसमें पूर्णतः समा जाओ।
सतपुरूष सब्द नाम प्रताप प्यारो, उसकी महिमा को जान जाओ।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द में खो जाओ।।

866 'वे नाम' सदगुरू महिमां प्यारो, काल निरंझन भी जानते ले जान।
वह 'वे नाम' कार्य में प्यारो, कभी माया नहीं बनते ले जान।
साहिब जी : दुख सुख जान एक समान।।

867 सतगुरू आज्ञा निरखत रहे प्यारो, स्वांस स्वांस सत्य उपदेश लो लाये।
सुरति निरति से हंसा रूप प्यारो, शोभा वरणि ना जाये।
साहिब जी : हंसा जागे निजघर को जाये।।

868 जब ज्ञान की जोत प्रकट हो जाये, छूटे काम क्रौध मोह सब्द परवाना।
धन्य भाग साधकों के प्यारो, जिन जिन पाया सब्द परवाना।
साहिब जी : सब्द से पल में अंधकार का नष्ट हो जाना।।

869 शिष्य चकौर समान प्यारो, सतगुरू शीतल शांत चंद्रमा समान ले जान।
जैसे चकौर चांद को देखता प्यारो, शिष्य सदा सतगुरू निहारे ले जान।
साहिब जी : सतगुरू ध्याण की महिमां महान ले जान।।

870 दयावंत सतपुरूष साहिब जी प्यारो, दास पर कृपा करी हो तात।
त्रिगुण जाल यह जग फंदाना प्यारो, चेतन सुरति सूं करते बात।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द से बनती बात।।

871 काल जाल में फंसा हर हंसा प्यारो, समझाने से ना बनती बात।
मैं पल पल खींचू सत्यलोक को, हंसा माने ना तात की बात।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द से बनती बात।।

872 निर्वासना प्रथम लक्षण प्यारो, सहवास से दूर होना जान।
विषय विकार अज्ञान अवस्था में प्यारो, निज का बल कम होना जान।
साहिब जी : गौतम ऋषि की शक्तियां कम होई जान।।

873 आत्मनिष्ठ जो हो गया प्यारो, विषय विकार से लेन ना देन।
दुनियां तजी वैष वैराग का साथ प्यारो, सन्यासी होना काम जान महान।
साहिब जी : सच्ची ''वे नाम'' दात का काम महान।।

874 सतगुरू निंबंधन जान प्यारो, साधकों से नाता ले जान।
परमार्थ सतगुरू जान प्यारे, सुरति सूं हर जन एक समान।
साहिब जी : निंबंध की सेवा का काम महान।।

875 सतगुरू सार गृही जान प्यारे, सच्ची कमाई खान काम महान।
परमार्थ की ओर सुरति प्यारो, हर का हंस रूप महान।
साहिब जी : परमार्थी की महिमां महान।।

876 सतगुरू निज की कमाई पर प्यारो, जीवन का चक्रा चलाता महान।
मांगन ते मरना भला, सतगुरू की महिमां ले जान।
साहिब जी : सेवा से प्यारो प्रेम जागे महान।।

877 सच्चे सतगुरू के लक्षणों को प्यारो, ध्याण में रखो तो भटक से छूटा साथ।
जो लक्षणों को गहराई से प्यारो, समझ से पारखी बने ईक साथ।
साहिब जी : सात लक्षण सतगुरू के पा लो ईक साथ।।

878 सतगुरू सत्यवान निष्कामी प्यारो, सब धर्मों का मूल ले जान।
फल की ईच्छा नहीं प्यारो, आत्म कल्याण का करता काम ले जान।
साहिब जी : साधकों का संग जान महान।।

879 सत्य आनंद ''वे नाम'' सब्द उपझ प्यारो, कल और कल झूठे अंग ले जान।
अब सुरति सब्द स्वांसा एक प्यारो, अब ''वे नाम'' सब्द में सुरति ध्याण।
साहिब जी : मन मान की टूटी कमान।।

880 ''वे नाम'' सब्द सत्य प्यारो, साधक भी सत्य महान।
तीन सत्य जब एक प्यारो, विष से अमृत महान।
साहिब जी : सत्यवान स्वार्थ रहित 'वे नाम' ले जान।।

881 सभी धर्म शास्त्रों का प्यारो, 'वे नाम' ने पाया ज्ञान महान।
तीन लोक का ज्ञान भी प्यारो, भक्ति की देत पहचान।
साहिब जी : 'वे नाम' साधकों की शंकाओं का करता निराकरण महान।।

वे नाम कहें:—

माया मोहणी

आई माया तो हंसता प्राणी ।
गई माया तो रोता प्राणी ।
जिनकी पुड़िया है माया ।
दुख को दूर भगाने वाली ।।

अच्छी बीवी लाने वाली ।
अच्छा घर बनाने वाली ।
कड़की दूर भगाने वाली ।
ऐ॰ सी॰ गाड़ी दिलाने वाली ।।

टिप–टाप सूट पहनाने वाली ।
लोगों में मान दिलाने वाली ।
गर्मी सर्दी का सुख दिलाने वाली ।
अच्छे–अच्छों में गिनती कराने वाली ।।

रात को दिन बनाने वाली ।
जोगी देखे गुरूजन देखे ।
सबकी लम्बी गाड़ी चलाने वाली ।
अधिकारियों से संबंध बनाने वाली ।।

विदेश की यात्रा कराने वाली ।
संगतों में अपना रोब जमाने वाली ।
निरंकार जाल में जीवों को भरमाने वाली ।
जीवों की माया से माया बड़ाने वाली ।।

देवी देवों से अच्छी अच्छी मांग मनवाने वाली ।
उसी मांग बदले, जग मान बड़ाने वाली ।
निरंकार से भी मांगें पूर्ण कराने वाली ।
पर बदले में आत्म को नाच नचाने वाली ।।

आत्म ज्ञान से दूर ले जानी वाली ।
मोह माया में उलझाने वाली ।
पूर्ण संत से दूर भगाने वाली ।
विषे वासनाओं में उलझाने वाली ।।

हे आत्म तूं निज हंसा रूप निराला ।
तूं निजधाम अमरपुर से आने वाला ।
संत प्यारा सार रस अमृत पाने वाला ।
चल हंसा सतगुरू शरणाई जा में साहिब समाई ।।

वे नाम कहें:—

निंराकार माया

निरंकार के तीन लोक में
भंजु तो किसको मैं भजू ।

तजुं तो किसको मैं तजुं
ना मैं भंजु ना ही मै तजुं ।

मेरे तो हैं साहिब प्यारे
साहिब ये सब तूं ही जान ।

निरंकार जगत और जीव प्यारे
तेरी ज्योत से ही हैं रचे ये सारे ।।

882 जा सतगुरू भ्रम मन मान ना मिटे प्यारो, कचरा ना जीव का जाये।
सो सतगुरू कच्चा घड़ा प्यारो, त्यागत देर ना लाये।
साहिब जी : पूर्ण सतगुरू सूं बात बन जाये।।

883 सतगुरू चेतन सुरति प्यारो, महांचेतन सुरति में समाई जान।
छेः लक्षण 'वे नाम' परमहंसा में प्यारो, हर पल विद्यमान ले जान।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू परम हंस मोक्ष विधाता ले जान।।

884 एक शुद्ध चेतन सत्त 'वे नाम' से प्यारो, ''वे नाम'' सब्द उसे ले जान।
सतलोक से आई प्यारो, सत्यपुरूष का अंश ले जान।
साहिब जी : जा से हंसा जागे निजघर पाना ले जान।।

885 नाम निःअक्षर सत्यलोक का प्यारो, 'वे नाम' में आन समाई।
निःअक्षर मन माया का करे निवेश, वेहि हंसा निजघर जाई।
साहिब जी : निःअक्षर सब्द ही ''वे नाम'' दात कहाई।।

886 यही बड़ाई सब्द की, जैसे चुम्भक लोहा अपने सा कर जाये।
बिन सब्द सुरति चेतन ना, काल का ग्रास बन जाये।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द ही पार कराये।।

887 ''वे नाम'' सब्द बिना प्यारो, सुरति चेतन होई मत जान।
जब लग ''वे नाम'' सब्द पावे नहीं प्यारो, मन माया संग छूटा मत जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सूं मन माया छूटा जान।।

888 जब सुरति समावे 'वे नाम' में प्यारो, जग की छूटे आस।
सुरति रहे सतगुरू चरणों में प्यारो, दृढ़ भरोसा विश्वास।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सुरति जगावे विश्वास।।

889 सुरति से लूट सके तो लूटि ले प्यारे, निरालम्भ राम का नाम।
कल कल में रह पछतायेगा, ''वे नाम'' सूं छूटा नाम।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सूं पाओ निरालम्भ राम।।

890 'वे नाम' बिना पल हृदय भ्रमाई, कौटिन भांति से दुख दाई।
निःअक्षर दात बिन प्यारो, मन माया से पल पल भटका खा जाई।
साहिब जी : बिन सब्दे नर भटका खाई।।

891 सतगुरू एक पल में आत्म चेतन करे, चेतन सुरति से बात बन जाई।
यह नाम दात कहलाता प्यारो, भवसागर से पार कर जाई।
साहिब जी : सतगुरू दात भव पार कराई।।

892 'वे नाम' हर एक को संदेश देता प्यारो, कोई कोई सच्चा भेद को पाई।
यह नाम विदेह कहलाता प्यारो, जो पावे पार हो जाई।
साहिब जी : विदेह दात से जीव आत्मां चेतन हो जाई।।

893 प्रेम स्वांसा समान प्यारो, मन मान का संग कहां।
जहां जहां सुरति ध्याण प्यारो, मन मान का संग कहां।
सुरति झाड़ू का प्यारो, कर लो सच्चा काम।।

894 एकांत में सुरति सब्द स्वांसा का संग जब, प्रेम फैलाव सुगंध वहां।
किस का किस संग प्यारो, प्रेम की बात कहां।
सुरति झाड़ू का प्यारो, खाले प्रेम सुरति फूल वहां।।

895 जो सुरति धारा में प्यारो, सब संग करता प्रेम एक समान।
तहां बहता प्रेम सत्य आनंद प्यारो, सब में दिखता एक समान।
सुरति झाड़ू का प्यारो, पा लो सच्चा ज्ञान।।

896 ''वे नाम'' सब्द की दात प्यारो, जीवत मरने का देत संदेश।
कोई कोई भेद को पावे प्यारो, देता प्रेम प्यास जगने का संदेश।
सुरति झाड़ू का प्यारो, सत्यलोक है देश।।

897 मीरा के ईष्ट कृष्ण प्यारो, पल में छोड़ा संग महान।
रविदास जी की शरणी प्यारो, सार सुरति का पाया ज्ञान।
सुरति झाड़ू का प्यारो, 'वे नाम' बिन ना ज्ञान।।

898 राम कृष्ण परमहंस प्यारो, काली की पूजा करी महान।
ईष्ट से मीरां कौ तरे प्यारो, पाया ना सुरति ज्ञान।
गुरू ताता पुरी की शरणी पाकर, पाया औंकार का ज्ञान।
सुरति झाडू का प्यारो, कोई कोई प्यारे पावे ज्ञान।।

899 जो सुरति में रह कर प्यारो, सब से करता प्रेम एक समान।
वे आप प्रेम सत्य आनंद प्यारो, सब संग प्रेम एक समान।
सुरति झाडू का प्यारो, पा लो सतगुरू 'वे नाम' सूं दान।।

900 क्षमा कर देना ही प्यारो, निज की देत पहचान।
निज की भूल को जानना प्यारो, किसी को दोषी मत जान।
सुरति झाडू की महिमां प्यारो, जानो बनो महान।।

901 अच्छे बुरे विचारों में भेद कैसे प्यारो, दोनों मन मान के अंग।
एक को पकड़ो दूजा भी संग साथ, मन के प्यारो अंग।
सुरति झाडू का प्यारो, कर लो सच्चा संग।।

902 सगुण में भले बुरे सब अटके, निर्गुण में भटके ज्ञानी ले जान।
'वे नाम' सतगुरू के चरणों में सर धरो, पाओ पद निरवाण।
सुरति झाडू का प्यारो, कितना काम महान।।

903 तजो कुसंग बैठ सत्संग, सुनो सत्यपुरूष महिमां महान।
चेतन जोत से जोत को जोड़ो, अंदर पाऊं चेतन सुरति महान।
सुरति झाडू का प्यारो, जानो काम महान।।

904 सुरति से भजो 'वे नाम' को, तजुं मन माया संग।
''वे नाम'' सब्द पर ध्याण घर, छूटे काल का संग।
सुरति के झाडू का प्यारो काम, छूड़ाना काल का संग।।

905 सुरति में जब से 'वे नाम' पाया है, हर कदम पर तेरा साया है।
मैं अमृत दात को कैसे खो सकुं, जो सुरत सब्द में समाया है।
सुरति झाडू का प्यारो, भेद सुरति में समाया है।।

906 ''वे नाम'' नाम ही प्यारो, मूल नाम की महिमां जानो मेरे भाई।
युग युग से संत कबीर जी आये, कंई हंसों को पार किया मेरे भाई।
साहिब जी : कोई कोई हंसा सतगुरू महिमां जाने मेरे भाई।।

907 बिन मूल सब्द के प्यारो, कहे सुने कुछ काज ना होई।
सुरति जागे चेतन सुरति सूं, ताई से हंसा पार हो जाई।
साहिब जी : सत्त सब्द का भेद 'वे नाम' दे जाई।।

908 सहज से सहज परम सुरति सूं प्यारो, 'वे नाम' दास सतपुरूष सूं पाई।
जो पावे सो जग से न्यारा, सतगुरू 'वे नाम' संग निजघर को जाई।
साहिब जी : सहज से मिल सहज हो जाई।।

909 मुल नाम ''वे नाम'' प्यारो, पल पल करो बड़ाई।
युगों युगों से हंसा भटकत प्यारो, मूल दात से बात बन जाई।
साहिब जी : जो पावे तीन लोक से पार हो जाई।।

910 भक्ति सतपुरूष बारीक प्यारो, शीष सौंपो बात बन जाई।
यह दात पेट की खातिर नांहि, सच्ची भक्ति भाव पार कराई।
साहिब जी : विष तजि अमृत पा मेरे भाई।।

911 सतगुरू दर्शन की महिमां प्यारो, दिन में करो कंई कंई बार।
आसुओं का मेह प्यारो, अति करे उपकार।
साहिब जी : सतगुरू कराव मन माया से पार।।

912 सतगुरू उपदेश का प्यारो, सुरति में करो विचार।
जो जन सतगुरू पाता नहीं, मिलता काल द्वार।
साहिब जी : कबहुं ना लगता उस पार।।

913 सतगुरू सच्चा कुम्हार प्यारो, साधक के पल पल काढ़े खोट।
चेतन सुरति से सहारा प्यारो, सुरति से पल पल मारे चोट।
साहिब जी : मन मान पर पड़ती चोट।।

914 सतगुरू समान जग दाता ना प्यारो, साधक कहलाना जान महान।
दीक्षा पाना सर अर्पित प्यारो, मन मान छूटना काम महान।
साहिब जी : ज्ञान पाने की महिमां महान।।

915 सात द्वीप नव खण्ड में प्यारो, सतगुरू की चेतन सुरति महान।
जो आवे दात को पावे प्यारो, साहिबन महां सुरति पावे बने महान।
साहिब जी : सतगुरू सत्यपुरूष दोनों का संग महान।।

916 सुरति धार में भया उजाला, बिन दीपक बिन बाती प्यारो।
सुरति निरति भई मतवारी, प्रेम सुधा रस चाखा प्यारो।
यह भेद साहिब जी देते हैं, कोई प्यारा पावे सच्चा साहिबन प्यारे।।

917 निज के दर्शन के लिये, दर्पण करे सब काम।
सतपुरूष दर्शन के लिये, सतगुरू दर्पण ले जान।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, सतगुरू ही सतपुरूष जान।।

918 जैसी सुरति चकौर की चांद सूं, तैसी सतगुरू सब्द सूं लाग।
स्वांस स्वांस सब्द में डाल कर, सतगुरू सूं प्रीति लाग।
यह भेद 'वे नाम' जी देते है, मन माया का करयाग।।

919 ''वे नाम'' सब्द का त्याग करे जो साधक, वापस काल धर भटका जान।
काल भी उसको सहारा दे ना, युगों युगों में भटका खोया जान।
साहिब जी : उसे भटका खोया जान।।

920 सुरति ध्यान में ऐसे रहो प्यारो, जैसे मणिहिं धरे भुजंग।
किसी हल में सुरति टूटे नांहि, सुरति निरति का होत जब संग।
साहिब जी : यह सब साधक के अंग।।

921 खान पीन की चिंता नहीं, जहां पहुंचे वहां आप।
तीन लोक की संपदा प्यारो, धोखा ही धोखा आप में आप।
साहिब जी : देवन वाला ही संग में आप।।

922 सतगुरू रिझाना साधक का काम प्यारो, सहज से सहज होना ले जान।
सत्यपुरूष (भगवन) सूर्य रूप प्यारो, स्थूल आंखों से देखा मत जान।
साहिब जी : चांद (सतगुरू) में उसकी जोत महान।।

923 जो कुछ करे सुरति धार से प्यारे, पुण्य पाप में रहे न्यारा रे।
''वे नाम'' सब्द सुरति स्वांसा संग प्यारे, जा पहुंचे सतलोक द्वार रे।
साहिब जी : मन माया संग छूटा साथ रे।।

924 सतगुरू निंदा नर्क निधाना प्यारे, ताका मुख नहीं देखे कोई।
कोटि जन्म गधे की योनि प्यारो, सतगुरू निंदा अति दुखदाई।
साहिब जी : सतगुरू महिमां सारों का सार मेरे भाई।।

925 सतगुरू निर्लोभी निष्कामी प्यारो, महिमां जान महान।
दिन में बार बार दर्शन पाई के प्यारो, चरणन में पाओ स्थान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द से पार ले जान।।

926 सुरति तेल की धार प्यारो, नींद में भी संग साथ।
मन सूं जाये तन सूं जाये, नींद में भी ना छोड़े साथ।
साहिब जी : सुरति स्नेहि हर पल साहिबन साथ।।

927 ''वे नाम'' सब्द धीर के धरे, मन माया भूखे रह जायें।
सुरति ना पकड़े हाथ जी, धर धर भटका खायें।
साहिब जी : बिन सुरति मन भ्रमाये।।

928 फिकर सबको खा रही, फिकर ही मोह का अंग।
फिकर कल कल में ले जा रही, ये भी तो मन माया का अंग।
साहिब जी : चेतन सुरति ही हंसा रूप रंग।।

929 क्षमा संतन का अंग है, साधक उनसे सिखते सुरति संग।
औगुण कुछ संग नहीं, सुरति का छाया रहे जब संग।
साहिब जी : सुरति से प्रेम प्रीत शांति का संग।।

क क्षमा बड़न को चाहिये, छोटन को उत्पात।
क्या विष्णु का घटि गयो, जो भृगु मारी लात।
साहिब जी : क्षमा परम धर्म प्रपात।।

क तिल भर मछली खाये के, कोटि गऊ दे दान।
काशी करवट लै मरै, तो भी नर्क निदान।
साहिब जी : मांसाहारी प्रत्यक्ष राक्षस जान।।

930 देह घेर का दण्ड है, भुगतत हैं सब कोये।
सुरति वान सुरति में रहे, सोया नर भुगते रोये।
साहिब जी : कर्मण दण्ड से बचा ना कोये।।

931 सुरति से सब होत है, जे सुरति संग ''वे नाम'' सब्द की डौर।
सुरति सूं आंख में नूर है, सतपुरूष सूं जोड़ो सुरति डौर।
साहिब जी : संतन संग सतपुरूष सुरति डौर।।

932 मन तो पंछी रूप प्यारे, उड़ी के पहुंचे आकास।
पल में नीचे आन पड़े, फिरि माया गन्द के पास।
साहिब जी : मन काग़ा सदा मल पास।।

933 मन दौड़ समुंद्र लहर समान प्यारो, अति चंचल ले जान।
पल में कौवे से हंसा बने, सार सब्द की महिमां जान।
साहिब जी : सब्द सुरति शीतल शांत ले जान।।

934 मन बिना सीस का मृग प्यारो, चारों ओर विषय विकारों को चरने जाये।
सतगुरू ज्ञान रसरी से बांधकर, ''वे नाम'' सब्द दात में जा समाये।
साहिब जी : सतगुरू माया छुड़ा वैराग़ जगाये।।

935 सतगुरू आज्ञा दृढ़ करी राखो प्यारो, उनकी आज्ञा सदा सहाये।
हानी लाभ की चिंता नांहि प्यारो, बाधा से दूर ले जाये।
साहिब जी : दुख सुख में एक सम्म रहना ले जाये।।

936 उनकी आज्ञा में रह कर प्यारो, भक्ति दृढ़ होती महान।
हानी होने की चिंता कैसी प्यारो, उन्हें आप ही करता जान।
साहिब जी : सतगुरू धोबी शिष्य कपड़ा ले जान।।

937 आज्ञा में रह कर प्यारो, भव सागर पार हो जाता ले जान।
सतगुरू आज्ञा प्यारो, सब से श्रेष्ठ ले जान।
साहिब जी : सुरत सिला पर कपड़ा धोना ले जान।।

938 सतगुरू आज्ञा पर चलने वाला प्यारो, पापी मत उसे जान।
वह तो सच्चा सुरति में रहता प्यारो, जान उसे साधक महान।
साहिब जी : उसे भव सागर से पार ले जान।।

939 कोई प्यारा साधक सतगुरू सूं प्यारो, पाता महां चेतन सुरति धार।
मन मान को शान्त बनाता प्यारो, सतगुरू चेतन सुरति संग से पार।
साहिब जी : आओ चलें निजघर उस पार।।

940 सच्चा प्यारा जो पाता जग में, बांट के खाता ले जान।
आशा तृष्णा का संग भी छूटा प्यारो, किसी जीव से वैर नहीं करता जान।
साहिब जी : हर पल सदगुरू चरणन में ध्यान।।

941 जग में फिर फिर प्यारो, जन्म नहीं पाता ले जान।
मोक्ष सब्द में सुरति धारा बहती प्यारो, हर कार्य सुरति में करता जान।
साहिब जी : सतगुरू का प्यारा उसे जान।।

942 तन मन सब खेल प्यारो, सुरति जोत अमर संग जान।
स्वांस स्वांस में, ''वे नाम'' सब्द का वासा प्यारो,
जो ना जागे, हर पल दुखी उसे तूं जान।
साहिब जी : दुखी उसे तूं जान।।

943 मन वाणी से पार प्यारो, साहिब महां चेतन सुरति स्वरूप।
सुरति में जो धार लो प्यारो, संग उसी का रूप।
साहिब जी : साहिब सब्द अनूप।।

944 तन माया मन विचार प्यारो, सुरति चले मन अनुसार।
नहीं जहां माया और विचार प्यारो, वह नर हंसा अनुसार।
साहिब जी : उसे जान तूं पार से भी पार।।

945 तन मन का घर प्यारो, सुरति बनी अधीन।
मन मिटा तन हुआ खाली, सुरति को सतगुरू सुरति का संग मिला।
साहिब जी : सतगुरू मिला महां चेतन सुरति का संग मिला।।

946 तन सूं सुरति का लेन ना देन प्यारो, तो भी करे मन अनुसार सब काम।
निज रूप भूली बैठी सुरति, तन मन का काम करे जानें ना निज काम।
साहिब जी : सुरति को चेतन करना सांचा काम।।

947 हंसा निज को भूला बेठा प्यारो, ''वे नाम'' सब्द बिन ना चेतन जान।
जब तक सतगुरू कृपा ना बरसे, कैसे पावे पूर्ण मोक्ष का बाण।
साहिब जी : बिन सतगुरू नहीं छूटे मन मान।।

948 प्रेम ही आत्म जान प्यारे, प्रेम महां चेतन का अंग ले जान।
प्रेम सतगुरू जान प्यारे, प्रेम महां चेतन का अंग ले जान।
साहिब जी : सतगुरू प्रेम सुरति की धार जान।।

949 दर्श बिना मोहे कुछ ना भावे, सतगुरू दर्श बिना।
तुझ बिन जग में कौ पार लगावे, ''वे नाम'' सब्द धार बिना।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द ही पार लगावे।।

950 सुख में हर दम प्यारो, सतगुरू का संग पाओ।
दुख में हार ना मानो प्यारो, सतगुरू चरणन में सुरति लगाओ।
साहिब जी : सतगुरू गुण गाओ तर जाओ।।

951 सतगुरू भक्ति दुषित मन सूं प्यारो, सुरति ध्यान से मन सूं पार कराये।
सतगुरू भक्ति की ऊँची सीढ़ी प्यारो, कोई पूर्ण जागा ही फल पाये।
साहिब जी : विश्वास ही पार कराये।।

952 ध्यान उसी का करना प्यारे, देखा सुना जो होये।
सतगुरू चेतन सुरति प्यारो, कुंद सुरति पल में चेतन कर जाये।
साहिब जी : सतगुरू भक्ति ही सच्ची भक्ति कहलाये।।

953 सतगुरू के सत्य वचन से प्यारो, मन माया का संग छूट जाना जान।
शाकाहारी हक कमाई प्यारो, चरित्रवान चोरी का छूट जाना जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द की महिमां जान महान।।

954 सतगुरू सब्द सदा रखवारा प्यारो, एक ना पावे भेद।
जा को कहिये सच्चे भेद को प्यारो, उस का आपे आप से भेद।
साहिब जी : मन माया संग कैसा भेद।।

955 'वे नाम' सतगुरू का घर प्यारो, पावों कौस भर जान मेरा गाओं।
जो जावे सो पावे अमृत रस प्यारो, पीवो तो छूटा गाओं।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द रस ही छुड़ावे गाओं।।

956 जान बूझ कर मत कर झूठी बात प्यारे, कल की बात ना जाने कोये।
इस पल में ही सब पाना प्यारो, कल को काल जाने सोये।
साहिब जी : कल और कल मन माया होये।।

957 विचार उठत तो एक है प्यारो, विचार किया तो अनेक।
एक को एक ही रहने दो प्यारो, इस पल में पकड़ो एक।
साहिब जी : कर पहचान एक से एक।।

958 प्रेम दया क्षमा विवेक प्यारो, सच्ची भक्ति के लक्षण महान।
सत्य आनंद कहीं दिखता नहीं प्यारो, जग से भक्ति खो गई ले जान।
साहिब जी : कर पहचान एक से एक।।

959 वायु मण्डल हर ओर प्रदूषित प्यारो, भौजन भी दुषित ले जान।
मिलावट का खेल सब ओर प्यारो, शुद्ध जल वायु मत ले जान।
साहिब जी : सब मन माया का किया ले जान।।

960 प्रेमी खोजत ''वे नाम'' सब्द प्यारो, सतगुरू मिले बिन बने ना बात।
जा को प्रेम भेद दिया प्यारो, करता मन माया की बात।
साहिब जी : कोई साहिबन प्यारा ही पाता दात।।

961 अष्टम चक्र पर जब स्वांसा प्यारो, तन मृतक होत ले जान।
ऐसी मरनी हो मुआ, जीवत मरना इसे ले जान।
साहिब जी : कल और कल से पार ले जान।।

962 ऐसी अवस्था जब साधक पाता प्यारो, सुरति से हंसा रूप ले जान।
बिन महां चेतन सुरति कुछ संग ना प्यारो, तन मन से पार ले जान।
साहिब जी : जीवत मरना इसे ले जान।।

963 जा मरने से जग डरे प्यारो, मैं उस में पल पल बहता जाऊँ।
ऐसी मरनी भव पार कराती, मैं सुरति में खोता जाऊँ।
साहिब जी : हंसा रूप पा निज घर को जाओ।।

964 दसवें द्वार से जब बाहिरा, अत्यन्त सूक्ष्म सुन्न हंसा को ले जान।
महां योगेश्वर प्यारो, जब पाई मीन चाल महान।
साहिब जी : निरंकार लोक की सैल महान।।

965 जानन हारा जान है लेता, सत्यवान अंतःकरण का बाण।
कहन सुनन की बात ना प्यारो, जानन हार चलावे बाण।
साहिब जी : सच्चा साहिबन देश उस पार महान।।

966 सतगुरू सेवा बिन प्यारो, जप तप तीर्थ पूजा सब व्यर्थ ले जान।
बिन सतगुरू सेवा प्यारो, आत्म प्रकाशित मत जान।
साहिब जी : सतगुरू अधीन होकर जग से पार ले जान।।

967 सतगुरू चरणन वासा महान प्यारो, तन भी सतगुरू भेद बनावे महान।
अपनी इच्छा कुछ ना राखी, उनके दर्शन जान महान।
साहिब जी : सतगुरू सेवा से फल महान।।

968 दर्श बिन मोहे कुछ ना भावे, सतगुरू प्यारे दर्श बिना।
तीन लोक मोहे कौन पार करावे, ''वे नाम'' सब्द की दात बिना।
साहिब जी : सार सब्द सुरत सब्द दात बिना।।

969 जो कुछ देखन में आवे प्यारो, ताको जान सब नाश।
''वे नाम'' सब्द पांच शब्द से बिन प्यारो, वे तो सुरति प्रकाश।
साहिब जी : चौथे लोक से आई महां चेतन सुरति प्रकाश।।

970 तीन लोक से पार प्यारो, साहिबन देश महान।
''वे नाम'' सब्द सुरति स्वांसा संग प्यारो, पहुंचो निज देश महान।
साहिब जी : साहिबन सब्द की महिमां महान।।

971 सत्यलोक नहीं उत्पति प्यारो, नहीं प्रलयः ना ही मौत डराये।
जन्म मरण से पार प्यारो, ''वे नाम'' सब्द ही हंसा पार कराये।
साहिब जी : श्वेत रंग के देश में पासा पाये।।

972 निःअक्षर मूल शक्ति दात प्यारो, क्षर अक्षर मन माया से पारा।
पिण्ड ब्रह्माण्ड के पार प्यारो, साहिबन सच्चा लोक दरबारा।
साहिब जी : सब हंसों का देश प्यारा उस पार।।

973 सत्ययुग सत्य त्रेता तप प्यारो, सच्ची भक्ति से दूर।
द्वापर पूजा चार प्यारो, सत्य भक्ति से कौसों दूर।
साहिब जी : काल का जीव कैसे हो पार।।

तुलसी दास जी कहते हैं :

त ब्रह्म राम ते नाम बड़, वरदायक वरदानी।
राम चरित सत कौटि मंह, लिये महेस जिय जानी।
साहिब जी : किसी प्यारे सतगुरू महिमां जानी।।

त राम एक तापस दिया तारी, नाम कौटि नर कुमति उभारि।
कहां कहां लगि नाम बड़ाई, राम ना सकहि नाम गुण गई।
साहिब जी : सत्यपुरूष महिमां सतगुरू गई।।

क साहिबन के दरबार में प्यारो, करता केवल संत।
कर्ता केवल संत प्यारो, हुकुम में उन के साहिब।
साहिब जी : करता केवल संत।।

974 कौटि जन्म से नर भटक रहा प्यारो, सतगुरू पल में भव पार कराई।
एक नाम की नाव सूं, जन्म मरण का लेखा मिट जाई।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द अदभुत दास साहिबन सूं पाई।।

975 अदभुत नाम की अदभुत महिमां प्यारो, सुरत निरत हंसा कर जाई।
साहिब कबीर अमरपुर वासी प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू पास साहिबन सूं आई।
साहिब जी : नानक मीरां रविदास भी संग आई।।

976 जिस संग ''वे नाम'' सब्द की दात प्यारो, तिस के सवेरे सब काम।
काल जाल कुछ ना करे, ''वे नाम'' सब्द करे सब काम।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू सत्यपुरूष तदरूप ले जान।।

क अवगति पार ना पावे कोई, नाम से पार हो जाई।
अविगत नाम पुरूष का जानो, हर थां पर देखा ना जाई।
साहिब जी : हर थां देखा ना जाई मेरे भाई।।

क जबहि नाम ह्रदय धरा, भयो पाप का नाश।
जैसे चिंगी आग की, पड़ी पुरानी घास।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द जगावे प्यास।।

क काल फिरे सिर उपरे, जीवहि नज़र ना आवे।
कहें साहिब सतगुरू सब्द से, यम से जीव बचावे।
साहिब जी : कोई प्यारा ''वे नाम'' सब्द को पावे।।

क खोजी जो सार सब्द का प्यारो, धन्य संतजन सोये।
कहे साहिब गहि सब्द को, कबहुं ना काल भ्रमाये।
साहिब जी : कबहु ना काल भ्रमाये।।

क सच्ची बड़ाई ''वे नाम'' सब्द की प्यारो, जैसे पतंग जोति प्रीत।
बिन ''वे नाम'' सब्द पार ना एक प्यारो, कैती झूठी प्रीत।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द बिन कैसी प्रीत।।

977 मन मान बड़ाई से उपर उठकर प्यारे, सतगुरू शरणी आओ।
जाति वरन कुल खोये के प्यारो, सच्ची दात 'वे नाम' सूं पा जाओ।
साहिब जी : भ्रम काल जाल तजी सतगुरू के हो जाओ।।

978 गुरू का शिष्य प्यासा जान प्यारे, कैसे निजघर अपने जाये।
सेवक सतगुरू का प्यारे, सच्ची दात पाये निजघर जाये।
साहिब जी : सतगुरू चरणन में ध्यान लगायें।।

979 जो जन प्यासा प्रेम का, मन मान शीष दे काट जाये।
जो कोई ऐसा करे प्यारो, तेरा पाप ताप कट जाये।
साहिब जी : उस का लख चौरासी कट जाये।।

980 संत साहिबन द्वार को छोड़ कर प्यारे, काल सूं कुछ मांगन ना जाये।
साहिबन को ही सच्ची पुकार है देता, साधक पार हो जाये।
साहिब जी : निज प्यासा रह जाये।।

981 सभी तीर्थ सतगुरू चरणन प्यारो, उनकी शरणी में रहना काम महान।
उनके चरणों में ईष्ट मान प्यारे, उन्हीं का करो ध्यान।
साहिब जी : सतगुरू चरणन प्राणों से भी प्रीय जान।।

982 सतगुरू चरणों से प्रेम प्यारे, संसार सागर से पार हो जाता।
सुख दुख हानि लाभ ना देख प्यारे, सतगुरू ध्यान से पार हो जाता।
साहिब जी : सतगुरू पूर्ण मुक्ति फल दे जाता।।

983 हर जीव अंदर से दुखी जान प्यारे, हर पल रोता रहता है।
पूर्ण सतगुरू का संग ना पाया, आशा तृष्णा में बहता रहता है।
साहिब जी : अपनी हठ को छोड़ता नांहि तो ही दुखी नर रहता है।।

984 सतगुरू आज्ञा निरखत रहो प्यारो, उनकी आज्ञा बिन कुछ काज नहीं।
उसकी आज्ञा सुरति जगावे, उनकी आज्ञा बिन कोई पार नहीं।
साहिब जी : उनकी आज्ञा सकल सिरामन बिन कुछ नांहि।।

985 सतगुरू आज्ञा पर चलने वाला प्यारो, हानि लाभ में चित्त तथा सुखी ना।
वह ही सच्चा गुरूमुख प्यारो, भक्ति दृढ़ होने बिन कुछ और ना।
साहिब जी : आज्ञा का पालन करे बिना ना उपझे सत्य ना।।

986 जब तन मन थिर जान प्यारे, ''वे नाम'' सब्द सुरति से जान।
तन मन शांत हो गये, मन का मूल सुरति में वासा जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सच्च खेल ले जान।।

987 ''वे नाम'' सब्द पाये बिना प्यारे, जग में जन्में बारंबार।
'वे नाम' सतगुरू सत्यपुरूष तदरूप प्यारे, किया गिनती बाहिरा प्रवेश साहिब दरबार।
साहिब जी : अमरधाम ही पूर्ण मोक्ष द्वार।।

988 जाग्रत अवस्था का सबंध प्यारो, निरंकार भगवन से ले जान।
आखों में आत्म का वास प्यारो, जो देखे काल का जान।
साहिब जी : आवागमन में आत्म हंसा जान।।

989 सतगुरू चेतन सुरति ध्याण सूं प्यारो, जा पहुंची निजधाम।
मन माया से पार प्यारो, महां चेतन सुरति धाम।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द निजघर ले जाता ले जान।।

990 मन का संग करते करते प्यारो, सुरति कुंद होई ले जान।
समस्त मुद्रायें योग प्यारो, मन माया का धोखा ले जान।
साहिब जी : आत्म का सच्चा रूप सुरति ले जान।।

991 चित्त मान का संसार प्यारो, चित्त पर विरोध करने से संसार खो जाये।
ईन्द्री पसारा रोक लो तो, नर सुरतिवान बन जाये।
साहिब जी : पांचों ईन्द्री सम्म करने से मन शांत हो जाये।।

992 कोई ''वे नाम'' सब्द खोजी प्यारो, खोजता सच्चा सतगुरू महान।
''वे नाम'' सब्द मन दूर करे प्यारो, मन स्मृतियों में ले जाता जान।
साहिब जी : सुरति से नाम सिमरन करना जान।।

993 हर जीव दुख पीड़ा के बंधन में प्यारो, चिंता में सतगुरू को जान।
कोई सत्य सब्द का खोजी प्यारो, 'वे नाम' विवेकी उसे जान।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू सोता जगत जगाने के लिये जान।।

994 चलते बैठते ध्यान में रहना प्यारो, सतगुरू में समाना ले जान।
हर पल मन की तरंग में रहता प्यारो, सुरति में सतगुरू छवि महान।
साहिब जी : कहां से आया कहां है जाना भेद ले जान।।

995 जैसे बाजीगर का बंदर प्यारो, वैसे मन बुद्धि चित्त अहंकार सुरति साथ।
नाना नाच नचाये के, मन सुरति को रखता साथ।
साहिब जी : मन पवन रूप में सुरति साथ।।

996 सांसा निरति सुरति का अंग प्यारो, सब्द से सुरति निरति मेल ले जान।
प्राण रूप निरति को प्यारो, एक रूप हंसा करना ले जान।
साहिब जी : अष्टम चक्र में हंस रूप से पार ले जान।।

997 सुरति निरति जब एक प्यारो, मन पवन वश में ले जान।
सप्तम चक्र में ध्यान प्यारो, काल के अंदर ले जान।
साहिब जी : निरति ''वे नाम'' सबद से सुरति संग महान।।

998 मन बुद्धि चित्त अहंकार संग प्यारो, कोई भी बुद्धिमान मत जान।
सुरति से सुरतिवान प्यारो, बुद्धिमानता में सब खो जाती ले जान।
साहिब जी : जग में कोई बुद्धिमान मत जान।।

999 मोह सब दुखों का मूल प्यारो, सब जग मन मान में खोया जान।
ब्रह्मा विष्णु महेश प्यारो, काम क्रौध लोभ मोह में पड़े ले जान।
साहिब जी : ऋषि मुनि भी काम क्रौध में पड़े जान।।

1000 जैसे पतंग जोति प्रीत प्यारो, यही बड़ाई मूल सब्द की जान।
बिन ''वे नाम'' सब्द पार ना एक प्यारो, कैती प्रीत मन माया की जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द तोड़े मन माया बाण।।

त बांदऊँ गुरू पद कुंझ, कृपा सिंधु नर रूप हरि।
महांमोह तप पुंझ, जासू वचन रवि कर निकर।
साहिब जी : निरंकार ही सुन्न वोहि दिनकर।।

न सच्चे मेरे साहिबा गहन गंभीरा।
कोई ना पावे भेद तेरा।
साहिब जी : बिन सतगुरू सब अधूरा।।

क नामवंत बहुते मिले, ध्यानवंत अनेक।
कहें कबीर धर्मदास से, सतगुरू वंता कोई प्यारा एक।
साहिब जी : सतगुरू स्नेहि बिरला कोई एक।।

क सत्संग में शंकाओं का निराकरण प्यारो, मिलता पूर्ण समाधान।
सतगुरू के संग वातावरण, एकाग्र ले जान।
साहिब जी : सतगुरू सब्द सुरति चेतन शक्ति ले जान।।

क काल का जीव माने नहीं, मैं कौटि कहुं समझाये।
मैं खींचू सत्यलोक को, वो बांधा यमपुर जाये।
साहिब जी : काल ही यमराज कहलाये।।

क आकार : बल मदरूप मद, धन मद जाति मद विद्या मद।
इन्हें तजे तो साधक कहावे।
साहिब जी : अभिमानी को मन मान भावे।।

क चाह गई चिंता गई, सुरति बेपरवाह।
वोहि शहनशाह प्यारो, जिस में भव साग़र छोड़न की चाह।
साहिब जी : जागा है मृत्यु से बे परवाह।।

क चकवी बिछड़ी रैनि की, आई मिली प्रभाती।
जो जन बिछुड़े सतगुरू सूं, ते दिन मिले ना राती।
साहिब जी : सतगुरू बिन काल बहु सताती।।

विहंगम साधना :

1001 सतगुरू सुरति ध्यान से यह स्थिति जान।
प्यारे तन मन धन सतगुरू का जान।
बिन सतगुरू आज्ञा मन सूं ना ले काम।
बुद्धि से ना कर निर्णय सुरति महान तूं ले जान।
चित्त तेरा कर्मण लेखा यादें दुखदाई तूं जान।
अहंकार करे उदविघ्न प्यारो, क्रौध से ना ले काम।
तुम राजा जब शांत भये अब भीतर करो ध्यान।
सुरति अनुभव जागते दिखें सतगुरू में साहिब आप।
निज में आत्म साक्षात्कार स्वयं के दृष्टा आप।
तड़प जब मुक्ति की जागे सतगुरू संग निजघर आप।

1002 आध्यात्मिक ऊर्जा तीन प्रकार से प्यारो, दृष्टि वाणी तथा स्पर्श द्वार।
सतगुरू दर्शन को जाओ प्यारो, सतगुरू उतारे भवजल पार।
साहिब जी : सतगुरू कृपा पा उतरो पार।।

निरंकार भक्ति सच्चा ज्ञान : राजा जनक (संत वाणी)

सतगुरू मनन ध्यान से यह स्थिति जान।
तन मन धन सतगुरू का प्यारो बिन सतगुरू आज्ञा मन से कुछ ईच्छा नहीं।
बुद्धि से कोई फैसला भी नहीं प्यारे और चित्त से कुछ याद नहीं प्यारे।
अहंकार में आकर कोई क्रिया नहीं करना प्यारो।
राजा जंक अब भयो पूर्ण शांत।
आंखें बंद करो क्या देखे रहे हो तुम।
अनुभव हो गया तुम अपने दृष्टा स्वयं प्यारे।
आत्मां का अनुभव आत्म साक्षात्कार का आत्मां की मुक्ति का।
तड़प भवसागर से बाहर निकलने की होगी तब ही काम बनेगा।।

र देनहार कोऊ और है, देता है दिन रैन।
लोग भरम मुझमें करते, ताते नीचे नैन।
साहिब जी : सेवक के सदा नीचे नैन।।

क प्यारे हंसना छोड़ दे, रोने से कर प्रीत।
बिना रोये नहीं पाईये,सच्चा सतगुरू मीत।
साहिब जी : श्रद्धा होवे तो सतगुरू मीत।।

क सुखिया सब संसार है, खाये और सोये।
दुखिया दास कबीर है, जागे और रोये।
साहिब जी : जग कर्मण कारण दुखिया होये।।

क जो है जाको भावता, मिले सुख ऊपझाये।
जब सतगुरू चेतन सुरति सूं प्यारे, तार जोड़े पूर्ण मोक्ष पा जाये।
साहिब जी : चेतन सुरति सूं परम चेतन सुरति आन समाये।।

क प्रीति बहुत संसार में, नाना विधि की सोये।
उत्तम प्रीति सो जानिये, सतगुरू से जो होये।
साहिब जी : सोया नर सतगुरू का ना होये।।

1003 हमारी नासका में प्यारो, ईड़ा पिंगला नाड़ियां महान।
इन दो के मध्य प्यारो, सुश्मिना नाड़ी का काम महान।
साहिब जी : निजघर जाने में सुश्मिना की महिमां पहचान।।

1004 सुश्मिना जब चेतन हो जाती प्यारो, एक धारा में चलती जान।
नासका में बायां स्वर प्यारो, ईंगला नाड़ी स्वर ले जान।
साहिब जी : दांया स्वर पिंगला नाड़ी स्वर ले जान।।

1005 ईंगला पिंगला नाड़ियों के मध्य में प्यारो, सुश्मिना नाड़ी का काम महान।
सुश्मिना चेतन करना सतगुरू सूं प्यारो, भेद पाना खेल महान ले जान।
साहिब जी : ईड़ा पिंगला जब बंद प्यारो, सुश्मिना खुल जाति ले जान।।

क प्रीतम को पत्तिया लिखूं, जो कहुं बसे विदेश।
तन में मन में नयन में, वाको कौन संदेश।
साहिब जी : सतगुरू रोम रोम प्रेम संदेश।।

1006 हंसी हंसी में मन वासा प्यारो, रोया मिलें सतगुरू संग साथ रे।
सुरति निरति थिर होने से प्यारो, ''वे नाम'' सब्द में साहिबन संग साथ रे।
साहिब जी : सुश्मिना बने ज्ञान सुरति चेतन धार रे।।

1007 सुरति धारा प्रेम की जोत प्यारो, मन माया का संग नांहि रे।
''वे नाम'' सब्द जब सुरति बसे प्यारो, साहिबन करते प्रेम महान रे।
साहिब जी : प्रेम बाण की महिमां जान रे।।

1008 जो है जाकी भावना प्यारो, मिले सुरति सुख उपझाये।
जब सतगुरू चेतन सुरति सूं प्यारो, तार जोड़े पूर्ण मोक्ष पा जाये।
साहिब जी : चेतन सुरति में परम सुरति आन समाये।।

1009 प्रेम सुरति धार ईक चाहिये, तन मन से लेन ना देन रे।
प्रेम प्रीति ऐसी चाहिये प्यारे, जैसे चांद चकौर की होये रे।
साहिब जी : प्रेम प्रीति में दोनों एक दूजे में खोये रे।।

1010 भावें तीन लोक में साहिबन कार्य करें, भावें परमहंसा सतलोक कार्य रे।
साहिब कारण परम उत्तम प्रीति प्यारो, सतगुरू चेतन सुरति धार रे।
साहिब जी : इस पल में रहना प्रेम धार रे।।

1011 प्रेमी ढूंढत ''वे नाम'' फिरे प्यारो, सच्चा प्रेमी कहां से आये रे।
मन माया के लोक में प्यारो, ''वे नाम'' सब्द से प्रेमी होये रे।
साहिब जी : बिन प्रेम पार ना एक रे।।

1012 प्रेम प्रेम सब कहत हैं प्यारो, प्रेम दात ना पावे कोये रे।
वे तो परम सुरति से उपझे प्यारो, जब सतगुरू 'वे नाम' की कृपा होये रे।
साहिब जी : परम सुरति आप ही प्रेम धारा होये रे।।

1013 प्रेम जागे बिना प्यारो, धीरज की डौर ना पकड़ी जाये रे।
विरह जागे बिना वैराग़ ना प्यारो, सतगुरू सब्द बिन ना उपझे प्रेम रे।
साहिब जी : बिन धरती पानी का संग मत जान रे।।

1014 ''वे नाम'' सब्द को पाई करी, दूजा तजते देर ना लोई रे।
जप तप साधन तीर्थ नहीं प्यारो, सार सुरत सब्द में सुरति डाल रे।
साहिब जी : रोये बिना ना जागे भाग्य रे।।

1015 ''वे नाम'' सब्द सुरति चेतन करे प्यारो, महांचेतन सुरति का संग वास।
सतगुरू सब्द महांचेतन सुरति प्यारो, करे मन माया से उदास।
साहिब जी : दृढ़ राखो सुरति सब्द स्वांसा में वास।।

1016 सच्चा सुख निरालम्भ राम प्यारो, मन माया संग दुख अपार रे।
मनसा वाचा कर्मना सुरति में प्यारो, सुरति सब्द स्वांसा संग पार रे।
साहिब जी : दृढ़ राखो विश्वास रे।।

1017 सुमिरन में सुरति लगाईये प्यारो, सुमिरन में दुख सुख एक समान रे।
सुमिरन जैसे पानी में मीन प्यारो, पल बिछुड़े तजे प्राण रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द की महिमां महान रे।।

1018 जब ही ''वे नाम'' सब्द सुरति धारा प्यारो, मन माया संग छूटा जान रे।
जैसे चांद चकौर की प्रीति प्यारो, दूरी से लेन ना देन रे।
साहिब जी : जैसे मीन जल का साथ रे।।

1019 चौथे लोक निरालम्भ राम जी वासा, सुरति चेतन सूं जोड़ती तार रे।
विरह वैराग में आसुंओं की धारा, पल में जोड़े तार रे।
साहिब जी : चेतन सुरति की जोड़ती महां चेतन सुरति से तार रे।।

1020 सागर पार जे सतगुरू वासा प्यारो, सुरति चेतन सूं जोड़ो तार रे।
क्षन आवे क्षन जावे सुरति की धार, ले जावे मन माया का कचरा साथ रे।
साहिब जी : चेतन सुरति महांचेतन सुरति का संग अपार रे।।

1021 दुख दर्द व्यावे नहीं प्यारो, हर एक हंसा सूं जाड़ो प्रेम की धार रे।
चेतन सुरति रस पिया तभी जानिये, जे कबहुं ना टूटे सुरति खुमार रे।
साहिब जी : मन माया भी आत्म का करें कार्य रे।।

1022 सभी दर पे 'वे नाम' भटका प्यारो, सतगुरू सा जग में ना कोई रे।
सुरति धार में प्रेम तिल ईक उपझे प्यारो, जब सुरति कंचन होई रे।
साहिब जी : सब कचरा जल जाई रे।।

1023 ''वे नाम'' सब्द प्रेम रस प्यारो, हंसा पीवत अमृत धार रे।
यह अमृत चौथे लोक से आया प्यारो, चेतन करता सुरति धार रे।
साहिब जी : छूटे तन मन की लार रे।।

1024 'वे नाम' कुल सो तरा प्यारो, जिहि कुल उपझे 'वे नाम' दास रे।
जग तारे ईक्कत्तर पीढ़ी संग प्यारो, जग में जग को तारते बन दास रे।
साहिब जी : मन माया भी बन रहते दास रे।।

1025 जिह धरि सतगुरू ना सेवा प्यारो, सत्यपुरूष की दात नहीं।
तहां भूत प्रेतों का वासा जानिये प्यारो, बिन दुख तहां कुछ नांहि।
साहिब जी : तहां मन मान बिन कुछ नांहि।।

1026 ''वे नाम'' सब्द जपत कौड़ी भला प्यारो, रहे को जे ठिकाना भी नांहि।
ऊँचे महल मंदिर प्यारो, तहां सतगुरू की छाया भी नांहि।
साहिब जी : दिखावा भक्ति जग नांहि।।

1027 जा की सुरति ''वे नाम'' सब्द में प्यारो, ता की छूटी सब चाह रे।
एक लहरि चेतन सुरति की प्यारो, तीन लोक का संग छूटा जान रे।
साहिब जी : निज की पहचान ही सच्चा काम रे।।

र करत एक जाये जग भुगता, सब घट सब विधि सोई।
कर रे दास भक्त ईक उपझा, सहज होई सो होई।
साहिब जी : सतगुरू गुण पाई पार हो जाई।।

1028 सो क्या जाने पीर पराई, जाकि सुरति सोई मेरे भाई।
पिया बिन दुखी दुहागिनी प्यारो, सुरति सूं सेव ना करि मेरे भाई।
साहिब जी : बिन ''वे नाम'' सब्द प्रीति ना जागे मेरे भाई।।

1029 आज का दिवस बलिहारा प्यारो, निरालम्भ राम का प्यारा घर हमारो ।
करि दण्डवत चरण पखारों प्यारो, तन मन धन सब उन ऊपर वारो।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सुरति चेतन करि मुझे तारो।।

1030 रैन गंवाई स्वपनों में प्यारो, दिवा कल और कल में मेरे भाई।
इस पल की महिमां ना जानी प्यारो, आशा तृष्णा में लाखों जन्म गंवाई।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द की दात ना पाई।।

1031 भव सागर अति गहरा नीला प्यारो, दस गज ऊंची धार।
''वे नाम'' सब्द का बेड़ा बांध प्यारे, उतरो चौथे लोक दरबार।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द बेड़ा उतारे उस पार।।

1032 सतगुरू 'वे नाम' चेतन सुरति ज्ञानी प्यारो, पल पल देत पुकार पे पुकार।
कोई एक प्यारा सुनत पुकार को, पल में पहुंचा सच्चे दरबार।
साहिब जी : 'वे नाम' शरणी आ हुआ उद्धार।।

1033 हीरा जन्म अनमोल पाया प्यारो, सुरति ''वे नाम'' सब्द है गाती रे।
यह सब्द ''वे नाम'' जी प्यारो, चेतन सुरति महां चेतन सुरति संग गाती रे।
साहिब जी : दासन सुरति साहिबन सुरति में रे।।

1034 सतगुरू पाया निज सूझी पछानी, सुरति ''वे नाम'' सब्द गुण गाती।
सत्यपुरूष जाना पासा प्यारो, चेतन सुरति साहिबन के गुण गाती।
साहिब जी : तीन लोक से पार हो आती।।

1035 सतगुरू सेवक अमृत रस पीवे प्यारो, निगुरा दुखी प्यासा जग रहता।
हर पल मगन सुरति धारा में प्यारो, सत्यपुरूष महां चेतन सुरति में रहता।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सुरति धार में बहता।।

1036 जब से ''वे नाम'' सब्द दात है पाई, सुरति हर पल 'सब्द' में रहती।
दास कहे एक आस चेतन सुरति की, साध को भी पल पल है जगाती।
साहिब जी : चेतन सुरति में महांचेतन सुरति आन समाती।।

1037 सत्संग सात सुरति की सुरति प्यारो, ता से सात सुरति रस पी।
पहले लागे मन माया कुछ डोले प्यारो, पाछो सुरति अमृत रस पी।
साहिब जी : निजघर परमहंसा अमृत रस पी।।

1038 मन मान गर्व मत कीजे प्यारो, सुरति में रहना काम महान।
जग में आया सत्यपुरूष को पा ले प्यारे, सतगुरू चरणन की महिमां महान।
साहिब जी : जो दिखता सो स्वपनों समान।।

1039 दृष्टि सतगुरू आंखों में डाल प्यारा, आंखों में महां चेतन सुरति की धार।
'वे नाम' कहे साहिबन को पा लो प्यारो, सतगुरू चेतन सुरति निज में धार।
साहिब जी : सुरति में पा ले महां चेतन सुरति की धार।।

1040 जे तूं चावें मोक्ष जगत में प्यारे, ''वे नाम'' सब्द को पाई रे।
जैसे चात्रक धन को रटत है प्यारो, वैसे सतगुरू चरण सुरति राखो रे।
साहिब जी : पूर्ण सतगुरू शरणगत दुख हर लेई रे।।

1041 जैसे पपीहा स्वाति नक्षत्र की बूंद को प्यारो, रटता रहता ले जान।
उसी अनुसार साधक सुरति में प्यारो, ''वे नाम'' सब्द धुण सुरति जान।
साहिब जी : सुरति धुन से टूटे मन का मान।।

1042 जैसे सोना मिलत सुहागा, वैसे आत्म मिलत ''वे नाम'' सब्द सुहाग़।
जैसे हीरा तराश जाई, ''वे नाम'' सब्द सुरति सुहाग़।
साहिब जी : जैसे पारस लोहे का सुहाग़।।

1043 मैं राजी भयो सुरति सब्द संग प्यारो, मिले पिया महांचेतन सुरति साथ।
सुरति चेतन करने की कृपा करी प्यारो, सतगुरू साहिबन पायो साथ।
साहिब जी : सतगुरू कृपा हुई ईक साथ।।

1044 सात रंग का चोला रंग मेरे प्यारे, मिला एक से सात सुरति का भेद।
सतगुरू सब्द पाया निज सुरति, ध्यान धुन में लगने का पाया भेद।
साहिब जी : साहिबन सुरति का सुरति से पकड़ा भेद।।

1045 जब ही साहिब आये कुटिया में, पाया हर ओर महां चेतन सुरति धार।
उनका रूप अति देत उझाला, अंदर की आंख ने देखी महां सुरति धार।
साहिब जी : कई बार दर्श पाया सुरति धार।।

1046 सुरति कैसे एक होई रे प्यारे, मैं कहता सुरति आंखन की देखी।
तूं कहता कागद की लेखी, तन की आंखों की भी ना देखी।
साहिब जी : मैं कहता चेतन सुरति से महां चेतन सुरति की देखी।।

1047 सत रज तम गुणों की भक्ति प्यारो, लाखों जन्मों से भूला परयो संसार।
कहें 'वे नाम' ''वे नाम'' सब्द बिन, कोई ना देखा साहिबन दरबार।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द दात बिन नाहिं कोई पार।।

1048 जा के तन मन नहीं प्यारो, रूप रेख से न्यारा।
पुहूप बास तें पातला प्यारो, महां चेतन सुरति रूप प्यारा।
साहिब जी : रूप धारें वे वर्णन से बाहिरा।।

1049 साहिब तो सब हंसों का एक प्यारो, दूजा तीन लोक का प्यारा।
साहिब तो महां चेतन सुरति की धारा, काल भगवन मन रूप न्यारा।
साहिब जी : अमर लोक ही सच्चा देश हमारा।।

1050 ''वे नाम'' सब्द प्रकाश साहिबन का प्यारा, दूजा एक ना और सहारा।
दूजा साहिब जे कहूं, और कोई ना मेरा सहारा।
साहिब जी : साहिबन नूर न्यारा।। (सब्द प्रकाशी रूप)

1051 कस्तूरी का ज्यों मृग में वासा प्यारो, त्यों पुहुपन में वास।
आत्म सुरति का वासा घट में प्यारो, निरति का जैसे स्वांसा में वास।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द से सुरति निरति का स्वांसा में वास।।

1052 ज्यों नैनन में पुतली प्यारो, त्यों सुरति घट माहिं।
सोये नर को कुछ भेद ना प्यारो, बिन हंसा तीन लोक माहिं।
जग तो उससे खाली पड़ा प्यारो, सुरति तो घट ही माहिं।
''वे नाम'' सब्द की दात बिना प्यारो, देखा जाई नाहिं।
साहिब जी : सुरति निरति मेल बिना हंसा नाहिं।।

1053 जो देखे सो कह सके ना, उनसा और कोई नांहि।
सुने सो परखे उन्हें कैसे, परख बिन कहना सुनना कुछ नांहि।
साहिब जी : आंख मुख नाक की बात कुछ नांहि।।

1054 दीठा है तो कैसे समझाओ प्यारो, कहुं तो झूठ कहलाये।
जैसे हैं वैसे रहने दो, चेतन सुरति सूं गुण गाये।
साहिब जी : उन को पाये गुण गाये।।

1055 पिया बिन सुरति कैसा सुख पावे, विरह व्यथा तन खाई।
''वे नाम'' सब्द मेटि दुहाग प्यारो, सुहागिन करि जाई।
साहिब जी : चेतन सुरति संग सुरति एक हो जाई।।

1056 ईक पल बिछोड़ प्यारो, कौटि योग जाई।
कौटि योग बिछोड़ा प्यारो, कयामत ही कटि जाई।
साहिब जी : सुहागिन होने में देर मत लाई।।

1057 जो जन निरालम्ब संग रते प्यारो, और संग प्रीति वैसी नांहि।
कृपा निधि पुकार देत हूं, प्राण भी अब तुझ बिन नांहि।
साहिब जी : बिन ''वे नाम'' सब्द पार कोई नांहि।।

1058 हर हंसा साहिबन अंश प्यारो, ''वे नाम'' साहिबन दास कहलाये।
निज को जानो अंश साहिबन का, दात को पाये दास कहलाये।
साहिब जी : मन मान से पार हो जाये।।

1059 प्रेमि बनने पर प्यारो, दुख भी सुख का अंग।
यह तो मन का खेल प्यारो, मन माया के जानो अंग।
साहिब जी : तीन लोक मन माया की तरंग।।

1060 प्रेम संग अच्छे बुरे में प्यारो, भेद तो कुछ भी नांहि।
हर हंसा तीन लोक में प्यारो, बिन प्रेम कुछ और नांहि।
साहिब जी : अंतर दृष्टि में कुछ भेद नांहि।।

1061 प्रेम प्रीति सूं तीन लोक प्यारो, तांहि सूं जान हंसा रूप।
प्रेम सूं औंकार बेटे साहिबन के, पांचवे बेटे का पाया रूप।
साहिब जी : प्रेम सूं प्रकटा प्यारा हंसा रूप।।

1062 प्रेम उपझे सतगुरू दर्शन प्यारो, प्रेम सत्य सुरति आनंद।
प्रेम में सतगुरू जोति प्यारो, सुरति प्रीत देत आनंद।
साहिब जी : जहां प्रेम विश्व सत्य जहां ही जान आनंद।।

1063 काम क्रौध दुख दर्द प्यारो, यह तो मन माया के अंग।
ये सुरति के ना अंग प्यारो, तीन लोक में मन तरंग।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द महां चेतन सुरति तरंग।।

1064 दृष्टा सतगुरू जान प्यारे, अदृष्टा ''वे नाम'' सब्द की दात।
दृष्टा अदृष्टा 'वे नाम' प्यारो, विश्वास जगावे प्रेम आनंद सत।
साहिब जी : सतगुरू गुण गावे सुरति जगावे हर और सत।

1065 औंकार पंच तत्व के रथ रचेता प्यारो, सुन्न में जान औंकार का वास।
चरण कमल 'वे नाम' लिव लाई रहियो, गुण गावे कोई सतगुरू प्यारा दास।
साहिब जी : साहिबन वासा तेरे संग जब जाग विश्वास।।

1066 मन कारण जब जग भुगते प्यारो, धर्म अधर्म में अटका नर जान।
काम क्रौध मद्य लोभ प्यारो, काल की लगाम ले जान।
साहिब जी : तीर्थ व्रत जप तप से पार मत जान।।

1067 सच्ची भक्ति 'वे नाम' दास से, जान मेरे भाई।
''वे नाम'' सब्द बिन जो कुछ करिये, सो सब भ्रम मेरे भाई।
साहिब जी : ऋद्धि सिद्धि का संग छूटा मेरे भाई।।

1068 भक्ति सतगुरू की करो मेरे भाई, जब भक्ति तब गई बड़ाई।
जो बूझे सो पार प्यारो, जब ''वे नाम'' दात हो पाई।
साहिब जी : सतगुरू कृपा पा ले मेरे भाई।।

1069 नवो नाथ चौरासी सिद्ध प्यारो, जानो अनहद ज्ञानी।
सच्ची वाणी ''वे नाम'' सब्द की प्यारो, यह दात विरले ही पहचानी।
साहिब जी : एकले से एकले 'वे नाम' ने जानी।।

1070 जल में जल होकर जो रहता प्यारो, वे ही प्रेमि कहलाता रे।
पानी में जो मीन बन जाता, मन ही कहलाता रे।
साहिब जी : महां चेतन सुरति में सतगुरू वे ही रूप बन जाता रे।।

1071 जब तक सतगुरू 'वे नाम' की निंदा नांहि प्यारो, तब तक साहिबन प्यारा नांहि।
निंदा उपझे सतपुरूष संग में, लालों का लाल साहिबन प्यारा वे ही।
साहिब जी : तब लालों का ला वे ही।।

1072 संत हंसे तो जग पागल कहता प्यारो, राये तो मूर्ख ले जान।
शांति से जब बैठें सतगुरू, बिमार उन्हें लेते वे जान।
साहिब जी : जग में कोई भी सुखी मत जान।।

1073 निःअक्षर 'वे नाम' सूं पावे प्यारो, क्षर अक्षर मन मान की धारा रे।
जो पावे सच्चा भक्त कहावे प्यारो, अब सत्यपुरूष का जान प्यारा रे।
साहिब जी : अब पक्के का पक्का सुरति धारा रे।।

1074 सुरति तो अनमोल है, जो सतगुरू को लेता तोल।
चेतन सुरति तराजू जान प्यारे, अब सुरति सूं कर मोल।
साहिब जी : महां सुरति से होता तोल।।

1075 बड़ी बड़ाई ''वे नाम'' सब्द की प्यारो, जैसे चुम्भक लोहा उठाये।
बिन सब्द सुरति चेतन नहीं प्यारो, केता कोई करे उपाये।
साहिब जी : परम सुरति ही सुरति को निजघर ले जाये।।

1076 सतगुरू से ''वे नाम'' सब्द पाकर प्यारो, नर पूर्ण ही हो जाता है।
जग का आकर्षण छूट जाता प्यारो, पक्का साधक बन जाता है।
साहिब जी : अभी नहीं सतगुरू का प्यार कच्चा ही कहलाता है।।

1077 जैसे बच्चे में मात पिता के गुण प्यारो, आत्म में सत्यपुरूष गुण ले जान।
दिव्य शक्ति आध्यात्मिक शक्ति नहीं प्यारो, आध्यात्मिक शक्ति आत्म की जान।
साहिब जी : चेतन सुरति में साहिबन वासा ले जान।।

1078 महां कारण कमाल का तन प्यारो, योगी इसे पाते ले जान।
इस तन में ब्रह्माण्ड की यात्रायें, तीसरे तिल में प्रवेश ले जान।
साहिब जी : दसवें द्वार का खुलना ले जान।।

1079 चलने बोलने सुनने का प्यारो, आभास होता ले जान।
योगी योग से प्यारो, यह तन पाते ले जान।
साहिब जी : दास ने इस तन में ब्रह्माण्डों की करि पहचान।।

1080 ज्ञान देही पांचवा तन प्यारो, योगी इस तन में ब्रह्मनिष्ठ ले जान।
अहं ब्रहस्मि का प्रयोग प्यारो, ब्रह्मण्ड रचन द्वारा ले जान।
साहिब जी : दास ने इस तन को भी महिमां ली जान।।

1081 इस तन में कई लोकों की प्यारो, यात्रायें करी महान।
चटट्‌ान को भी पार किया प्यारो, निरंकार भगवन के दर्शन महान।
साहिब जी : पांच रंग का सूर्य दिखता महान।।

1082 छटा तन विज्ञान देही प्यारो, अत्यन्त तीव्र गामी तन मिलता महान।
यह अत्यन्त सूक्ष्म तन प्यारो, तीन तीन लोक की सैल महान।
चट्‌टान को भी पार है करता ओम की जोत दिखे महान।
साहिब जी : महां सुन्न की सैल करता महान।।

1083 ''वे नाम'' सब्द जब पास में प्यारो, तीन लोक का स्वामी नवावे माथ।
क्षर अक्षर के पार प्यारो, सुरति का जब चेतन सुरति से साथ।
साहिब जी : महां चेतन सुरति का जब संग साथ।।

1084 प्रीत बहुत संसार में प्यारो, नाना विधि की सोये।
उतम प्रीति सो जानिये, सतगुरू से जो होये।
साहिब जी : सतगुरू में जानो सोये।।

1085 यह संसार मन माया का देश प्यारा, ''वे नाम'' सब्द बिन बने ना बात।
सकल पसारा मेट कर प्यारे, त्रिकुटि मध्य दीदार की बात।
साहिब जी : पल पल सुरति संग चेतन सुरति की बात।।

1086 अस्तुति निंदा गई जब प्यारो, बैरी मीत एक समान ।
सुरति सब्द सूं चेतन भयी, मुक्ति का मिलता दान।
साहिब जी : आओ चले निजधाम महान।।

1087 सतगुरू सत्यपुरूष तो एक हैं प्यारो, दूजा सब मन माया आकार।
आपा तज 'वे नाम' भजे, तब पावे साहिबन दीदार।
साहिब जी : सतगुरू दीदार से पार।।

1088 प्रेम प्रेम कोई सब्द नहीं प्यारो, जब तक ना अंदर सतगुरू दीदार।
''वे नाम'' सब्द से मार्ग मिले प्यारो, दीदार से उस पार।
साहिब जी : प्रेम ही तुम जब बनो तीन लोक से पार।।

1089 ''वे नाम'' सब्द ही सार सब्द प्यारो, इसी में साहिबन वास।
इस महां चेतन सुरति में जो डूबता प्यारो, पल में साहिबन पास।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द ही राखे साहिबन पास।।

1090 ध्यान करना है तो सतगुरू रूप का, सच्ची पूजा उनके चरणन।
मन माया सुरति सब्द सूं छूटते, मोक्ष मिलता मिलें सतगुरू दर्शन।
साहिब जी : सतगुरू दर्श ही जान परमपुरूष दर्शन।।

'वे नाम' कहत है :– प्रेम सुरति धारा

''साहिब सतपुरूष जी'' सब हंसों के मूल प्रेम सुरति महांसागर हैं, 'हंसा' भी ''साहिब सतपुरूष जी'' का अंश होने के कारण सुरति रूप ही है। बिन हंसा रूप पाये जीवात्मां कभी भी प्रेम कर ही नहीं सकती। प्रेम तो मन माया और काया से परे का विषय है, जगत प्रेम किसी ना किसी स्वार्थ वश उत्पन्न होता है, जगत प्रेम प्रेम ना होके स्वार्थ सिद्धि का एकमात्र साधन है। जब तक जीवात्मां (आत्मां–मन माया=हंसा) स्वार्थ सिद्धि त्याग ना दे, वो प्रेमी हो ही नहीं सकता। मन माया से युक्त होने पर जीव चाह कर भी मन माया का परित्याग नहीं कर पाता। जीवात्मां सहज सतमार्ग के पूर्ण सतगुरू जी की शरणी आकर ही स्वार्थ का परित्याग कर के अपने अंदर प्रेम जाग्रत कर सकता है। सतगुरू जी इस धरा पर ''साहिब सतपुरूष जी'' का प्रतिनिधित्व करते हैं अर्थात वह इस धरा पर स्वयं साहिब सतपुरूष जी ही होते हैं तथा साहिबन स्वरूप होने से वह सुरतिवान अवस्था में होने के कारण महां प्रेम सागर होते हैं। यही निस्वार्थ प्रेम वह साहिबन विदेह सब्द की दात प्रदत करके अपने शरणागत के भीतर प्रज्जवलित करते हैं।

1091 साहिब चित्तवत हर हंसा को, पल पल चित्तवत संसार।
कहे 'वे नाम' कैसे निभे, खोये खोये बीच विचार।
साहिब जी : खोये खोये बीच विचार।।

1092 सुरति निरति घट घट समाई है, जैसे कस्तूरी मृग कुण्डल में जान।
ऐसे स्वांस स्वांस में प्राण हैं, सतगुरू सूं होत पहचान।
साहिब जी : बिन सतगुरू ना होत पहचान।।

1093 ईंगला विनसे पिंगला विनसे, चेतन सुश्मिन नाड़ी जान।
सुरत कमल में ताड़ी लागे, पूर्ण सतगुरू की कर पहचान।
साहिब जी : पूर्ण सतगुरू की कर पहचान।।

1094 औंकार का तहां वास ना, तहां ना मन मान पसार।
सतपुरूष सब हंसों का पिता, अनह्द शब्द से पार।
साहिब जी : ऐसा देस हमार।।

1095 पोप वास से पातला, वायु से अति झीन।
जल से उतावला है, ''वे नाम'' सब्द में वासा जान।
साहिब जी : हर स्वांस स्वांस में ले जान।।

1096 सुरत कमल लोक सतगुरू का, पूर्ण मोक्ष द्वार।
उल्टा जाप जब होत है, पूर्ण मोक्ष उस पार।
साहिब जी : निजघर निजधाम उस पार।।

1097 सुश्मिन भेद 'वे नाम' सूं, पावे कोई सच्चा साध।
''वे नाम'' सब्द दात बिन, कोई ना उतरे उस पार।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सूं पार।।

1098 उस पार त्रिदेव भी, पंच शब्द में अटके जान।
मन मान के चक्कर में, जन्म मरन में अटके जान।
साहिब जी : काल जाल में अटके जान।।

1099 पंच शब्द से आगे है, अमर सतपुरूष का देस।
जाने कोई सांचा साध, अमरपुर का भेद।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष का देस।।

1100 सतगुरू दिव्य दृष्टि् पहचान कर, जब सतगुरू सब्द संग साथ।
मन माया धुंध हट गई, महांचेतन सुरति संग साथ।
साहिब जी : पल में सतगुरू सुरति संग साथ।।

क लाली मेरे लाल की, जित देखूं तित लाल।
लाली वेखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।
साहिब जी : मैं भी हो गई लाल।।

1101 बिन सतगुरू ना जागे अंतरा, जन्म जन्मांतर का लेखा साथ।
स्वपन जो याद है, जागन पर मन छुड़ावे बात।
साहिब जी जन्म जन्म की बात।।

1102 सुरति से पत्तियां लिखूं, 'वे नाम' जो आये उस देस।
नैनों में कानों में, आवे प्रेम संदेश।
साहिब जी : पल पल आवे प्रेम संदेश।।

1103 सब घट साहिबन जोत है, खाली घट ईक ना जान।
बलिहारी उस घट की, जा घट प्रेम महान।
साहिब जी : भक्ति प्रेम महान।।

1104 ''वे नाम'' सब्द ही सतपुरूष जानिये, महां चेतन सुरति दात।
निर्गुण सर्गुण भक्ति से पार है वह, महां चेतन वह दात।
साहिब जी : सीमा रहित महां चेतन वह दात।।

क सुख में सिमरन ना किया, दुख में करता याद।
कहे साहिब सो दास की, कौन सुने फरियाद।
साहिब जी : अब कौन सुने फरियाद।।

1105 तीन लोक से आगे की, सतगुरू 'वे नाम' देत पुकार।
अमर कहि जो कोई मान लेई, तीन लोक से पार।
साहिब जी : आओ चलें उस पार।।

1106 जो खाली सो भरा हुआ, जो भरा खाली जान।
तिन की तब पहचान हो, दोनों में ले उसे जान।
साहिब जी : निजघर की कर पहचान।।

1107 जब भरा था तब प्रेम नहीं, अब प्रेम है मैं नांहि।
मैं और तुम का होना गया, अब प्रेम बिन और कुछ नांहि।
साहिब जी : प्रेम बिन कुछ नांहि।।

1108 जब मैं है तूं भी संग है, मैं और तूं मन मान।
प्रेम में दोनों बह गये, अंदर बाहिर से महां सागर जान।
साहिब जी : प्रेम भक्ति पार ले जान।।

1109 तुझ में प्रेम सुरति महां सागर भरा, मन मान तुच्छ समान।
सतगुरू से आप जान ले, प्रेम भक्ति बिन धोखा जान।
साहिब जी : प्रेम भक्ति से भव पार जान।।

1110 सतगुरू पान में विलम्भ ना कीजिये, चेतन सुरति संग महांसागर जान।
प्रेम भक्ति में रहना स्वभाव तेरा, तन मन से लेन ना देन।
साहिब जी : अमृत पान ही सच्चा दान।।

1111 प्रेम प्यासी अखियां तेरी, काम प्रेम से लेन ना देन।
सुरति सच्ची प्रेम भक्ति पारस है, मान का प्रेम से लेन ना देन।
साहिब जी : माया का प्रेम से लेन ना देन।।

1112 जो जागा सो जानेगा, सोया संग काल की धार।
सतगुरू बिन पहचान ना, महां चेतन सुरति की धार।
साहिब जी : हर सुरति उसी की धार।।

1113 वियोग में साहिबन के, जो सहे अति दुख महान।
प्रेम भक्ति सहारा तेरा, सच्चे प्रेम में छोड़ अभिमान।
साहिब जी : सच्चा प्रेम छुड़ावे मन मान।।

1114 'वे नाम' प्रेम घर अति दूर है, निजधाम निजघर अति महान।
महां प्रेम सब्द की दात सूं, महां प्रेम सागर में समाना ले जान।
साहिब जी : निज का मिटना महान ले जान।।

1115 'वे नाम' प्रेम घर अति दूर है, महां प्रेमी का घर निजधाम।
बिन ''वे नाम'' सब्द बात बने नांहि, मन मान मिटावे नाम।
साहिब जी : सतपुरूष का सच्चा धाम।।

1116 'वे नाम' प्रेम अति दूर है, महां प्रेमी का घर निजधाम।
महां प्रेम की सब्द की दात सूं, महां प्रेम साग़र में समाना जान।
साहिब जी : प्रेम साग़र में समाना जान।।

1117 'वे नाम' प्रेम घर अति दूर है, निजघर निजधाम महान।
बिन ''वे नाम'' सब्द बात बने नांहि, मन छुड़ावे मन धाम।
साहिब जी : नाम मिटावे मन मान।।

1118 राम जपूं रहीम जपूं, रहीम जपूं ना राम।
सुरत सब्द में हर पल रहुं, नाम में ही विश्राम।
साहिब जी : नाम में पाऊं विश्राम।।

1119 आत्म नाम प्रेम भक्ति धारा है, सब्द घट भीतर प्रेम।
सुरती प्रेम सब्द में डाल दे, गोते गोते में प्रेम।
साहिब जी : सतगुरू चरणों में प्रेम।।

1120 धरती गगन पवन पानी, हर एक में सुरति प्रेम।
लेन देन का अब काम नांहि, भर अपनी सुरति में प्रेम।
साहिब जी : स्वांस स्वांस में प्रेम।।

1121 प्रेम में बिन बादल बरखा़ नांहि, प्रेम ऋतु बारहां मास।
बाजे प्रेम नगाड़ा गगन में, बाजे अनहद् बारहां मास।
साहिब जी : प्रेम बसे हर स्वांस की स्वांस।।

1122 प्रेम संदेसा सुरति का, बाजत है बिन रैन।
काम क्रौध सितम छूटा नांहि, अंदर कैसे चैन।
साहिब जी : प्रेम भक्ति की टूटी तान।।

1123 श्री कृष्ण प्रेम भरमा गया, नर भटका ले तूं जान।
नर अपने अपने ढंग से दे रहा, अपनी अपनी पहचान।
साहिब जी : हर एक जाती में अटका जान।।

1124 परमात्म दूर से दूर है, और पास से भी पास।
हर एक का अपना विश्वास ही, प्रेम की डौरी पास।
साहिब जी : प्रेम भक्ति के पास।।

1125 सुख दुख विकार से मुक्त जो, प्रेमी जान महान।
वह शांत चित्त परमात्म सम, प्रेम भक्ति में लीन।
साहिब जी : साधक प्रेम भक्ति में लीन।।

1126 संकल्प विकल्प कर्म जब, बुझे दिये समान शांत ले जान।
सुरति सम रूप है, संकल्प विकल्प छूटा ले जान।
साहिब जी : जग छूटा ले जान।।

द दरिया सतगुरू सब्द सूं, मिट गई खींचा तान।
भ्रम अंधेरा मिट गया, हंसा पद निर्वाण।
साहिब जी : पाओ हंसा पद निर्वाण।।

1127 लख चौरासी भुगत कर, मानस देहि पाई।
राम नाम ध्याया नांहि, तो ही चौरासी आई।
साहिब जी : नाम जपि तो चौरासी छुट जाई।।

1128 सच्ची दात पाई के, आवागमण मिट जाई।
प्रेम पद ''वे नाम'' दात सूं, पूर्ण मोक्ष मिल जाई।
साहिब जी : निजघर अपने जाई।।

1129 'वे नाम' उपदेशी जब मिले, अंदर के खुलें कपाट।
दया सतगुरू बिन, कौन बतलावे बाट।
साहिब जी : बिन सतगुरू कोई ना दिखावे बाट।।

क जपा मरे अजपा मरे, अनहद् भी मर जाये।
सुरत समानी सब्द में, काल के हाथ ना आये।
साहिब जी : निजघर अपने जाये।।

क पारस और संतन में, बड़ा ही अंतरों जान।
पारस लोह कंचन करे, सतगुरू करे आप समान।
साहिब जी : साधक को से सतगुरू करे आप समान।।

क सात द्वीप नौ खण्ड में, गुरू से बड़ा ना कोये।
हरि रूठे तो ठौर है, गुरू रूठे नांहि ठौर।
साहिब जी : गुरू बिन मिले ना ठौर।।

1130 सात द्वीप नौ खण्ड में, सतगुरू से बड़ा ना कोये।
सतपुरूष ना कर सकें, सतगुरू करें सो होये।
साहिब जी : सतगुरू से बड़ा ना कोये।।

1131 बंदे को बंदा मिला, सुरति खोल उपाय।
कर सेवा 'वे नाम' सतगुरू की, पूर्ण मोक्ष दे जायें।
साहिब जी : अमरपुर देश ले जायें।।

1132 'वे नाम' सुरति तो एक है, निजघर से ये आई जान।
पार होना सतगुरू भक्ति करो, सब्द का पा लो दान।
साहिब जी : सब्द की दात महान।।

1133 प्रेम भक्ति को जानकर, और सब्द दियो बहाये।
''वे नाम'' सब्द सूं मन मान दे बहायें, पूर्ण मोक्ष पा जायें।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सूं, पूर्ण मोक्ष पा जायें।।

1134 ''वे नाम'' सब्द पाया, सब पाया ले जान।
''वे नाम'' सब्द जे ना जानेया, सब पाना जान अजान।
साहिब जी : साहिबन संग साथ ले जान।।

1135 सुरति के निज सार को, ता से जान मन माया सार।
सुरति ''वे नाम'' सब्द में डाल दें, वे आप ही तेरे साथ।
साहिब जी : वे आप सभी संग साथ।।

1136 हर घट वासा साहिबन का, खाली एक ना जान।
प्रेम भक्ति प्रवेश उस घट में, संग साहिब का नाम।
साहिब जी : नाम में साहिबन महान।।

1137 हर एक में वासा साहिबन का, चकमक में आग वे ही जान।
सब में वासा उस एक का, ''वे नाम'' सब्द से जाग।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सब को जगावन हार।।

1138 मोहे ''वे नाम'' सब्द सतपुरूष दिया, महां चेतन सुरति का बीज।
सत प्रेम आनंद का रूप मिला, जब पाया सच्चा बीज।
साहिब जी : सत सुरति आनंद मिला।।

1139 झूठा मन मान भ्रम छुड़ाई के, चेतन सुरति से दिया प्रेम सब्द।
मृत्यु का स्वरूप देख कर, पकड़ाया ''वे नाम'' सब्द।
साहिब जी : सुरति सूं दिया ''वे नाम'' सब्द।।

द सुरति त्यागी बहुत मिले, दृष्टि मिले अनंत।
दरिया ऐसा ना मिला, राम रटा कोई संत।
साहिब जी : राम रटा संत ना मिला।।

द वक्ता श्रोता दोनों मिले, करते खींचा तान।
दरिया ऐसा ना मिला, सन्मुख देवे बाण।
साहिब जी : सन्मुख देवे बाण।।

द बाहर का घाव दिखे नांहि, भीतर से चकनाचूर।
दरिया बांध गुरू सेव को, कोई देवे सुरत सब्द को।
साहिब जी : रोम रोम में पीड़।।

1140 प्रेम चोट ''वे नाम'' सब्द की, कहे दास महान।
जा घट सीधा वो करे, सतगुरू की चोट महान।
साहिब जी : सतगुरू की चोट महान।।

1141 विरल भांवरी पी प्यार के रोग में, डूंढे अंदर बाहर जाये।
खाली की खाली रहे, पुकार पे पुकार लगाये।
साहिब जी : पी का विछोड़ा खाये।।

1142 विरल की सुरति विरह वैराग़ में, पल पल धकेले अरमान।
अपने पिया के कारणे, स्वांस स्वांस में आन।
साहिब जी : हर स्वांस स्वांस में आस।।

1143 'वे नाम' साहिब कृपा करि, विरल स्वांस स्वांस की स्वांस।
विरल की प्यास बड़ती गई, अब सतगुरू बुझावे प्यास।
साहिब जी : सतगुरू ही बुझावे प्यास।।

1144 विरल व्यापी ह्रदय में, स्वांस स्वांस संग साथ।
नाम दात को पाया नांहि, सुरति संग छूटा साथ।
साहिब जी : सुरति संग छूटा मन साथ।।

1145 'वे नाम' आत्म मल गई, ''वे नाम'' सब्द सूं निर्मल होई।
साबुन लगावें 'वे नाम' का, सुरत सिला पर निर्मल होई।
साहिब जी : सतगुरू धोबी कहलाई।।

1146 ''वे नाम'' सब्द स्वांस स्वांस ले, दूजा नांहि ध्यायें।
'वे नाम' ऐसे साध पर, प्रेम की चोट काम कर जाये।
साहिब जी : प्रेम की चोट सुरति चेतन कर जाये।।

1147 ''वे नाम'' सब्द सुरति रहे, सभी धर्म का मूल।
'वे नाम' केवल गुरू से, संशय मिटे ना शूल।
साहिब जी : संशय ना हो दूर।।

1148 ''वे नाम सब्द सिमरा नांहि, चौरासी छूट ना पाई।
चौरासी के जाल सूं, मन मान का संग ना जाई।
साहिब जी : सतगुरू चौरासी आन छुड़ाई।।

1149 चौरासी भवजल अगम का, संशय मोह की बात।
सतगुरू की प्रेम डौर पकड़ लो, लगावे प्रेम भक्ति की बाढ़।
साहिब जी : सतगुरू प्रेम भक्ति का द्वार।।

1150 काग से हंसा ''वे नाम'' सब्द से, ऐसी महिमां सब्द की जान।
हर नर रंग कुरंग में खोया प्यारो, ता से हर कोई बे हाल ले जान।
साहिब जी : बिन सब्दे जग माया में डूबा जान।।

1151 सिद्ध साद्ध मूल रूप जाना नहीं, गौण रूप में मन मान संग ले जान।
जब गौण रूप में मन समाविष्ट प्यारो, हंसा आत्म रूप ले जान।
साहिब जी : मन छल कपट करावे आत्मां सात्विक ले जान।।

1152 चल हंसा निज लोक को, छोड़ो मृत्यु लोक संसार।
तीन लोक काल का संग प्यारो, कर्म काण्ड जानो संसार।
साहिब जी : जागो तो छूटे मृत्यु लोक संसार।।

1153 उठ सवेरे बांवरे, अनमोल जीवन नित जाये।
घर तेरा अति दूर है, ''वे नाम'' सब्द ले जाये।
साहिब जी : बिन सब्दे अभिमान ना जाये।।

1154 चेतन हो सुरति अंतःकरण भूली प्यारो, पार्थिक तन तजने पर भी संग साथ।
जिस लोक जाओ यादें साथ प्यारो, स्वर्ग लोक में भी संग साथ।
साहिब जी : मन भक्ति में आशा तृष्णा संग साथ।।

1155 ग्याहरवें द्वार से सुरति निकासा, सत्यपुरूष संग संग अमरलोक जाई।
भवसागर का संग छूट जाई, जन्म मरण से पार हो जाई।
साहिब जी : मन माया का संग छूट जाई।।

1156 दशम द्वार से प्राण जब निकासा, स्वर्ग लोक में पावे वासा।
जग में आवे राजा हो जावे, प्रसन्न मुख जन्म जग वासा।
साहिब जी : फिर प्यासे का प्यासा।।

1157 श्रवण द्वार से प्राण जब जाई, तत्काल प्रेम देहि पाई।
प्रेत की आयु प्यारो, एक हज़ार वर्ष से कम नहीं भाई।
साहिब जी : अति दुख देई मल जाई।।

1158 दशम द्वार से प्राण जब जाई, स्वर्ग महांसुन्न आदि लोकों में वासा जान।
लाखों वर्ष वहां रह कर प्यारो, मृत्यु लोक में राजा का जन्म ले जान।
साहिब जी : राज योग भौग मृत्यु लोक में जन्मता ले जान।।

1159 जड़ चेतन जीव प्यारो, निरालम्भ राम में जान रे।
आत्म व्यापक सर्वत्र समाना, बिन आत्म एक ना जान रे।
साहिब जी : बिन आत्म कोई ना जाने रे।।

न अति सुन्दर कुलीन चतुर्मुखि, डायनी धनवंत रे।
मृतक कही आही नानका, तोही जिह प्रीति नहीं भगवंत रे।
साहिब जी : जग में सच्चा केवल संत रे।।

1160 संत भक्ति–दान है मांगता, भक्ति से भक्तों की होती पहचान।
माया का संग छूट गया प्यारो, सपनों में भी ना आती जान।
साहिब जी : माया सपनों में भी ना आती जान।।

1161 जप तप तीर्थ व्रत्त से प्यारो, पार होत ना कोई एक रे।
'वे नाम' सार नाम भजे बिन प्यारो, कोई ना जाता पार रे।
साहिब जी : सार सुरत नाम बिन नहीं कोई पार रे।।

1162 चारों गुण तीनों काल में प्यारो, सार सुरत नाम बिन नहीं उपकार रे।
सब संतन का यही मत्त प्यारो, पुण्य कर्मों से नहीं कोई पार रे।
साहिब जी : प्रेम भक्ति बिन कोई नाहीं पार रे।।

1163 करे भक्ति ''वे नाम'' सब्द बिन, सब्द सुरति स्वांसा धार से कोई पार रे।
सुमिरन सुरति स्वांसा संग प्यारो, एकाग्रता लाने से ही कोई पार रे।
साहिब जी : सतगुरू करते मोक्ष जहाज का काम रे।।

1164 वेद हम्हें धर्म अर्थ काम तथा, मोक्ष का मार्ग देते बतला।
ध्याण योग विधियों पर चलते हुऐ, चार मोक्ष दिये बतला।
साहिब जी : वेद ना जाने परमपुरूष फिर कैसे दें बतला।।

1165 यह चार मुक्तियां बंधन में डालती, पूर्ण मोक्ष का मार्ग नाहिं।
सार सब्द दात के बिना, कभी भी मोक्ष नाहिं।
साहिब जी : औईम से आगे चौथा लोक जानत नाहिं।।

1166 जो कुछ तेरा सौंप सतगुरू को, वे तेरे ही हो जायेंगे।
तेरा मेरा सब गया, साहिब ही तुझ में आन समायेंगे।
साहिब जी : सतगुरू पाओ तो सब पा जाओगे।।

1167 बिन सतगुरू सार सुरत नाम के, जीव कैसे जग में जागे।
निजधाम सतपुरूष आप हैं, नर जागे जब पारस सुरति बाण लागे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सुरति चेतना लाये।।

1168 मूर्ख नर निज को जानत नांहि, करे ना सतगुरू खोज।
सतगुरू उनको पार लगाते, जो सतगुरू की करते खोज।
साहिब जी : कोई प्यासा खोजी ही करता सतगुरू खोज।।

1169 मन को कोई देख ना पावे, हर पल नाच नचाये।
अंधकार में वास है इसका, फिर कैसे दिख पाये।
साहिब जी : मन अंधकार दिख ना पाये।।

1170 मन माया का खेल जग सारा, हर पल रखे उलझाये।
सतगुरू पूरे बिन जग में, कोई इनसे बच ना पाये।
साहिब जी : बिन सतगुरू मन भरमाये।।

1171 जग में कर्म ही कण्डा तराजू, कर्म ही तौलनहार।
कर्म आप ही लेवे आप ही देवे, कर्मन का सब पसार।
साहिब जी : कर्मण फल महां काल देवनहार।।

1172 चाह मिटी चिंता मिटी, जब मन मिटा संग साथ।
पारस सुरति स्वांसा में, अब एक का ही संग साथ।
साहिब जी : सब्द सुरति सूं चेतना संग साथ।।

1173 घट भीतर लूट है हो रही, मन का भेद मिले ना कोये।
मन की कोई रूप ना रेखा, सतगुरू दात से जाने कोये।
साहिब जी : बिन सतगुरू मन नाच नचावे।।

1174 बिन पूर्ण सतगुरू शरण के, कोई ना पावे ''वे नाम'' सब्द की दात।
जो संत हैं जाते निजधाम को, साहिब देते सत्य सब्द की दात।
साहिब जी : ''वे नाम'' दास पास साहिब सतपुरूष दात।।

1175 यज्ञ कर्म फल में वृद्धि करें, मोक्ष का मार्ग नाहिं।
योग ध्यान और यज्ञ सूं, चार मुक्ति का मार्ग इन माहिं।
साहिब जी : यज्ञ योग ध्यान सूं पावें चार मुक्तियां पर मोक्ष नाहिं।।

1176 बैकुण्ठ में केवल सर्वश्रेष्ठ सुख, भोग कर मृत्यु लोक है आना।
यह भी क्या कोई मोक्ष है, मन माया छूटे मोक्ष को है पाना।
साहिब जी : मुक्तियां नाहीं पूर्ण मोक्ष लक्ष्य है पाना।।

1177 जो ना माने सतगुरू वचनों की, अनुभव सूं श्रद्धा ना जागी हो।
वह जन सहज अवस्था ना पा सकें, मांगों में रूची जे ना लागी हो।
साहिब जी : सतगुरू सब्द में सुरति लागी हो।।

1178 काया सूं तीन पाप नर करता, चोरी हिंसा व्यभचार।
इन तीनों पाप कर्म में, आत्म भी सहयोगी मन वश लाचार।
साहिब जी : आत्म मन वश पड़ी लाचार।।

1179 वचन सूं तीन पाप नर कर रहा, गाली निंदा झूठ संग साथ।
इन तीन में भी आत्म का होता, सहयोग नित साथ।
साहिब जी : आत्म बेबस निभाये मन साथ।।

1180 सेवा में रह सेवा करो प्यारो, त्यागो मन माया संग विकार।
सुरति में रहना जान प्यारे, त्यागो मन संग अहंकार।
सतगुरू सब्द में प्रतीती प्यारो, सतगुरू आज्ञा में रहे आज्ञाकार।।

1181 विदेह नाम सभी जग को, बतला दिया 'वे नाम' प्यारे ने।
सतपुरूष को पाने वाले ले, निज संग निजघर ले जाने वाले ने।
साहिब जी : सतपुरूष महिमां गाई 'वे नाम' ने।।

1182 अंधकार से उत्तपति चारों की, केवल मन सुरक्षित ले जान।
पहले अज्ञान की उत्तपति, जोत से होत ना पहचान।
साहिब जी : निराकार मन अंधकार सुन्न रूप जान।।

1183 भय शंका संशय तीनों की, अंधकार से उत्तपति ले जान।
अंधकार कोई देख ना पाये, औंकार इसमें ले जान।
साहिब जी : औंकार सुन्न रूप मन ले जान।।

1184 जो हंस बन, सतलोक निजघर जाये।
वो ही केवल, सतपुरूष सतगुरू रूप में संग पाये।
साहिब जी : सतगुरू ही साधक को भव पार कराये।।

1185 वहां रहे या वापिस आये, सतपुरूष सूं भेद वह पाये।
वहां रहे परमहंस बन, सतपुरूष के दर्शन पाये।
बिन भेद के जग में आये, सतपुरूष सूं विदेह नाम की दात को पाये।।

1186 कई बार परमहंस भी जग में, आकर दर्शन दे जायें।
सतपुरूष दीक्षा देने का, भेद भी आन समझायें।
साहिब जी : सतगुरू में साहिब सतपुरूष समायें।।

1187 निजघर खर अक्षर की बात ना, निःअक्षर से सब काम।
सुरति भाषा हर हंस की, सुरति से हों सब काम।
साहिब जी : सुरति हंसा सुरति ही निजधाम।।

1188 जन्म मरन से पार जो, परमपुरूष लोक कहलाये।
हंसा बलिहारी उस पुरूष के, जिन सिरजा सब किये।
साहिब जी : सतपुरूष सुरति चहुं ओर समाये।।

1189 बिन विवेक सकल जग भरमा, मन माया सबै भरमायो।
मेहर बन सब्बन पर, सतगुरू सार दात सूं पार लगायो।
साहिब जी : 'वे नाम' जहाज भव पार लगायो।।

क ये संसार है जल रहा, चारों ओर अंगार।
संत ना आते जग में, कोई कैसे पाता पार।
साहिब जी : मन अग्नि में जल मरे संसार।।

1190 ये संसार है जल रहा, महां काल ही करन करावनहार।
''वे नाम'' नौका जो चढ़े, 'वे नाम' खेवटिया लगाये पार।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द जहाज चढ़ो तो उतरो पार।।

1191 कुछ भी नहीं करना प्यारो, प्रेम से भक्ति की सीढ़ी बनती ले जान।
सुश्मिना जब सम हो गई, उल्टि स्वांसा का चलना ले जान।
साहिब जी : कुछ भी ना करना सब पाया ले जान।।

1192 प्रीतम को पत्तियां लिखो, सुरति सूं भेजो संदेश।
तन में मन में नैनन में जो बसे, सुरति सूं पाओ संदेश।
साहिब जी : सुरति सूं पाओ संदेश।।

1193 ''वे नाम'' सब्द बिन काया विष की बेलड़ी, सतगुरू अमृत की खान।
उन्हीं में सुरति हर पल रहे, सुरति बने चेतन सुरति की खान।
साहिब जी : साहिबन देस महान।।

1194 सुमिरन की गति यूं करें, जैसे चेतन सुरति का संग।
सुश्मिन धारा बहती रहे, सुरति सब्द स्वांसा चले ईक संग।
साहिब जी : उल्टि स्वांसा का कर संग।।

1195 मन थिर तन थिर प्यारो, सुरति निरति थिर होये।
दस पवन संग साथ में, साहिबन संग सुरत कमल में होये।
साहिब जी : तन पल में मृत्तक होये।।

1196 पौथी पढ़ पढ़ जग मरा, सुरतिवान भया ना कोये।
''वे नाम'' निःअक्षर सब्द को, पढ़े सो प्रेमी होये।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सूं प्रेमी होये।।

1197 तनाव से भरा हर जीव है, विश्राम में आना कठिन ले जान।
मन संग विश्राम भी, तनाव पैदा करता ले जान।
साहिब जी : जीवत मरना ले जान।।

1198 मरना हर पल हो रहा, जीवित मरे ना एक।
जीवित मरना जब आ गया, फिर कैसे मरे वह एक।
साहिब जी : जीवित मरने से फिर मरे ना कोई एक।।

1199 जो जीवित मरे भव जल तरे, निजघर में वासा ले जान।
'वे नाम' सतगुरू साहिबन पहचान मिले, पूर्ण मोक्ष पाया ले जान।
साहिब जी : अमरपुर साहिबन देस महान।।

1200 विरोधी जग में कोई नहीं, मन माया का खेल पहचान।
पल पल में सुरति भरमाते, सच्ची भक्ति में बाधा ले जान।
साहिब जी : सच्ची भक्ति में बाधा ले जान।।

1201 सच्ची आदतें ही धारा बनें, जन्मों जन्मों को निर्मित किये जान।
नीचे की ओर बहना स्वांसों का, पुरानी आदत ले जान।
साहिब जी : स्वांसों का उल्टा चलना काम महान।।

1202 नीचे बहना सब जानते, उपर बहने का खेल ले जान।
उपर बहने की सतत चेष्ठा, ईक क्षन की चूक मत ले जान।
साहिब जी : ईक क्षन की चूक मत ले जान।।

1203 अपमान सहना ईक दिन के लिये, अंतराल का काम महान ले जान।
धन दे के मांगना नाहिं, खुद दे तो स्वीकार करना जान।
साहिब जी : दौ बातें प्रेम की कुण्झी ले जान।।

1204 तन मन धन सतगुरू को, अर्पित करना काम महान।
यह कार्य अति कठिन है, स्वतंत्रता पाना काम महान।
साहिब जी : तन मन धन सब सतगुरू का जान।।

1205 एकाग्रता लाना संसार से पार प्यारो, मन के विरूद्ध काम करना ले जान।
सुरति को महां चेतन करो, मन के विरोध में जाना ले जान।
साहिब जी : मन को दुखी करना ले जान।।

1206 सतगुरू सतपुरूष को प्यारो, समग्रता की भांति जानो रे।
अपना सब कुछ अर्पित करो, साहिबन रूप में समाना रे।
साहिब जी : शैतान को भी उसी का रूप जानो रे।।

1207 दुर्गम घाटी चढ़ना सुश्मिन की, सुरति सब्द स्वांसा से बनें काम।
, उल्टि स्वांसा जब हो गई, स्वांसा का अर्द और उर्द में चलना काम।
साहिब जी : नाभी से उपर सुरति ध्यान का काम।।

1208 साधक को सिर झुकाना जब आ गया, अब सतगुरू के हाथ लगाम।
मन माया सब बह गयो, पूरा हुआ दुर्गम घाटी चढ़ने का काम।
साहिब जी : जीते जी मरने का काम।।

1209 तुला राम अहंकार करि, हर पल मान में रहते जान।
महांवीर सर झुका लिया, खुद को मिटाया जान।
साहिब जी : भगवान का भार सिर पे लिया ले जान।।

1210 उपर चढ़ने का काम किया, निज बिन कोई सहारा मत जान।
भगवान का निज में निर्माण किया, जग चकित हुआ ले जान।
साहिब जी : औंकार का संग साथ ले जान।।

1211 मीरां भांवरी हो चली, विरह वैराग़ की डौरी संग साथ।
श्री कृष्ण में हृदय डाल कर, प्रेम में प्रेमी संग साथ।
साहिब जी : हृदय में दोनों ईक संग साथ।।

1212 मीरां भई भांवरी सुन बांसुरी तान, अब हरि बिन कुछ ना सुहाता रे।
सुन बांसुरी सुधबुद्ध खो गई, मन रमा बांसुरी तान में रे।
साहिब जी : मुरली में नियम धर्म सब छूटे रे।।

1213 प्रेम कटारी ह्रदय लगी, जल भरने यमुना गई रे।
देख मुकुटधारी गिरधर नागर, मीरां सुधबुद्ध खो बैठी रे।
साहिब जी : मीरां सुधबुद्ध भूली रे।।

1214 प्रेमी प्रेसी ईक जब, मन मान लाज खो गई रे।
विकार का भाव खो गया, अंग अंग में प्रीत जागी रे।
साहिब जी : अंग अंग में सुरत समाई रे।।

1215 सुरति फंसी संसार में, भूले साहिब से किया करार कौल।
मृत्यु लोक में आई के, भूला निज सुरति मूल।
साहिब जी : अमरपुर ही सच्चा मूल।।

1216 ब्रह्म राम ते ''वे नाम'' सब्द बड़ो महान, सतगुरू 'वे नाम' सूं ले जान।
सुरति सूं पकड़ो इसे, निजघर जाना ले जान।
साहिब जी : सुरत कमल में साहिबन दर्स महान।।

1217 आवे ना जावे मरे ना जन्मे, सोहि पिता हमारा रे।
देत सब्द विदेहि, निःअक्षर सब्द न्यारा रे।
साहिब जी : अमरपुर देस हमारा रे।।

1218 'वे नाम' प्रकट रूप में देखा प्यारो, अमृत भी पिया न्यारा रे।
परमहंसों के दर्शन पाये, सूर्य चंद बिन देस हमारा रे।
साहिब जी : जन्म मरन सूं पारा रे।।

1219 औंकार तीन लोक का कर्ता प्यारो, जोत स्वरूपी भगवान प्यारा रे।
हंसात्माओं को योनी में डाला, माया जाल रचायो न्यारा रे।
साहिब जी : खर अक्षर शब्द मन पसार रे।।

1220 सतपुरूष भगवान देवी देवों के प्यारो, भेद देते 'वे नाम' सतगुरू प्यारा रे।
कालपुरूष ज्योति निरंझन से आगे प्यारो, अमरपुर देस हमारा रे।
साहिब जी : अमरपुर सब हंसों का देस न्यारा रे।।

1221 अनंत नाम शब्द संसार में, तिन से जग मुक्त नाहिं होये प्यारो रे।
''वे नाम'' सब्द गुप्त भया प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू पाये दौ सब्द न्यारे रे।
साहिब जी : सब को पाया 'वे नाम' प्यारे ने रे।।

1222 सतगुरू चंदन जैसो हर पल प्यारे, बिन ''वे नाम'' सब्द संसार सर्प जान।
मन मान में खोया रे, विकारों से पार मत ले जान।
साहिब जी : जग जीव विकारों में डूबे ले जान।।

1223 गल्त एक कदम उठने से, सब करा धरा चौपट ले जान।
सुरति ध्यान से पग़ धरो, पल में भव पार ले जान।
साहिब जी : सतगुरू हर पल संग ले जान।।

1224 मीरां प्रेमी प्रेम में भिन्न प्यारो, पूर्ण समर्पित आत्मां ले जान।
पूर्णतः समर्पित मिटि खोई हुई, विष पिया ले जान।
साहिब जी : कृष्ण सुरति धारा में खोई ले जान।।

1225 मीरां का प्रेम भरौसा देख लो, श्री कृष्ण में ही बसी ले जान।
कृष्ण को ही वह पी गई प्यारो, विष अमृत फल पाया ले जान।
साहिब जी : श्री कृष्ण में वासा ले जान।।

1226 सम्मोहन क्रिया ने काम किया, चमत्कारी काम इसे मत ले जान।
विश्वास भरौसा समर्पण किया, प्रेम सुरति धारा उर्दमुखि ले जान।
साहिब जी : समर्पण से बनते सब काम ले जान।।

1227 'वे नाम' मन चंचल भयो, इस का रूकना काम मत जान।
''वे नाम'' सब्द बाण चलाये बिना, जहां तहां पहुंचा ले जान।
साहिब जी : मूल सब्द मिटाये मन मान।।

1228 खर अक्षर से निवृत्त हो कर, निःअक्षर में सुरति धार।
निःअक्षर 'वे नाम' सतगुरू सूं पाओ प्यारो, तब जागे सुरति धार।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द जगाये सुरति धार।।

1229 जा के पास ''वे नाम'' सब्द की दात प्यारो, देवी देव निवावें शीष रे।
सतगुरू 'वे नाम' से प्यारो, सार सुरत नाम को पा लो रे।
साहिब जी : मन मान संग छुड़ा लो रे।।

1230 निर्वाण अवस्था पाने पर प्यारो, मन मान कुछ छूटा ले जान।
आत्म शुद्धि पूरी नाहिं प्यारो, ''वे नाम'' सब्द से पूरी शुद्धि ले जान।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष ''वे नाम'' सब्द से ले जान।।

1231 दांतों में क्रौध दबाने से प्यारो, दांतों के रोग़ ले जान।
जबड़ों को देख कर प्यारो, रोग़ों की मिलती पहचान।
साहिब जी : हिंसा क्रौध तन में देते रोग़ ले जान।।

1232 हर अंग में विशेष रोग़ का प्यारो, विशेष स्थान ले जान।
''वे नाम'' सब्द की दात सूं प्यारो, हर रोग़ मिटता ले जान।
साहिब जी : सार सुरत सब्द मिटावे हर रोग़ ले जान।।

1233 पहले ग्लानि महसूस होती प्यारो, क्रौध आने में अंतराल ले जान।
''वे नाम'' सब्द में सुरति डालते, क्रौध का शांत होना ले जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सूं क्रौध शांत ले जान।।

1234 क्रौध से पार होना प्यारो, सार सब्द से रोका जाये।
आदतन मन भावों का प्यारो, ईक हिंसा ले जान।
साहिब जी : हर जीव मन मान ले जान।।

1235 कालांतर में ऋषि मुणि प्यारो, पंच मुद्राओं का अनुकरण किया जान।
'वे नाम' सतगुरू महां योगी प्यारो, ''वे नाम'' सब्द जहाज लाया जान।
साहिब जी : साहिबन से पाई दात महान।।

1236 मसी कागज़ सतगुरू कृपा सूं प्यारो, छुआ कलम दी हाथ ले जान।
चारों युग का भेद दिया, 'वे नाम' पाई पूर्ण मोक्ष की दात ले जान।
साहिब जी : आप ही लिखाते ले जान।।

1237 सुरति सूं कर्म वचन प्यारो, सतगुरू आज्ञा निरखत चलना ले जान।
पाई मुक्ति सतगुरू सूं प्यारो, सार नाम विदेह पाया ले जान।
साहिब जी : विदेह नाम का पाया ज्ञान महान।।

1238 सूक्ष्म 'वेद' 'वे नाम' से प्यारो, लिखवा रहे परमपुरूष आप ले जान।
सूक्ष्म भेद सुश्मिना है माध्यम, परमपुरूष सूं जुड़ती सुरति ले जान।
साहिब जी : संदेश दिव्य अनुभूतियां बहतीं ले जान।।

1239 सूक्ष्म 'वेद' मन वाणी से प्यारो, साहिबन ज्ञान सतगुरू चेतन सुरति सूं जान।
सतगुरू सूं साधक पावे, सतपुरूष सत महिमां ले जान।
साहिब जी : सतगुरू सूं सतपुरूष महिमां ले जान।।

1240 जो जीव ''वे नाम'' दात को पावें, पूर्ण मोक्ष पा निजघर को जावें।
''वे नाम'' सब्द में सुरति समावें, अजर अमर होई निजघर को जावें।
साहिब जी : अमर होई निजघर को जावें।।

1241 तीन गुण विषय के नाहिं, तम को रज में रज को सत्त में करना जान।
सत को सुरति धारा में प्यारो, प्रेम भक्ति में प्रवेश ले जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सुरति से पार ले जान।।

1242 प्राकृति पांच तत्व रहियो समाई, तीन गुण लियो भरमाई।
सुरति सब्द से तीन गुण वश करो, सुरति सतगुरू सुरति में जा समाई।
साहिब जी : काल जाल छूटा जाई।।

क गर्भ योगेश्वर गुरू बिन, लागा हरि की सेव।
कहें कबीर, बैकुण्ठ से फेर दिया शुकदेव।
साहिब जी : बिन गुरू निष्फल हो सेव।।

क जनक विदेही गुरू किया, लाग हरि की सेव।
कहे कबीर, बैकुण्ठ में फिर मिला शुकदेव।
साहिब जी : गुरू कृपा सूं फलिभूत सेव।।

1243 गुरू बिन बैकुण्ठ ना प्यारो, कैसे पाऊं निजघर बिन सतगुरू।
महां तपस्वी विष्णु जी प्यारो, बैकुण्ठ से लौटाया बिन सतगुरू।
साहिब जी : अमरपुर नाहिं पाओ बिन सतगुरू।।

1244 बिन सतगुरू ईश्वर की खोज प्यारो, खोज में केवल भटकना ले जान।
प्यास बुझती नहीं प्यारो, संतुष्टि आत्म ज्ञान बिन धोखा ले जान।
साहिब जी : सतगुरू पाना ही साहिबन पाना ले जान।।

1245 ये संसार सतपुरूष सुरति का प्यारो, ईक छोटा सा भाग ले जान।
सतगुरू बिन महांसागर भेद कहां, बंद आंख से कूदने समान ले जान।
साहिब जी : महां सुरति सागर की महिमां ले जान।।

1246 सतगुरू मिला तब जानिये, छूटे मन माया मोह संताप।
काल और कल से पार ही, इस पल में पावे निज आप।
साहिब जी : चेतन सुरति में वासा आप।।

1247 सतगुरू ज्ञान की खान प्यारो, पल पल ज्ञान के खिलते फूल रे।
भेद भ्रम जान तोड़ी कर, निर्मल निराला शांत हर पल जान रे।
साहिब जी : आनंद ही आनंद हर ओर फैला जान रे।।

1248 गुरू से अज्ञान तिमिर दूर ना, सतगुरू दूर करने में समर्थ ले जान।
सतगुरू साहिबन समान जान प्यारे, सब्द सुरति ईक करना ले जान।
साहिब जी : सब्द सुरति में समाना ले जान।।

1249 सतगुरू सूं जब भी मेल प्यारो, शष्टांग दण्डवत करो प्रणाम।
तुम से अगर वह दूर प्यारो, सुरति सतगुरू रूप में डाल करो प्रणाम।
साहिब जी : सुरति में हर पल करो सतगुरू को प्रणाम।।

1250 जिस सत्य को खोजत प्यारो, थके ब्रह्मा देवी देव ऋषि त्रिदेव रे।
जो मनुष्य सतगुरू की सेव करे, अंग संग पाये पूर्ण मोक्ष जान रे।
साहिब जी : सतगुरू की सेव पूर्ण मोक्ष जान रे।।

1251 सतगुरू बिन सत्य की पहचान कहां, पुनः पुनः भवसागर में डूबा जान।
सतगुरू बांह पकड़ उभारें प्यारो, बिन सतगुरू जग अंधकार डूबा जान।
साहिब जी : बिन सतगुरू जग घौर अंधकार में डूबा ले जान।।

1252 सदा सच बोलना ही प्यारो, सतगुरू से प्रामर्श ले जान।
एक नारी सदा ब्रह्मचारी प्यारो, ईक दूसरे पर विश्वास ले जान।
साहिब जी : सदा ब्रह्मचारी हो सको तो महान।।

1253 नेकी हक की कमाई प्यारो, प्रेम भाव से रहना ले जान।
ईच्छा रहित भक्ति प्यारो, चौरी से कौसों दूर ले जान।
साहिब जी : सब बुराईयों से दूर ले जान।।

1254 मांस मदिरा से सख़्त परहेज़ प्यारो, मैत्री भाव में रहना जान।
सतगुरू पर पूरा विश्वास प्यारो, हर एक के काम आना ले जान।
साहिब जी : सब के काम आना ले जान।।

1255 साहिब जी दीनों के दीन प्यारो, हर पल स्वांसा में संग ले जान।
हर पल सुरति ध्यान धरें, साहिबन महांसुरति सतगुरू में ले जान।
साहिब जी : साहिबन महांचेतन सुरति सतगुरू में ले जान।।

1256 सतगुरू बिन कोई ना पा सके, कौटिन जन्म क्युं ना ध्यान धरे।
'वे नाम' सतगुरू में हर पल हैं रहते, तुझे हर पल आन जगाते रे।
साहिब जी : जागें जो सब कुछ अपना खोते रे।।

1257 सतगुरू बिन है रात हनेरी, ''वे नाम'' सब्द पाने की देरी।
जब सुरति की आंख से देखो, जागन में कुछ ना देरी।
साहिब जी : सुरति सूं जागन में नाहीं देरी।।

1258 जो सोते हैं सो खो जाते हैं, जो जाग गये सो पा जाते।
इस में कल काल की बात कहां, जो सतगुरू के होते वो पा जाते।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द पा पार हो जाते।।

1259 सच्ची प्रीति ही जग में है जगाती, मन मान की आन मिटाती है।
जब दोनों मिटे सुरति जागे, महांचेतन सुरति हो जाती है।
साहिब जी : महांचेतन सुरति ही जागा कहलाती है।।

1260 तेरी हर स्वांसा में प्राण बसें, जो सुश्मिना को सम कर जाते हैं।
जब सार नाम दात पाई सतगुरू सूं हो, सुरति चेतन हो जाती है।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सूं सुरति चेतन हो जाती है।।

1261 ये मौसम बहारें चाँद सितारे, जो कुछ भी नज़र में हमारा नहीं है।
सब कुछ जहां में धोखा प्यारो, बिन धोखे जहां में कुछ भी नहीं है।
साहिब जी : धोखे बिन जहां में कुछ भी नहीं है।।

1262 ईंगला विनसे पिंगला भी विनसे, खुल जाई तेरी सुश्मिन नाड़ी।
शाहरग़ इसी को कहते प्यारो, ये सभी की ताड़ी की नाड़ी।
साहिब जी : शाहरग़ सभी की ताड़ी की नाड़ी।।

1263 जो अंदर हैं जाते ध्यान लगाते, निज को हैं पा जाते।
ऊँच नीच में सब रहते, जाग कर सब हैं पा जाते।
साहिब जी : जाग कर सब पा जाते हैं।।

1264 जात धर्म वर्ण त्याग कर, जो सतगुरू शरणी आते हैं।
झुकना जब आ गया उनको, वह निज को पहचान जाते हैं।
साहिब जी : वे छोटे से छोटे बन के रहते हैं।।

1265 संत को मान पदार्थ की प्यारो, कैसे हो गई चाह रे।
साहिब हर पल संग साथ प्यारो, जग को जगाने की सच्ची चाह रे।
साहिब जी : मुक्ति संतन की चेरी रे।।

1266 प्रेम भक्ति बिना प्यारो, सब थोथे मार्ग ले जान।
मन त्याग वैराग़ प्यारो, प्रेम भक्ति सूं ले जान।
साहिब जी : मान अपमान एक से जान।।

1267 योग युक्त से बड़ा जानिये, प्रेम भक्ति की महिमां महान ले जान।
प्रेम सूं उपझे मन त्याग प्यारो, प्रेम ही सू शुद्ध भक्ति की महिमां जान।
साहिब जी : झुकने की महिमां महान।।

1268 जो घर आवे झुकना सिखावे, ता से उपझे प्रेम प्यास महान।
सतगुरू सूं आगे हो जावे, जे सुरति में प्रेम धार महान।
साहिब जी : तन मन मान छूटा ले जान।।

1269 काम अर्थ धर्म मुक्ति की ईच्छा गई, चार चार पदार्थ तुच्छ सम जान।
''वे नाम'' सब्द में हर पल सुरति रहे, ऐसा मत्त 'वे नाम' का जान।
साहिब जी : आठों पहर रहे सतगुरू सुरति में ध्यान।।

1270 स्वर्ग बैकुण्ठ पाने की चाह गई, साहिबन प्रेम में लीन ले जान।
साहिबन प्रेम आनंद भण्डार, सच्चा आनंद साहिबन भक्ति में जान।
साहिब जी : सच्चा आनंद साहिबन भक्ति में ले जान।।

तु गौस्वामी तुलसीदास जी, गुरू को ऊँचा स्थान देते रे।
बदऊं गुरू पदकंज कृपा सिंधु, नर रूप हरि रे।
महां मोह तप पूजूं जासु वचन, रविकर निकर रे।
साहिब जी : गुरू अंधकार में सूर्य किरणों की धार रे।।

1271 'वे नाम' धारा निर्मल करे, मन मान ले धोई रे।
आठ पहर सुरति धार में प्यारो, चेतन से चेतन सुरति होई रे।
साहिब जी : दर्स पे दर्स साहिबन होई रे।।

1272 जग में निज को भूलना ही प्यारो, सुख में जाना ले जान रे।
अब मन के जाल में पड़े, कैसे हो निज की पहचान रे।
साहिब जी : निज की भूल से तीन लोक में रे।।

1273 काम क्रौध लोभ मोह अहंकार प्यारो, निज भूल से प्रकटे ले जान।
रिश्ते नाते दुख सुख में भेद प्यारो, निज को भूल जाने से ले जान।
साहिब जी : निज को भुलाना ही दुखों का कारण ले जान।।

1274 निज में प्रेम सत्य आनंद समाया, किसी का संग तूं भूल ले जान।
तन मन को राख जान ले, यही दुख का कारण तूं ले जान।
साहिब जी : सुरति में हर पल रहना तूं जान।।

1275 दुख ही दुख चहुं ओर प्यारे, निज की भूल ले तूं जान।
जागना अति कठिन काम प्यारो, नर्क ही चारों ओर ले जान।
साहिब जी : होश में आना बल का काम ले जान।।

1276 जन्मों जन्मों की भूल से, दुख होंगे कैसे कम।
होश में चलना ही प्यारो, अति कठिन जान ये काम।
साहिब जी : बिन ''वे नाम'' सब्द बने ना काम।।

1277 हर जीव मद्यहोशी में जी रहा, जागना कठिन है काम।
पूर्ण सतगुरू का संग पा लिया तो, पल में पार ले जान।
साहिब जी : सतगुरू शरणागत पल में पार ले जान।।

1278 साहिब सच्चे गहन गंभीर प्यारो, कोई एक 'वे नाम' से पावे भेद रे।
गुरू देह का सतगुरू सुरति का प्यारो, सुरति आवागमण निवारे रे।
साहिब जी : ईक पल में सुरति ध्यान लगावे पार रे।।

1279 ऋगवेद ब्ख़ान करते हैं प्यारो, गुरू का ईक पल ध्यान महान रे।
हज़ारों वर्ष तीर्थों में जाना प्यारो, किसी ना आवे काम रे।
साहिब जी : ध्यान का फल महान रे।।

1280 सतगुरू परमपुरूष का सच्चा प्रतिनिधी, मन के खूंटे से करे आज़ाद रे।
तन पिंझरे में नर कैद प्यारो, ''वे नाम'' सब्द से छूटा जान रे।
साहिब जी : आत्म गई भरमाई रे।।

1281 चेतन सुरति सूं हर पल बांवरे, फिर पीछे कुछ हाथ ना आये रे।
तेरा घर अति ही दूर प्यारे, ''वे नाम'' सब्द से ही घर जाये रे।
साहिब जी : संशय निवारक सतगुरू भक्ति में जायें रे।।

1282 महांमारियां भूकंप, लोग मर रहे चहुं ओर।
सुन्न में वास करे, लगाये दुखों के अम्भार हर ओर।
साहिब जी : निरंकार मन दे संशय भय अपार।।

1283 मन से भक्ति जग में हो रही, निर्भय होये ना कोये।
निरंकार ही पाप करवा रहा, बचावन वाला मिले ना कोये।
साहिब जी : महांकाल भयभीत करे तोये।।

1284 मन पाप कर्म है करवा रहा, काम क्रौध से बचा ना कोये।
सत परमहंसों से मन डर रहा, सभी को नचाता सोये।
साहिब जी : मन सब का कर्ता होये।।

1285 आओ मेरे मन मोहन, तुम्हारी बाट जोहूं दिन रात।
हर पल देखि संग तुझे अपने, पकड़ की ना बनती बात।
साहिब जी : मन मोहन छलिया तात।।

1286 सत सब्द उनमुनि मुद्रा, सहस्त्रार चक्र पर ध्यान।
ताको निरंकार सूर्य प्रकाश दिखावे, 'वे नाम' जाना निरंकार महान।
साहिब जी : 'वे नाम' दास निरंकार पार सतलोक धाम।।

1287 संत खड़ा देखे संसार को, चाहे सब की खैर।
प्रेम करता सभी सूं, कैसे कर सकता बैर।
साहिब जी : सब्द मिटावे संशय बैर।।

1288 सुरति उसी को देईये, सुरतिवान जो होये।
प्रेम देखो समर्पण देखो, पर मन से बात मत होये।
साहिब जी : समर्पण सिमरन से सुरति चेतन होये।।

1289 सतपुरूष के 'वे नाम' संत, ईक बार जो दर्शन पाते।
दूसरी बार दर्शन देने में, विलम्भ ना लगाते।
साहिब जी : श्वांस श्वांस में साहिबन जा समाते।।

1290 सतगुरू सांचा प्यारा, नमन सुरति अलख लगावे।
बोलत डोलत सुरति में, सुरति सूं उपदेस प्रकटावे।
साहिब जी : चेतन सुरति में साहिबन समावें।।

1291 'वे नाम' कहें अखियन देखी, जग कहता कागद की लेखी।
दोनों का अंतर जान ले प्यारे, ले मान अखियन की देखी।
साहिब जी : बिन अनुभव सब झूठ देखी।।

खर अक्षर निःअक्षर

1292 पंच शब्द जग माहिं, तिन सूं कोई मोक्ष ना पाई।
''वे नाम'' सब्द निःअक्षर न्यारा, चौथे लोक ले जाई।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द काल सूं ले छुड़ाई।।

1293 विदेह सब्द ज़ुबान पर आवे नहीं, सुरति सूं पकड़ा ले जान।
सुरत निरत को ईक कर, सुरति ध्यान में रखना जान।
साहिब जी : स्वांसा सम सुरति में ध्यान ले जान।।

1294 खर अक्षर संसार प्यारो, जा सूं मन मान का फंद ले जान।
निःअक्षर महांचेतन धार प्यारो, भव सागर के पार ले जान।
साहिब जी : पाओ हंसा रूप महान।।

1295 निःअक्षर दात ना पाई प्यारो, खर अक्षर में सब बहते जान।
विदेह सब्द की टेक से प्यारो, साधक अमरपुर पहुंचा ले जान।
साहिब जी : विदेह सब्द अमरपुर सीढ़ी ले जान।।

1296 निःअक्षर दात को पाई के, दूजे सब देह बहाई।
ईक नाम तूं पाई के, सतगुरू चरणन में समाई।
साहिब जी : साधक जागा कहलाई।।

1297 सब्द ''वे नाम'' आदि अचल अविनाषी प्यारो, खर अक्षर से न्यारा रे।
ये ज्योति स्वरूप औंकार ना प्यारो, ये तो महांचेतन सुरति धारा रे।
साहिब जी : पूर्ण मोक्ष की धारा जानो रे।।

1298 जैसे माया में लाखों जन्म रमा रहा, वैसे 'वे नाम' रमाये।
तीन लोक को भेद के, हंसा अमरपुर को जाये।
साहिब जी : हंसा निजघर अपने जाये।।

1299 सतलोक सतपुरूष अमर है धामा, निःअक्षर सब्द से रचयो जान।
तीन लोक हंसों का पिंझरा प्यारो, चौथे लोक में मूल वासा जान।
साहिब जी : आओ सब चलें निजधाम।।

1300 ''वे नाम'' सब्द को पाई के, और का संग छुट जाये रे।
तीर्थ व्रत्त जप तप गयो, सतगुरू चरणन ध्यान लगाये रे।
साहिब जी : सब कुछ सतगुरू शरणी मिल जाये रे।।

1301 गुप्त सब्द दौ बार मोहे दीना, नाम विदेह मोक्ष सब्द कहलाये रे।
सुरति सूं सुरति को दीना, गुप्त नाम की महिमां कही ना जाये रे।
साहिब जी : गुप्त नाम की महिमां कही ना जाये रे।।

1302 ''वे नाम'' सब्द गुप्त वस्तु प्यारो, साहिबन सूं पाई 'वे नाम' दास।
नाम विदेह मुक्ति परवाना, जो पावे संग पावे 'वे नाम' दास।
साहिब जी : संग तारे ईक्कतर वंशा ये दास।।

1303 नाम डौरी पकड़ी अमरपुर जाये, हंसा रूप पाई निजघर जाये।
पल पल जागन होये प्यारो, जाग कर होश में अमरपुर जाये।
साहिब जी : ''वे नाम'' दात पाये काम बन जाये।।

1304 ''वे नाम'' सब्द से प्यारो, आत्म से मन माया का अलग होना जान।
संसार का आकर्षण जाये प्यारो, सुरक्षा कवच मिल जाता जान।
साहिब जी : सतगुरू साहिब जी का संग जान।।

1305 मन तरंग में हर इन्सान प्यारो, ''वे नाम'' सब्द से आत्म चेतन ले जान।
जाग कर होश में प्यारो, साधक करता हर काम ले जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सतपुरूष सुरति ले जान।।

1306 छिन एक ध्यान विदेह समाई प्यारो, ताकि महिमां वर्णन से बाहिरा रे।
''वे नाम'' सब्द विदेह स्वरूपा, निःअक्षर सतपुरूष सुरति सूं जानो रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द तुम निःतत्व जानो रे ।।

1307 गुप्त वस्तु ''वे नाम'' सब्द प्यारो, बिन मुख ध्वणि जान।
सतगुरू कृपा सूं प्यारो, चेतन सुरति में वासा ले जान।
साहिब जी : मिले हंसा रूप महान।।

1308 ''वे नाम'' सब्द प्यारो, अक्का नाम सार सब्द कहाई।
विदेह सब्द मोक्ष दात, सतनाम निःअक्षसर कहलाई।
साहिब जी : मूल नाम सतगुरू सब्द कहलाई।।

1309 तेज आंच में गीली लकड़ी भी प्यारो, पल में जलती ले जान।
लोभ जितना बड़ता प्यारो, उतना पाप भी बड़ता ले जान।
साहिब जी : लोभी लोभ में जलता हर पल जान।।

1310 मोह सकल विघ्न का मूला प्यारो, ता से उपझत बहु विधि सूली जान।
मोह सब दुखों का मूल प्यारो, सकल संसार मोह वश पड़ा ले जान।
साहिब जी : झीणी माया का भेद ले जान।।

1311 स्वामीपन लाना सहज प्यारो, अपमान सहना अति कठिन ले जान।
अपमान में रहना सीख लो प्यारो, सुख संग रहना आता ले जान।
साहिब जी : ईक केवल संत संग ही महान।।

1312 कर्म धर्म का संसार प्यारो, हर एक मन जाल में फंसा ले जान।
हर पल कल और कल में रहता प्यारो, ता से उपझे मन और मान।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू की कर पहचान।।

1313 मन मान करते करते मरि गयो प्यारो, निज की ना की पहचान।
सतगुरू सेवक बना नाहिं प्यारो, ना कर सका निर्भय लोक पहचान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सूं निर्भय लोक वासा ले जान।।

1314 बिन सतगुरू हर नर हारा हुआ प्यारो, काल अधीन उसे ले जान।
आत्म मन माया अधीन प्यारो, नर पड़ा काल अधीन ले जान।
साहिब जी : सतगुरू की कर पहचान।।

1315 सतगुरू सुरति में प्यारो, महांचेतन सुरति की धार बहती ले जान।
मृग नाभी में कस्तूरी प्यारो, वीर्य सूं कस्तूरी में बदल जाती ले जान।
साहिब जी : वीर्य नर तन में अमृतधारा ले जान।।

1316 ध्यान ही आत्मां जान प्यारे, ''वे नाम'' सब्द नर को बदलता ले जान।
सुरति का चेतन सुरति सूं मेल जब, मन मान का संग छूटा ले जान।
साहिब जी : साकार का संग छूटा ले जान।।

1317 आत्म से परमात्म की प्यारो, होती सच्ची पहचान रे।
आत्म परम चेतन होती प्यारो, जब ''वे नाम'' सब्द का पाओ दान रे।
साहिब जी : सब्द बीज सतगुरू सूं मिलता जान रे।।

1318 सुरति देना ध्यान रखना प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू सूं बनती बात रे।
बिन सतगुरू भवनिधी कोई ना तराई, जिन सतपुरूष सूं दात पाई रे।
साहिब जी : निजघर का वासी जान रे।।

1319 राम कृष्ण औंकार रूप प्यारो, गुरू महिमां का करो ध्यान।
तीन लोक के स्वामी, राखो गुरू चरणों में हर पल ध्यान।
साहिब जी : पा लो पूर्ण मोक्ष ज्ञान।।

1320 सतपुरूष आत्म भेजी जग माहिं, औंकार तन मन दे दियो जग माहिं।
सतगुरू ''वे नाम'' सब्द से प्यारो, आवागमण सूं देत छुड़ाई।
साहिब जी : सतगुरू 'वे नाम' दात दे निजघर ले जाई।।

1321 हर हृदय स्वांस स्वांस में प्यारो, तीन लोक से पारा रे।
है प्रकट सुरति पहचाने, सतगुरू चेतन सुरति की धारा रे।
साहिब जी : शीष झुकाने से है मिलता प्यारा रे।।

1322 मूल सत तीन लोक से पार प्यारो, 'वे नाम' सतगुरू जानत भेद सारा रे।
पाओ सब्द 'वे नाम' सूं प्यारो, चढ़ो सुरत कमल सूं निज देस रे।
साहिब जी : सतपुरूष देस हंसों का न्यारा रे।।

1323 'वे नाम' सतगुरू प्यारो, सतपुरूष का अंश महान रे।
संतन में साहिब रम रहे, जैसे दूध में घी रे।
साहिब जी : सतपुरूष महां चेतन सुरति का सब खेल रे।।

1324 सतगुरू 'वे नाम' की अदभुत महिमां प्यारो, सुरत निरत सब्द दौ पाई।
'वे नाम' सतगुरू सतलोक वासी, हंसों को आन जगाई।
साहिब जी : सतपुरूष पारस सुरति पार लगाई।।

1325 ब्रह्मां चारों युग ध्यान लगायो, औंकार पिता के दर्स ना पायो।
'वे नाम' सतगुरू दर्शन पायो, अल्प अवधि में साहिबन पायो।
साहिब जी : सार सब्द सूं सुरति ध्यान।।

1326 ''वे नाम'' सब्द सर्व शब्दों से न्यारा, कोई बिरला पावे भेद।
चार वेदों में ब्रह्मां खोये, आदि नाम का ना पाया भेद।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू देवें आदि नाम भेद।।

1327 मन माया खेल करत देव निरंझन, हर जीव रहा भरमाई।
सात रंग का सूर्य रूप धरते, दर्शन दे भरमाई।
साहिब जी : भगत काल में रहें भरमाई।।

1328 भंवर गुफ़ा अनहद नाद उठत, सो सब बोल में ले जान।
निःसब्दी सार सुरत नाम प्यारो, साहिबन महांचेतन सुरति ले जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द दात साहिबन सूं आई ले जान।।

1329 मुक्ति भेद 'वे नाम' सतगुरू सूं पाओ, योगी ऋषि मुणि देव जानत ना।
सिद्ध साधक योगी यत्ति प्यारो, काल भगवन बिन कुछ जानत ना।
साहिब जी : पूर्ण मुक्ति भेद 'वे नाम' सतगुरू बिन कोई भी जानत ना।।

1330 शिव विष्णु ब्रह्मां आदी जानत ना, सभी काल भगवन के गुण गाई रे।
जो काल भाव पे भाव देते प्यारो, ता में ध्यान लगाई रे।
साहिब जी : काल निरंझन सब को डराई रे।।

1331 जिस की भक्ति में हर प्राणी प्यारो, खुद भी मोक्ष पाया मत जान।
अंधे नर अंधे से मांगते, पूर्ण मोक्ष का दान।
साहिब जी : सच्ची राह 'वे नाम' सूं जान।।

1332 आत्म तत्व बड़ा निराला निज में, स्वार्थी नाशवान इसे मत ले जान।
काम क्रौध मोह निज तर्क से प्यारो, प्रेम ज्ञान की कसौटि महान।
साहिब जी : तर्कों से चिंतन करना काम महान।।

1333 ईंगला पिंगला सुश्मिना सम करि, अर्द से उर्द में ध्यान लगाना ले जान।
स्वांसा नाभी में आवे नाहिं, जीवित मरने का भेद ले जान।
साहिब जी : तन से प्राण बाहर ले जान।।

1334 स्वांसा उपर ध्यान भी उपर प्यारो, दोनों का संग साथ महान।
पवन सुन्न में घर करे प्यारो, त्रिकुटि में साहिबन दीदार महान।
साहिब जी : आज्ञा चक्र में आत्म स्वांस लेती ले जान।।

1335 ज्युं ही आसन किया प्यारो, चेतन सुरति का संग मिले ले जान।
तन गयो मन गयो संसार गया प्यारो, साधक पक्का वैराग़ी ले जान।
साहिब जी : स्वांस स्वांस साहिबन सुमिरन ले जान।।

1336 सुमिरो प्रथम 'वे नाम' सतगुरू प्यारो, दिया ''वे नाम'' सब्द सांचा ज्ञान।
उसी में राग़ द्वैष मिटाये प्यारो, दिया वैराग़ प्रेम भक्ति का दान।
साहिब जी : जग ईक दिन का मेला ले जान।।

1337 निरंकार लोक सहस्त्रसार चक्र प्यारो, पांचवा आकाश तत्व ले जान।
सुरत निरत का ईक होना प्यारो, ररंकार सब्द प्रकटाये महान।
साहिब जी : ररंकार सब्द ध्यान खेचरी मुद्रा ले जान।।

1338 गौरा कुमार संत प्यारो, ररंकार सब्द में ध्यान ले जान।
निन्यानवें प्रतिशत सुरति निरति का ईक होना, प्रकटे ररंकार सब्द महान।
साहिब जी : भक्ति में अभी कच्चे का कच्चा ले जान।।

1339 हर सोया नर कच्चे घड़े समान प्यारो, परख से भेद मिलता ले जान।
संत गौरा कुमार थापी से प्यारो, कच्चे घड़े की करते पहचान।
साहिब जी : सोया नर भी कच्चे घड़े समान ले जान।।

1340 मुक्ताभाई ज्ञानेश्वर नामदेव शीष टकौर के, दोनों की थापी से की पहचान ।
नामदेव बिन गुरू अहंकार में प्यारो, कच्चे भगत की है पहचान।
साहिब जी : अहंकार में सहज नर मत जान।।

1341 अनहद ध्वणि निरंकार दर्स प्यारो, खेचरी मुद्रा पहचान ले जान।
गौरा कुमार खेचरी मुद्रा में जाते प्यारो, काल का खेल देख महान।
साहिब जी : जग में काल का खेला देखो महान।।

1342 ज्ञानी से ज्ञानी जब मिले प्यारो, सत्य प्रेम आनंद की होती बात।
अज्ञानी से अज्ञानी जब मिले प्यारो, काल जाल की करते बात।
साहिब जी : जब काल जाल फैला विक्राल।।

1343 ''वे नाम'' सब्द तो गुप्त भयो प्यारो, पूर्ण संत ही पाते दात।
कोई बिरला संत जग आता, निःअक्षर सब्द की करता बात।
साहिब जी : सच्चे घर की पूर्ण संत ही करता बात।।

1344 आत्म अविनाषी सतपुरूष की प्यारो, सब जीवों में वासा ले जान।
आत्म कौटिन युगों से प्यारो, भ्रम वश काल जाल में ले जान।
साहिब जी : इसे अजर अमर अविनाषी ले जान।।

1345 प्रेम प्रार्थना का आधार प्यारो, कृतज्ञता उत्पन्न करती ले जान।
सतगुरू कृपा सूं प्यारो, उनके प्रति कृतज्ञता ले जान।
साहिब जी : कृतज्ञता ही भक्ति का आधार ले जान।।

1346 प्रेम बिन सब झूठ प्यारो, विषय विकार से पार होना ले जान।
प्रेम लुटाने से प्यारो, जीवन हज़ार गुणा लौटाता ले जान।
साहिब जी : प्रेम लुटाना जानो काम महान।।

1347 अभिमान में अपना अनमोल समय प्यारो, पल पल गंवाता नर ले जान।
मरते समय केवल भक्ति प्यारो, पूर्ण मोक्ष फल देती ले जान।
साहिब जी : सतगुरू कृपा सूं सब फल जान।।

1348 सुमेर फूल की लाली देख प्यारो, तोता मधुर फल खाने को आतुर रे।
फल पर बैठ चौंच जब मारता प्यारो, फल की रूई चारों ओर उड़े रे।
साहिब जी : तोते के कुछ नहीं आता हाथ रे।।

1349 मोह के संसार में प्यारो, आस कुछ ना करती काम ले जान।
अंत में बिन भक्ति प्यारो, नर खाली हाथ जाता ले जान।
साहिब जी : बिन प्रेम भक्ति के बने ना काम ले जान।।

1350 जो साधक सतगुरू सेवा में रहे, प्रेम भक्ति फल पावे सोये।
कहे 'वे नाम' सुरति चेतन बिना, सेवक कबहु ना होये।
साहिब जी : निज को खोने से सब होये।।

1351 सेवक सेवा में रहे, आप तरे औरों को तारे सोये।
सतगुरू 'वे नाम' सेवादार , हर पल सेवा में रहे चाहे जागे या सोये।
साहिब जी : साधक सतगुरू सेवा धारें चाहे जागें हों या सोये।।

1352 दाता केवल सच्चा सतपुरूष प्यारो, सुरति निरति का पिता महान।
संत चरणों के दास प्यारो, सुख दुख जाने एक समान।
साहिब जी : सुख दुख में भेद मत जान।।

1353 तीन लोक काल का प्यारो, खेल खेला ले जान।
''वे नाम'' सब्द से सुरतिवान प्यारो, ईक आधा होत ले जान।
साहिब जी : सतगुरू चेतन सुरति महान ले जान।।

1354 नर्क का जीव जागे नाहिं, नर्क बिन और ना करता सुनता बात।
नर्क में उपझा खपेया प्यारो, नर्क स्वर्ग की करता सुनता बात।
साहिब जी : शील शांत संतोष की ना सूझे बात।।

1355 बिना 'वे नाम' सुरति के प्यारो, कभी चेतन मत जान।
ईन्द्रियां द्वार रस ज़हर प्यारो, पीता जीव हर पल ले जान।
साहिब जी : जग नश्वर पदार्थों में खोया ले जान।।

1356 दुख को सुख मानने वाला प्यारो, झूठ को सच्च मानता ले जान।
सुख को दुख में मानता प्यारो, निर्गुण निरंकार को जड़ मानता जान।
साहिब जी : नर जीव खुद को भूला ले जान।।

1357 जीवित मुक्ति मिली प्यारो, जब मिटा सकल अज्ञान ले जान।
सतगुरू निर्भय पद निर्वाण दिया, जब चरणों में किया सब कुर्बान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द का पायो दान।।

1358 उनके अमृत वचन सुनने से प्यारो, हमने कचरा तज दिया ले जान।
सतगुरू प्यारे ने हम पर प्यारो, दिया सब्द 'वे नाम' सुरति दान।
साहिब जी : महांचेतन सुरति दान महान।।

1359 मान के उनकी हर बात प्यारो, जला अपना अभिमान दिया।
काल जाल से छुड़ा कर प्यारो, पूर्ण मुक्ति का दान दिया।
साहिब जी : सुरति निरति जोड़ हंसा रूप दिया।।

1360 सब्द दे भव साग़र से प्यारो, अमरलोक निजघर संग लिया।
सुरत कमल में हंसा रूप को पाया, सतपुरूष दर्श महान किया।
साहिब जी : संग में अपने निजधाम लिया।।

1361 पकड़ महांचेतन सुरति का झाडू, सफा कर सुरति निरति को।
एकाग्र होकर ध्यान सुरति में, जला मन मान हुजरे को।
साहिब जी : ध्यान सुरति सूं जला मन मान अहंकार को।।

1362 सतगुरू बिन भवनिधी तरेई ना कोई, जो तीन देव सम होई।
साधारण व्यक्ति की कौन कहे प्यारो, शंकर भी बिन गुरू पार ना होई।
साहिब जी : सतगुरू बिन कोई पार कैसे होई।।

1363 ज्ञान प्रेम भक्ति पहला चरण प्यारो, दूजा अपने बल बूते पर ना कोई।
नौका खेवट जहाज बिन प्यारो, भव पार कोई ना होई।
साहिब जी : बिन खेवट कोई भव पार ना होई।।

1364 शुकदेव भये गर्भ योगेश्वर, उन समान जग में नहीं दूजा कोई रे।
तप के बल पर गये बैकुण्ठ प्यारो, गुरू कृपा बिन बैकुण्ठ ठहर सके ना कोई रे।
साहिब जी : गुरू कृपा बिन मिले ना कोई ठौर रे।।

1365 सतगुरू ज्ञान दीपक ज्योत जले, बिन 'वे नाम' दात पार ना कोई रे।
जप तप सुरति तेज खो दिया, निज भक्ति से पार ना कोई रे।
साहिब जी : सतगुरू कृपा पार करावे रे।।

1366 सतगुरू सब्द द्वारा प्यारो, सत्य प्रेम ध्यान के भेद बिन बात बने ना।
वे साहिबन दात का ज्ञान हैं देते, ''वे नाम'' दात बिन आवागमण छूटे ना।
साहिब जी : बिन दात जन्म मरन का बंधन छूटे ना।।

1367 साहिब तेरा जन कोई एक आध, जो पाता ''वे नाम'' सब्द की दात रे।
खुद जागता औरों को जगाता, बनता चेतन सुरतिवान रे।
साहिब जी : कोई बिरला बनता सुरतिवान रे।।

क गुरू किया है देह का, सतगुरू चीन्हा नाहिं।
भवसागर के जाल में, फिर फिर गौता खाहि।
साहिब जी : जीव भव सागर में बार बार गौता खाहि।।

1368 सतगुरू पाने की अंदर प्रार्थना करो, संग में बैठा जान 'वे नाम'।
सत्यपुरूष का सेवक प्यारो, आवागमण मिटावे सब्द ''वे नाम''।
साहिब जी : मोक्ष पद दिलावे सब्द ''वे नाम''।।

1369 ''वे नाम'' सब्द सुरति धारा, पल में ईन्द्रियों का मल धोई रे।
काम क्रौध लोभ मोह छुड़ावे, भव साग़र पार ले जाई रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द भव पार कराई रे।।

1370 चेतन सुरति में प्यारो, शक्ति महान ले जान।
साधक की सुरति चेतन करती प्यारो, कागा से हंसा करती ले जान।
साहिब जी : साहिबन महांचेतन सुरति खेल महान।।

1371 काम क्रौध लोक मोह प्यारो, साधक के अवगुण छूट जाते ले जान।
सुरति निरति हंसा रूप को पाती, हंसा सतपुरूष सन्मुख ले जान।
साहिब जी : सुरति सब्द सुरति दूध में दही का काम करती ले जान।।

1372 चेतन सुरति सतगुरू समाता शिष्य, शिष्य की सुरति चेतन ले जान।
सगुण निर्गुण भक्ति में प्यारो, ये खेल होता मत ले जान।
साहिब जी : आत्म सौ प्रतिशत चेतन होती ना जान।।

1373 ''वे नाम'' सब्द सूं सतगुरू साधक में प्यारो, पूर्णतः समा जाता ले जान।
अब सतगुरू ही हर ओर प्यारो, प्रेम गली अति सांकरी ले जान।
साहिब जी : सतगुरू ही सब करता ले जान।।

1374 ''वे नाम'' सब्द परम पुरूष का प्यारो, असंख्य सूर्य प्रकासा ले जान।
आत्म और मन प्यारो, पल में अलग हो जाते ले जान।
साहिब जी : स्वांसा का आकर्षण समाप्त ले जान।।

1375 तोहे दर्श बिना कछु ना भावे, साहिबन दर्श बिना।
तुझ बिन कोई पार ना लगावे, चेतन सुरति धार बिना।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द की दात बिना।

1376 प्रीतम को कैसी पत्तियां प्यारो, जो ''वे नाम'' सब्द में वास करें।
सुरति चेतन के नयन में प्यारो, साहिबन महांचेतन सुरति वास रे।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द में महां चेतन सुरति धार रे।।

1377 परमात्मां सतपुरूष केवल चेतन सुरति सूं प्यारो, जाना जाता ले जान।
''वे नाम'' सब्द परम चेतना प्यारो, सतगुरू संग से मिलती ले जान।
साहिब जी : सतगुरू चरण में परम चेतना ले जान।।

1378 ''वे नाम'' सब्द तीन लोक से प्यारो, पार का सब्द ले जान।
सब्द पाने से प्यारो, पूर्ण सुरक्षा मिल जाती ले जान।
साहिब जी : संसार का आकर्षण गयो ले जान।।

1379 सुरति निरति के मेल से प्यारो, विदेह नाम में समाना ले जान।
इस महिमां का वर्णन प्यारो, किया जाता मत ले जान।
साहिब जी : 'वे नाम' सतगुरू सूं आया ले जान।।

1380 ''वे नाम'' सब्द की पोटली प्यारो, अंधों के आगे मत खोल।
जब कोई जागा जन मिले, तभी लीजिये खोल।
साहिब जी : पारखी आगे ही ले खोल।।

1381 सतगुरू सोहि जो सतपुरूष से प्यारो, महांचेतन सुरति की दात को पावे।
सतपुरूष का देत संदेशा, जन्म मरन से पार करावे।
साहिब जी : मुत्यु का भय चिंता संदेह मिट जावे।।

1382 पाप पुण्य मन खेल को छोड़ें, ध्यान विदेह सुरति धारा।
जीवन का लाभ यही प्यारो, जन्म मरन से पार करावे सुरति धारा।
साहिब जी : विदेह सब्द सुरति धारा।।

1383 सतगुरू कृपा से प्यारो, अचेत अज्ञानी चेतन सुरति जगाते रे।
अमृत वचन अति प्रियः प्यारो, भवसागर पार कराते रे।
साहिब जी : सतगुरू अमृत वचन भव पार कराते रे।।

1384 सतगुरू सब्द सुरति समाये प्यारो, उनकी आज्ञा निरखत रे।
स्वांस स्वांस लौ लगाये प्यारो, कर्म भर्म मन मान बह जाये रे।
साहिब जी : सर्व अज्ञानी आसक्ति को त्यागे रे।।

1385 सतपुरूष असीम अजर अमर प्यारो, तीन लोक से पार ले जान।
साहिब सुमिरन ''वे नाम'' सब्द सूं, आवागमण से पार ले जान।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सूं आवागमण पार ले जान।।

1386 सतलोक से 'वे नाम' जी उतरे, पाकर दर्स महान।
''वे नाम'' सब्द दात मिली, महां चेतन सुरति साहिबन महान।
साहिब जी : मनुष्य से परमहंसा कर दिया महान।।

1387 ईक नाम अमोलक पाया, ''वे नाम'' सब्द सत्यपुरूष से आये।
सुरति में प्रगट भये, आत्म से मन माया जाये।
यह भेद 'वे नाम' जी देते हैं, ''वे नाम'' सब्द में सत्यपुरूष समाये।।

1388 ये पल ही सुरति खेल प्यारो, सुरति निरति मेल से हंसा ले जान।
संकल्प विकल्प का संग गया, तब वर्तमान में निज को ले जान।
साहिब जी : सुरति में जाना ही इस पल में ले जान।।

1389 सुमिरन खेल सुरति का प्यारो, अजब विश्राम चहुं ओर तुम जानों।
अंदर बहे चेतन सुरति ही प्यारो, इस पल में तुम जानो।
साहिब जी : चेतन सुरति सूं तुम जानो।।

1390 सुमिरन संम ना कुछ जग में, जा से दुख भागता रे।
सुख ही सुख हर ओर बहता प्यारो, दुख काम के भाव खो जाते रे।
साहिब जी : प्रेम भक्ति की धारा बहती रे।।

1391 इस पल में रहने से प्यारो, फिर से नाहिं जन्म मरन जग माहिं।
मन मान का दुख नाहिं, ''वे नाम'' सब्द राखे सुरति माहिं।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द राखे सुरति माहिं।।

1392 विचार कहीं की ईंट कहीं का गारा, चित्त ने भीतर कुम्बा जोड़ा रे।
लाखों आवें संग बनावें, चित्त सूं बनावें जोड़ रे।
साहिब जी : प्रेम भक्ति सब्द सुरति का जोड़ रे।।

1393 मन बुद्धि चित्त अंग मन ही जानो, अमरदेस जहां से सुरति आई।
शब्द का संग सुरति संग नाहिं, निःसब्द सूं बात बन जाई।
साहिब जी : निजघर जा वासा पाई।।

1394 हंसा हमारा रूप प्यारो, मात पिता निरालम्भ राम।
गृह हमारा हंसा लोक प्यारो, महांचेतन सुरति विश्राम।
साहिब जी : ''वे नाम'' सब्द सूं मिले निजधाम।।

1395 शिष्य ही नहीं प्यारो, सतगुरू भी हर पल सच्चा खोजी जान रे।
नानक साहिब पाया सच्चा सौदा, साहिबन ने साहिब बना दिया जान रे।
साहिब जी : ईक दिया दूजे पाया, दोनों बनें महान रे।।

1396 सुरति मुद्रा में कर जोड़ प्रणाम करूं, धरूं सतगुरू चरणन पर शीष।
परमहंस तारनहार 'वे नाम' जी, संतन के संत विशेष।
साहिब जी : 'वे नाम' संतों के संत विशेष।।

1397 नमो नमो संत 'वे नाम' जी, संतों के महां संत।
पाई निर्लम्भ राम से दात है, नमो नमो जहो प्रेम और सत्त।
साहिब जी : नमो नमो प्रेम और सत्त।।

1398 नमो नमो सतगुरू अंतरयामी, नमो नमो प्रेम भक्ति के रूप।
निजघर जाये वो शरणागत, अमृत वाणी साहिबन रूप।
साहिब जी : हंसा साहिबन रूप।।

1399 साहिबन भक्ति द्वार खुला, सुनी सुनी सुरति जागे।
साधक के संदेह मिटें, अमृत वचन से सुरति जागे।
साहिब जी : सतगुरू वचन से सुरति जागे।।

1400 मात पिता धन्य धन्य ग्राम वे जानिये, जहां जन्में संत 'वे नाम'।
चार गुण संग साथ प्यारो, प्रेम भक्ति सुरति संग 'वे नाम'।
साहिब जी : पूर्ण संत संग साहिबन नाम।।

नोट :

हे जगत की जिज्ञासु जीवात्मांओ, सतगुरू ''वे नाम परमहंस जी'' की वाणी अनुसार ये उपरोक्त भाव आप सभी जीवात्मांओं के लिए और आप सभी जीवात्मांओं के द्वारा ही आपके सामूहिक प्रयासों से ही कलमबद्ध किये गये हैं अर्थात उपरोक्त कलमबद्ध भाव व विचार आप सभी जिज्ञासुओं के ही हैं और आप के लिए ही कलमबद्ध किये गये हैं और इसी श्रृंखला में आप का कोई निजी विचार अथ्वा कोई भी त्रुटि संज्ञान में आये तो आप अपने सुझावों से हम्हें अनुग्रहित करें।

साहिब ''वे नाम परमहंस जी'' के श्री चरणों में

सभी साधकों का शत शत प्रणाम !!!

साहिब सतगुरू ''वे नाम परमहंस जी'' के अग़ामी आने वाले ग्रंथ **'सफरनामें', 'मुक्ति से मोक्ष की ओर', 'आनंद सागर'** और इसके साथ ही साथ अंग्रेज़ी भाषा के पाठकों व जिज्ञासुओं के लिए 'पराभक्ति पर आधारित', सहज सत भक्ति मार्ग की महिमां से भरपूर ग्रंथ अंग्रेज़ी भाषा में भी शीघ्र प्रकाशित होने जा रहे हैं। कलयुग के इस वर्तमान काल में बिना सतगुरू साहिब **''वे नाम परमहंस जी''** की शरणी आये पूर्ण मोक्ष संभव ही नहीं। इसलिये हे हंसाथियो साहिब सतपुरूष जी की सत सुरति से ओत प्रोत ''वे नाम परमहंस जी'' द्वारा रचित नवीन ग्रंथ ''अमर सागर'' को श्रद्धा पूर्वक पढ़ें व श्रवण करें।

सतगुरू सतनाम

सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी सत्त साहिब

इति श्री

'वे नाम सुरति धारा' विषयों के सुरति भाव

प्यारे पाठको,

ये सत सुरति से ओत–प्रोत दोहे सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी ने सभी जीवात्मांयें मोक्ष पथ की पथिक बनें, इस आध्यात्मिक उद्धेष्य जगत जीवों के कल्याण के भाव से शब्दों में पिरोया गया है। सहज सतमार्ग के संत सतगुरू अपनी भक्तियां मन माया (जगत पदार्थों) का प्रयोग ना करके सुरति सूं करते हैं। हंसा (आत्मां–मन=हंसा) मूलतः काया, आकार व स्पर्श से परे सुरति रूप है। जगत में हम जो भी भक्तियां, कार्य व गतिविधियां करते हैं वह सब पूर्णतः मन तथा माया रूपी जगत पदार्थों का प्रयोग करके करते हैं सुरति तो पूर्ण आत्मिक अवस्था है, इस अवस्था में मन माया का लेष मात्र भी अंश नहीं होता। जहां एक ओर जगत भक्तियां मन व शाब्दिक ज्ञान का प्रयोग करके की जाती हैं वहीं दूसरी ओर सहज सतमार्ग की भक्ति व ब्ख़ान केवल सुरति सूं किया जाता है। यह आलोकिक दोहों से भरपूर ग्रंथ **''अल्प मुक्ति से पूर्ण मोक्ष''** भी साहिबन सत सुरति सूं ओत प्रोत है। वर्तमान काल में सहज सत मार्ग के एकमात्र पूर्ण संत सतगुरू 'वे नाम' परमहंस जी सुरति से भरी अमृतमयी दात रूपी धरोहर को सुरति से ग्रहण करके, जगत जीवों तक पहुंचाने का भाव लिये इसे शब्दों में रूपांतरण कर रहे हैं। सुरति तो मन काया से परे मूलतः हंसात्मां का विषय है जो जगत जीवों के कल्याण के लिये कलमबद्ध होने का प्रयास भर है।

इस जगत में स्वयं में विद्यमान चेतन सत्ता को जानने की जिज्ञासा सदा से मनुष्यों में रही है। मानव समाज कितना भी उन्नतशील क्युं ना हो जाये वह कभी भी दुख व कष्टों से मुक्त नहीं हो सकता। वेज्ञानिक व भौतिक सुख साधन मानव की दिनचर्या को सुग़म तो बनाते ही हैं परन्तु कुछ और पाने की अभिलाषा को भी तीव्र करते जाते हैं, जैसे कोई कितना भी धनवान और सामर्थवान क्युं ना हो परन्तु उसकी समस्त संसार को अपने वशिभूत करने की ईच्छा कभी समाप्त नहीं होती। जहां एक तरफ इस भौतिक जगत में अधिकांश मानव जीवनचर्या की आपाधापी में इतने व्यस्त हैं कि उनको सारा जीवन स्वयं व मालिक को जानने की तरफ कभी ध्यान ही नहीं जाता। वर्तमान काल में इस त्रिलोकि जगत में मानव अपने आप को अत्यधिक उन्नतशील और ज्ञान का ज्ञाता मानता है, प्रत्येक मानव चाहे वह किसी भी धर्म संपद्रायः से क्युं ना जुड़ा हो पर सभी के सभी जीवात्मां उस एक ही मालिक की संतान हैं तथा एक दिन इस नश्वर संसार को छोड़ के जाना है ऐसा मानते हैं। परन्तु दूसरी तरफ मानव का आचरण तो नित्य प्रतिदिन गिरावट की ओर ही अग्रसर है, अपने आप को सभ्य कहलवाने वाला आज का मानव अपने निज स्वार्थ साधने में इतना व्यस्त है कि उसे दूसरों के दुख दर्द व क्लेशों से कोई लेना देना नहीं। अपितु अपने मतलब साधने के लिये दूसरों का अनहित व विनाष करने से भी परहेज़ नहीं करते।

इस जगत में हर जीव में आत्म का वास है, प्रायः सारा जगत ही मानता है आत्म निर्लेप दुख सुख से रहित अजर अमर अविनाषी है। जहां एक तरफ आत्म अजर अमर अविनाषी दुखों से परे है दूसरी ओर अगर देखें तो जगत में अधिकांश जीव आत्मांयें दुखों व कष्ट क्लेशों से ग्रसित हैं। इन्सान इन दुखों से मुक्ति के लिये किसी ना किसी ईष्ट की पूजा किये जा रहा है, अन्जाने वश ये सारी पूजा भक्तियां उसे और भी उलझनों में उलझाये जा रही हैं। जिन जिन ईष्टों की वह साकार अथ्वा निराकार रूपों में भक्तियां किये जा रहा है वे सभी ईष्ट मन व माया रूप ही हैं। जहां मानव ये भक्तियां इन कष्टों से निजात पाने व अपने सुखों की प्राप्ति के लिये कर रहा है अन्जाने वश वहीं ये भक्तियां उसे तत्कालिक सुखों के एवज में और भी पतन की ओर ले जा रही हैं। अज्ञान वश संसारिक चकाचौंध के लौभ से प्रभावित हुआ मानव अपने आप को तन व त्रिलोकि का अंश ही समझ बैठा है जो उसके दुखों का मूल कारण है।

जगत में एक ओर जहां अनगिनत गुरू सदगुरू पथ प्रदर्शक स्वयं भी निराकार भगवान व उनके देवी देव रूपों की भक्तियों में उलझे हुऐ हैं तथा दूसरी ओर अपने अनुयायियों को भी इन्हीं भक्तियां में ही उलझाये जा रहे हैं। वर्तमान संपूर्ण मानव जगत का अपने आप (आत्म) को ना जानना ही उसका सबसे बड़ा भ्रम है, वह काया ना हो के उस चेतन सत्ता का स्वामी आत्मां (हंसात्मां) है। वर्तमान में मानव जिन ईष्टों की पूजा भक्तियां कर रहे हैं वह निराकार भगवन सर्गुण (देवी, देव व ईष्ट रूप) व निर्गुण (आकार रहित, अंर्तमुखि हो ओईम, अल्लाह, ईश्वर ईत्यादि) रूप में इन्हीं भक्तियों को ग्रहण करते हैं, तथा मानव जिन–जिन रूपों में उनकी भक्तियां करते हैं वह उन्हीं रूपों में प्रतक्षः व अप्रतक्षः रूपों में प्रकट होकर उनकी भक्तियों को और भी दृढ़ करते हैं। निरंकार भगवन एक औंकार इस त्रिलोकि के रचियता हैं तथा इसका संचालन भी सुचारू रूप से कर रहे हैं।

जीवात्मां इस त्रिलोकि से परे चौथे लोक के स्वामी परमपिता परमात्मां (साहिब सत्तपुरूष जी) का निज अंश है। साहिब सत्यपुरूष जी अजर, अमर, अविनाषी, आनंदमयी, चेतन सुरति पुण्झ हैं। इसी कारण आत्मां साहिब सत्यपुरूष जी का अंश होने से अजर, अमर, अविनाषी, आनंदमयी, चेतन सत्ता है, जिसकी ऊर्जा से ही सारा त्रिलोकि जगत चलायेमान है, निराकार भगवान द्वारा रचित भौतिक त्रिलोकि जगत व मन निर्जीव हैं, ये त्रिलोकि जगत और निराकार रूपी मन भी इस आत्म चेतन सुरति ऊर्जा से गतिशील व कार्यरत हैं। चूंकि बिन आत्म–सुरति ये त्रिलोकि संसार निर्जीव है जिसे कार्यशील व चलायेमान रखने के लिये ही ये सारा मोह माया प्रपंच रचा गया है, जिस कारण पूर्ण चेतन सुरति से भरपूर होने के बावजूद भी 'आत्मां' भ्रमित हुआ अज्ञानतावश अपने निज रूप को भुला हुआ अपने आप को इसी मोहनी त्रिलोकि का ही अंश तन व मन समझ बैठा है। यही अज्ञानता ही मानव के सब दुखों व कष्टों का मूल कारण है।

इसी अवस्था से जीवात्मां को पूर्णतः मुक्त करने के लिये सहज सतमार्ग के पूर्ण सतगुरू सदा से ही प्रयासरत हैं। वर्तमान काल के पूर्ण सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी जो निज चेतन सुरति से ओत–प्रोत, जगत में साहिब सतपुरूष जी का तदरूप हैं। साहिब सतगुरू 'वे नाम' परमहंस जी जगत जीवों को सत सुरति से भरे अमृतमयी प्रवचनों, भजनों, काव्यों तथा

दोहों के रूप में सत चेतन सुरति ऊर्जा प्रदान करके मोक्ष दिलाने हेतु निरंतर प्रयासरत हैं। यही कारण है कि हम सब हंसात्मांओं के परमपिता ''साहिब सतपुरूष जी'' वर्तमान काल में अपने तदरूप सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी द्वारा, हम सभी हंसात्माओं को इस त्रिलोकिनाथ कालपुरूष एक औंकार भगवन से छुड़ा कर अपने निजघर सतलोक वापिस ले जाने के लिये साहिबन सुरति से भरे इन आलोकिक ग्रंथों को रच रहे हैं ताकि इन्हें आत्मसात करके हम सब हंसा अपने एकमात्र लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त हो आवागमण से सदा के लिये मुक्त हो जायें।

नोट : **'अल्प मुक्ति से पूर्ण मोक्ष'** इस ग्रंथ के विषयों का सुरती भाव :—

1 आत्म की पहचान कैसे हो

निराकार द्वारा पंच तत्वों से रचि गई त्रिलोकी निर्जीव है। पंच तत्वों से रचित सभी पदार्थ व जीवों की देह भी निर्जीव हैं। सभी जीवों को चेतनता प्रदान करने वाली चेतन—सुरती—ऊर्जा 'हंसा' कहलाती है जिसे 'आत्मां' भी कहते हैं। मानव इस त्रिलोकी की भौतिक 'मन' लुभाने वाली चकाचौंध में ऐसा उलझा है कि स्वयं को 'आत्म' ना मान कर मात्र तन ही जान रहा है और उसके सभी प्रयत्न प्रयास भी इस तन से ही संबंधित भौग पदार्थों को एकत्रित करने में लग रहे हैं। मानव जब इस जगत को त्याग के दूसरे शरीर को ग्रहण करता है तो ये सब भौग पदार्थ और उसके सभी प्रयत्न निष्फल हो जाते हैं तथा सब कुछ यहीं छूट जाता है। इस जगत में प्रत्येक मानव इस बात से भलि भांति परिचित है कि यह जगत क्षण भंगुर है और ईक दिन सभी ने इसे यहीं तज के जाना है। अचंभित कर देने वाली जगत प्रथा मानव की देखें कि सारा जीवन वह इस तन से ही संबंधित सभी कार्य करता है और निज आत्म रूप को तो जानने का प्रयास मात्र भी नहीं करता। कोई बिरले बड़े बड़भागी जिज्ञासुजन ही जगत में आत्मां को अर्थात स्वयं को जानने के पथ पर अग्रसित हो पाते हैं।

कितनी विचित्र विडंभना है कि जगत में अनजानेवश अधिकांश जगत गुरूआजन निज स्वार्थ सिद्धि हेतु इस जगत के अनुयायियों का मार्ग दर्शन (सर्गुण—निर्गुन रूपी) मन—भक्तियों के रूप में करते हैं जिससे मानव समाज आवागमण से छुटकारा नहीं पा पाता अर्थात पूर्ण मोक्ष से वंचित रह जाता है और अल्प मुक्तियों को ही भौग कर पुनः मृत्यु लोक में लोट आता है। जगत में अधिकांश भक्तियां स्वार्थ सिद्धि हेतु मन व मुख द्वारा की जाती हैं। प्रथमता इन भक्तियों से जगत के भौतिक पदार्थ तो ग्रहण हो जाते हैं परन्तु ये भक्तियां और भी इस त्रिलोकी मन माया जाल में जीवों को भ्रमित करके उलझा देती हैं। जगत की इन भक्तियों से मानव कभी भी मन व मन की मोहनी तरंगों से मुक्त नहीं हो पाता अर्थात निज आत्म रूप को जानने की ओर कभी भी अग्रसित नहीं होता।

जगत में स्वार्थ रहित पूर्ण जिज्ञासा से भरे भगतजन चाहे किसी भी ईष्ट की पूजा भक्ति

आराधना करें, निरंकार रूपी वे ईष्ट इनकी जिज्ञासा कभी भी शांत नहीं कर पाते और ऐसे भगतजनों को वे वरदान के रूप में जगत के सुख साधन मांगने का प्रलोभन देते हैं ताकि वे सब भगतजन निजरूप को जानने के एवज में मन–माया के प्रलोभनों में ही उलझ कर रह जायें और अपने पथ से विमुख हो जायें। जो भगतजन इन वरदानों व प्रलोभनों में नहीं उलझते, काल भगवन त्रिलोकीनाथ ऐसे भगतजनों का सहज सत मार्ग के पूर्ण संत सतगुरूओं की शरण में जाने का मार्ग स्वयं प्रशस्थ कर देते हैं।

बिन सहज सत मार्ग के पूर्ण संतों की शरणी आये इस त्रिलोकी जगत में कोई भी मानव निज आत्म रूप की पहचान कर ही नहीं पाता, क्युंकि सहज मार्ग के पूर्ण संतों की 'सुरती दात' पाये बिना कोई भी मन माया से पूर्णतः मुक्त नहीं हो सकता और बिन मन माया से मुक्त हुऐ कोई भी निज आत्म रूप की पहचान नहीं कर सकता। सहज सत मार्ग के पूर्ण संत सतगुरू मन–माया से परे पूर्ण सुरतिवान अवस्था में होते हैं तथा वे अपने शरणागत आये हुऐ भगतजनों को 'सुरत सब्द' दीक्षा दात द्वारा सुरती चेतना प्रदान करके उन्हें भी सुरतीवान बना देते हैं। हंसात्मां तो मूलतः ''साहिब सतपुरूष जी'' का सुरती अंश ही है। ऐसे सुरतीवान भगतजन निज हंसा सुरती रूप (आत्मां–मन माया=हंसा) को जान कर स्वयं भी मन माया से मुक्त होकर हंसा बन जाते हैं।

2 भक्ति विरह वैराग़

वर्तमान काल में इस जगत में भक्तियां प्रेम, विरह व तड़प ना होके निज संसारिक स्वार्थ सिद्धि का संसाधन बन के रह गई हैं। जगत भौग स्वार्थ हेतु तथा मन चाहा वरदान पाने के भाव से की गई भक्तियां मनुष्य को भक्ति पथ से विमुख कर देती हैं। क्योंकि स्वार्थ वशिभूत की गई सभी भक्तियां स्वार्थ सिद्धि होने पर जीव के भीतर अभिमान व अहम को उत्पन्न कर देती है। अभिमान और अहम उत्पन्न होने से मानव भक्ति के श्रेष्ठ पथ से भटक जाता है तथा अंतःकरण में लोभ लालसा तथा ईच्छाओं की पूर्ती के लिये वह भक्ति करने लगता है। जिससे अधिकांश भगतजन भक्ति पथ से भटक जाते हैं।

मनुष्य के भीतर आध्यात्मिक जिज्ञासा जब तीव्रता से उत्पन्न होती है तब उसके भीतर निज को तथा अपने मूल को जानने की तड़प उठती है। ज्युं–ज्युं उसके भीतर अपने आप को जानने की जिज्ञासा व तड़प बड़ती है त्युं–त्युं विरह अग्नि में उसके भीतर मन–माया से विरक्ती उत्पन्न हो के बड़ती जाती है। जिस कारण ऐसे भगत जन अब संसार के मोह जाल से परे रह कर अपने भीतर अंतःकरण ध्यान में डूबा रहते हैं तथा यह विरह तड़प उसके अंतःकरण में वैराग़ उत्पन्न कर देते हैं। वैराग़ की अवस्था आने पर भगतजन अब जगत के झमेलों से दूर रहकर केवल बस केवल अपने कर्तव्यों का ही निर्वाह करते हुऐ अपना शेष जीवन भक्ति में व्यतीत करते हैं। ज्युं–ज्युं मनुष्य अपने अंतःकरण में ध्यान लगाना प्रारम्भ कर देता है तो यह 'विरह, तड़प और वैराग़' प्रेम में परिवर्तित हो जाती है। भक्ति प्रेम में भगतजन अपना सर्वस्व त्याग़ कर अपने सतगुरू अथ्वा ईष्ट को समर्पित कर देते हैं।

निरंकार दायरे में भक्ति चाहे सर्गुण अथ्वा निर्गुण रूप में क्युं ना करें अगर भगतजन अपने निज संसारी स्वार्थ तज कर भक्ति भाव युक्त प्रेमसाग़र में डूब कर भक्ति करें तो यह भक्ति उन्हें अपने गणतव्य तक पहुंचा ही देती है। ऐसे श्रेष्ठ बिरले भगतजन जो वरदानों और मन चाहे प्रलोभनों में ना उलझें तो निरंकार भगवन उन्हें देर सवेर सहज मार्ग के पूर्ण सतगुरूओं की शरणी में जाने का मार्ग प्रशस्थ कर देते हैं। सहज सत्य मार्ग के पूर्ण सतगुरू जी की शरण में आकर साधकजन उनकी महां चेतन सुरति से अपनी आत्मां के लिये चेतना ग्रहण कर ही लेते हैं। सहज सत मार्ग के पूर्ण सतगुरू बड़े भगत वत्सल्य होते हैं तथा अपनी गहन भक्ति से अर्जित किये हुऐ 'सार–सब्द' विदेह दात को अपने शरणागत आये हुऐ साधकों के भीतर सुरती से स्थापित कर देते हैं। 'सार–सब्द' विदेह दात को सुरती द्वारा सिमरते ही भगत जन मन–माया से मुक्त होकर मोक्ष पथ की ओर अग्रसर हो जाते हैं तथा सतगुरू कृपा से सतगुरू संग ''साहिबन सतपुरूष जी'' के सतलोक में जा समाते हैं। सतलोक पहुंचते ही उनको अपने मूल हंसा सुरती अस्तित्व की पहचान हो जाती है जिससे वे तुरंत ही अपने निजघर सतलोक को पहचान जाते हैं तथा महांचेतन सुरति पुण्झ ''साहिब सतपुरूष जी'' में जा समाते हैं।

3 ओम तत सत / सत सुरती भण्डार

इस समस्त त्रिलाकी ब्रह्मण्ड में सब से पहले उच्चारा गया शब्द ऊँ (ओम) ही है। निरंकार भगवान का भी सबसे प्राचीन नाम 'ओम' ही है। यह सर्वदा सत्य है कि मानव के पूर्ण सभ्य होने से पहले ही इस सृष्टि् पर वेदों का आग़मन हो चुका था तथा इन वेदों में निरंकार भगवान को ओम कह के संबोधित किया गया। यह ओम शब्द वर्णमाला के 52 अक्षरों से परे है तथा सृष्टि् की सब प्राचीन बोल भाषाऐं इसी शब्द से उत्पन्न होकर जगत में प्रचलन में आई हैं। आज के आधुनिक विज्ञान के ज्ञानी ध्यानी जन भी इस बात से सहमत हैं कि ये 'वेद' पच्चास हज़ार वर्षों से भी अधिक प्राचीन हैं।

ओम तत सत अर्थात प्रमाणों और उदाहरणों सहित जांचा परखा गया सत्त। ओईम शब्द इस सृष्टि् रचना से पूर्व भी विद्यमान था तथा इस सृष्टि् में निरंकार महिमां के सर्व प्रथम रचित महां ग्रंथ वेदों में ओम शब्द की ही महिमां गाई गई है तथा सनातन पद्यति में हम चाहे निर्गुण या सर्गुण भक्ति करें हर मंत्र व श्लोक के आगे ओम शब्द का उच्चारण होता है। योग की क्रियाओं में योगिक पद्यति से उच्चारा गया ओ३म शब्द हमारे मन को कुछ काल के लिये शांत बना देता है ताकि हम ध्यान विधियों में सुगमता से ध्यान केन्द्रित कर सकें। ओ३म शब्द का उच्चारण अपने आप में योग क्रिया का महान प्राणायाम है। बाद के काल में बहुत से ऋषि–मुणि, साधु–सन्यासी, योगी–योगेश्वरों ने इस ओम को ईक औंकार, ओमकार, ररंकार इत्यादि अनेकों नामों से संबोधित किया। सनातन पद्यति में देवी–देवताओं और ईष्टों की स्तुतियों में गाये जाने वाले मंत्र, श्लोक, तथा चौपाईयों आदि में ओम शब्द को सबसे प्रारम्भ

में बोला जाता है। ओम शब्द बोलने के पीछे भावार्थ यह भी है कि ये सभी देवी–देव व ईष्ट् निरंकार ओम भगवान के ही भिन्न–भिन्न स्वरूप हैं। जगत में अधिकांष्ता मानव निरंकार भगवन से आगे ''साहिब सतपुरूष जी'' की सत्ता से अनभिज्ञ हैं, इसी कारण निरंकार दायरे के उच्चतम अवस्था युक्त भगतजन अनजाने वश निरंकार ओम भगवन को ही सर्वस्व अर्थात सर्वोपरि पूर्ण सत्त जान कर ही 'ओम तत शब्द' का उच्चारण करते हैं। सत्त अर्थात जो पहले भी था, वर्तमान में भी है और आगे भी सर्वदा रहेगा, जबकि निरंकार भगवन जो ''साहिब सतपुरूष जी'' के द्वारा उच्चारे गये शब्द से उत्पन्न हुऐ हैं, वे 'मां आद्यशक्ति जी' की तरहं साहिबन सुरती अंश (हंसा) नहीं हैं तभी तो उन्हें 'शब्द–पुत्र' कहा जाता है। कहने का अभिप्रायः यह है कि एकमात्र सत्त सत्ता तो केवल ''साहिब सतपुरूष जी'' ही है।

इस जगत को चलायेमान रखने वाली चेतन सुरती हंसा (आत्मां) परम पिता परमात्मां ''साहिब सतपुरूष जी'' का निज सुरती अंश है। ''साहिब सतपुरूष जी'' का निज सुरती अंश होने के कारण 'आत्मां' भी अजर, अमर व अविनाषी है। इस बात से जगत गुरूआजन अनभिज्ञ हैं कि आत्मां का मूल चेतन सुरती स्त्रोत ''साहिब सतपुरूष जी'' सुरती पुण्झ हैं। इस जगत में सहज सतमार्ग के पूर्ण 'सतगुरू परमहंस जी' मन–माया तरंग से परे पूर्ण सुरतीवान अवस्था में होते हैं। जहां एक ओर निरंकार भक्ति दायरे के उच्चतम अवस्था के सन्यासी योगी–योगेश्वर जन कभी भी मन से पूर्णतः मुक्त नहीं हो पाते जिस कारण इन उच्च अवस्थाओं को प्राप्त करने के उपरांत भी उनमें काम–क्रौध–वासना में लिप्त होने की संभावना बनी रहती है, वहीं दूसरी ओर सहज सतमार्ग के पूर्ण 'संत सतगुरू जी' पूर्ण सुरतीवान अवस्था में होते हैं जिस कारण वे कभी सत्य से परे विचलित नहीं होते तथा पूर्ण समर्पण व दासा पन भाव से सदा ''साहिब सतपुरूष जी'' के अमर सुरती पुण्झ से जुड़े रहते हैं। उनके ध्यान में आठों पहर ''साहिब सतपुरूष जी'' सुरती रूप में विद्यमान रहते हैं। उनकी शरणागत आने वाले बिरले भगत जन उनसे सुरती द्वारा विदेह–दात को दीक्षा में ग्रहण करने के उपरांत मन–तरंग से मुक्त होने के पथ पर अग्रसित हो जाते हैं तथा कुछ ही काल में वे भी श्रद्धा समर्पण भाव से ध्यान करने पर सुरतीवान अवस्था को प्राप्त होकर अपने मूल सुरती पुण्झ ''साहिब सतपुरूष जी'' के सुरती लोक सतलोक में जा समाते हैं।

4. छे: तन की महिमां

जगत में निरंकार भक्ति तो तीन शरीरों तक ही की जाती है, इन अवस्थाओं तक 90 प्रतिशत मन मिट जाता है तथा 10 प्रतिशत मन शेष रह जाता है। निरंकार की भक्ति में उच्च अवस्थाओं को प्राप्त करने पर भी मन तरंग नहीं मिटती अर्थात काम, क्रौध और अहंकार वशिभूत होकर ऋषि, मुणि और साधु–संतों की भी अवगति को प्राप्त होने की संभावना बनी रहती है, ऐसे कंई उदाहरण व किस्से ग्रंथों में उल्लेखित तथा प्रचलित हैं। निराकार दायरे की भक्ति में अधिकतर भगत–जन तीन शरीरों तक ही पहुंच पाते हैं जिससे वो तीन मुक्तियों को ही प्राप्त होते हैं जैसे :–

1 पित्र लोक 2 सात स्वर्ग 3 शुद्ध ब्रह्म लोक/सहस्त्रारसार

कोई बिरला भगत जन ही तीन शरीरों (स्थूल, सूक्ष्म व अति सूक्ष्म) की भक्ति से आगे चोथे शरीर तक पहुंच पाता है, चोथे शरीर तक की भक्ति करने वालों का मन 98 प्रतिशत समाप्त हो जाता है परन्तु 2 प्रतिशत मन फिर भी उनके साथ शेष बना रहता है। तीन शरीरों से आगे चोथे शरीर में भक्ति करने वाले योगेश्वरों में संत वेद–व्यास जी, संत सुखदेव जी, संत दत्तात्रेय जी, राजा जनक जी, संत मछुन्दर नाथ जी, संत ज्ञानेश्वर जी, संत अष्टावक्र जी व संत गायत्रे जी के नाम प्रमुख हैं जिन्होंने सुन्न लोकों में वासा पाया। इससे आगे महां–योगेश्वर केवल सात ही हुऐ हैं। महां–योगेश्वरों में संत गौरख़ नाथ जी, संत वेद व्यास जी व त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु और महेश जी भी हुऐ हैं जिन्होंने महांसुन्न लोक में वासा पाया है। साहिब सतगुरू ''वे नाम परमहंस जी'' ने भी इन सभी सुन्न, महांसुन्न तथा सभी स्वर्ग लोकों की सैल अनंत बार की है। निरंकार के दायरे में सतगुरू परमहंस जी ने ये यात्राऐं मीन व पपील मार्ग के द्वारा की। निरंकार के दायरे में जितने भी आध्यात्मिक सफ़र होते हैं वे सभी मीन और पपील चाल से ही होते हैं। निरंकार भक्ति दायरे में चार शरीरों तक ही भक्ति संभव है। प्रथम : स्थूल, सूक्ष्म व तुरिया अवस्था तक गृहस्थी तथा ब्रह्मचारी दोनों ही भक्ति करते हैं तथा प्रथम दो मुक्तियां पित्तर लोक व स्वर्ग लोक में इन तीन अवस्थाओं वाले भक्तजन मृत्यु उपरांत वासा पाते हैं। इस के उपरांत की दो भक्तियों तुरिया व तुरियातीत अवस्था में केवल ब्रह्मचारी व सन्यासी भगतजन ही प्रवेश कर पाते हैं तथा यही ब्रह्मचारी व सन्यासी योगीजन मृत्यु उपरांत सुन्न व महांसुन्न लोकों में स्थान पाते हैं। तुरियातीत अवस्था के पार केवल सात ही महां–योगेश्वर हुऐ जिन्होंने तुरियातीत पार अवस्था को प्राप्त किया। इन सात योगेश्वरों में गोरख नाथ जी, दत्तात्रेय जी, सुखदेव जी, वेद व्यास जी व त्रिदेव ब्रह्मां, विष्णु, महेश जी के ईलावा वर्तमान काल के पूर्ण संत सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी भी महां–योगेश्वर उपाधि से सुशोभित हुऐ हैं, परन्तु साहिब 'वे नाम' परमहंस जी यहीं नहीं रूके अपितु इन्होंने इससे आगे की भक्ति भी निरंतर जारी रखी।

योगी, योगेश्वर व महां योगेश्वर जन चुंकि 'मन' तरंग से पूर्णतः मुक्त नहीं होते जिसके फलस्वरूप योगी–योगेश्वर अवस्थाऐं प्राप्त होने पर भी अहम का भाव उनके भीतर यथा स्थिति विद्यमान ही रहता है इसी कारण इस परिकाष्ठा पर पहुंचने पर भी वे सहज सत्य भक्ति मार्ग के 'पूर्ण सतगुरू परमहंस जी' की शरणी में नहीं जा पाते और ''मोक्ष–दात सार–सब्द'' से वंचित रह जाते हैं। बिन 'सार–सब्द' विदेह दात की दीक्षा ग्रहण किये मन की सत्ता पूर्णतः कभी नहीं मिटती, बिन मन मिटे कोई भी आगे की उच्चतम भक्ति की अवस्थाओं में प्रवेश नहीं कर पाता। पूर्ण संत सतगुरू 'वे नाम' परमहंस जी 'सार–दात' को ग्रहण करने वाले एक मात्र महां–योगेश्वर हुऐ हैं। परन्तु विज्ञानदेई अवस्था को प्राप्त होते ही 'योगेश्वर उपाधि' पीछे रह जाती है। इसके आगे की दो शरीरों ज्ञानदेई और विज्ञानदेई की भक्तियों में सहज सतमार्ग के सतगुरू परमहंस व साधकजन ही प्रवेश कर पाते हैं। इन शरीरों की अवस्था पार करते ही मन पूर्णतः मिट जाता है। मन के मिटने पर जीवात्मां सतगुरू संग 'हंसा' बन निजधाम की ओर प्रस्थान करती है।

ज्ञानदेई अवस्था में केवल सहज सतमार्ग के पूर्ण सतगुरू परमहंस व साधकजन ही प्रवेश कर पाते हैं। ऐसे साधकजन सुरत कमलदल सतगुरू लोक में अपने सतगुरू जी के

रूप में ''साहिब सतपुरूष जी'' के दर्श पाते हैं जिससे वे पूर्णतः मन–तरंग से मुक्त होकर पूर्ण सुरतीवान अवस्था को प्राप्त होते हैं, इसी अवस्था को ही तो जीते जी 'मोक्ष' कहते हैं। ज्ञानदेई से आगे विज्ञानदेई अवस्था वाले पूर्ण संत सतगुरू अपने सतगुरू संग विहंगम चाल को पाकर सतलोक की ओर प्रस्थान करते हैं, विज्ञानदेई अवस्था में महांसुन्न पार करते हुए सौलहं सूर्य की रोशनी संग होकर उनका मार्ग प्रशस्थ करती है। ऐसे सतगुरू परमहंस जी जगत में विदेह–दात को पाकर ''साहिब सतपुरूष जी'' की महिमां का गुणगान करते हैं।

विज्ञानदेई से पार अवस्था प्राप्त करने वाले आज तक केवल दो ही पूर्ण संत सतगुरू इस धरा पर हुऐ हैं। मोक्ष प्राप्ति के उपरांत संत कबीर साहिब जी प्रथम ऐसे संत हुऐ हैं जो सतलोक अपने निजघर पंहुच कर पुनः जगत के कल्याण हेतु ''साहिब सतपुरूष जी'' द्वारा इस धरा पर भेजे गये ताकि वह सहज सत भक्ति मार्ग की महिमां का गुणगान जगत के समक्ष गायें। ''साहिब सतपुरूष जी'' से कबीर साहिब जी को केवल एक बार ही 'सार–सब्द' दीक्षा दात प्राप्त हुई परन्तु साहिब 'वे नाम' परमहंस जी केवल एक मात्र ऐसे पूर्ण संत इस धरा पर हुऐ हैं जिन्हें ''साहिब सतपुरूष जी'' के द्वारा सीधे सुरती से दो बार दात प्राप्त हुई। सतगुरू 'वे नाम' परमहंस साहिब जी ने विहंगम चाल द्वारा अनेकों बार सतलोक की यात्राऐं की हैं। अब वह परा विहंगम चाल से पलक झपकते ही सतलोक पहुंच जाते हैं तथा कुछ ही पलों में वह सतलोक की सैल करके पुनः वापिस भी लोट आते हैं। इस अवस्था को 'विज्ञानदेई से पारा' की अवस्था कहा जाता है।

5 काया अंदर सप्त चक्र महिमां

सतगुरू ''वे नाम परमहँस जी'' की वाणी अनुसार एक प्रलयः काल में 7 बार मानव जन्म तो मिलता ही मिलता है : निरंकार के दायरे में अंक '7' का अधिक महत्व है जैसे एक प्रलयः काल में 7 मानव जन्म, विवाह के समय 7 फेरे, 7 वचन, 7 दिनों का सप्ताह और 7 जन्मों के साथ निभाने का उल्लेख मिलता है, वैसे ही 7 स्वर्ग, 7 नर्क, 7 सुन्न लोक, 7 पाताल लोक, 7 प्रेत योनियां, 7 समुंद्र, 7 रंगों से युक्त प्रकाश, 7 सनन्द, 7 सुरतियां, 7 रंगों से युक्त ईन्द्र धनुष, 7 सुर व सप्त ऋषि आदि–आदि। ठीक इसी प्रकार निरंकार दायरे की उच्चतम भक्तियों में सात चक्रों की अत्यंत महिमां है। ये सब निरंकार दायरे की भक़्तियां व रचना भरा शाहकार जीवात्मां को भरमाने का एक महां प्रपंच है। भगवान निरंकार की भक्ति करने वाले श्रेष्ठ भगतजन अपनी काया के भीतर साथ चक्रों पर ध्यान केन्द्रित करके चार अल्प मुक्तियों (पित्तर लोक, स्वर्ग लोक, सुन्न तथा महांसुन्न लोक) को प्राप्त होते हैं जहां पर वे कुछ काल तक सुख सुविधाओं से भरपूर मनचाहा भौग भौगते हैं और इसके उपरांत वे अपने श्रेष्ठ भक्ति व कर्मों का कर्मफल भौगने के बाद पुनः मृत्यु लोक में जन्म पाते हैं। हां, यहां अगर कोई बड़भागे मां–बाप सहज सत मार्ग के पूर्ण संत सतगुरू परमहंस जी से दीक्षित हों और ''सार सब्द'' की दात ग्रहण करके निरंतर सिमरन में रहकर सतगुरू परमहंस जी की सुरति से जुड़े हों तो इनकी संतानें जन्म से ही सुरतिवान हो के संत ही पैदा होती हैं। गर्भकाल में ''सार सब्द'' का सिमरन श्रवण करते–करते शिशु चेतन–सुरति से ''साहिब सतपुरूष जी'' के सानिध्य को प्राप्त होता है और उन्हीं से चेतन सुरति प्राप्त करके इस धरा पर महान संत के रूप में जन्म लेता है।

सात अंक का ढंका बाजे, मृत्यु लोक आन।
सप्त ऋषि सात सुर, सबै निरंकार जान।।

जैसे पंच तत्वों से रचित त्रिलोकी का विस्तार ये सारा ब्रह्मण्ड है ठीक इसी प्रकार इस त्रिलोकी में पंच तत्वों से रचित मानव काया भी अपने भीतर पूरे संपूर्ण ब्रह्मण्ड को समेटे हुऐ है तभी तो एक कथन का ग्रंथों में बारम्बार वर्णन आता है 'यथा पिण्डे तथा ब्रह्मण्डे'। इस ब्रह्मण्ड व इसके रचियता को जानने की तीव्र कोतूहलता व जिज्ञासा अधिकांश मानवों में सदा से रही है। जगत मानव अपने निज हंसा रूप को भूला अपने आप को इस त्रिलोकी का भाग ही मान कर जिये जा रहा है तथा इस त्रिलोकी की सुख संपदा को एकत्रित करने और भौगने में ही सारा जीवन व्यर्थ व्यतीत कर देता है। जगत में की जाने वाली अधिकांश भक्तियों के पीछे भी सुख संपदा और भौग पदार्थों को एकत्रित करना एकमात्र उद्धेष्य होता है। निराकार दायरे के भक्तजन मनचाही ऋद्धि–सिद्धियों को पाने के लिये निराकार काल भगवन के सर्गुण–निर्गुण रूपों की भिन्न–भिन्न प्रकार से भक्तियां करते हैं। विशेष प्रकार की ऋद्धियां व सिद्धियां पाने के लिये भक्तजन शरीर में विद्यमान अलग–अलग चक्रों में अपने ईष्टों का ध्यान करते हैं, इन भक्तियों में सफ़ल होने पर भक्तजन मनचाही सिद्धियों के अधिपति बन कर जगत में अपना वर्चस्व और प्रतीष्ठा बड़ाते हैं तथा मनचाहे ऐश्वर्य और भोगों को भौगते हैं।

प्रथम, मूलाधार चक्र – गुद्धा स्थान – मल द्वार :– पृथ्वी तत्व, यहां पर ऋद्धि–सिद्धियों के स्वामी भगवान श्री गणेश जी व ऋद्धि–सिद्धि देवियों का वास होता है। अधिकांष्ता तांत्रिक सिद्धियों को सिद्ध करने वाले भक्तजन 'मेरू दण्ड' के नीचे इसी स्थान पर अपना ध्यान लगाते हैं तथा ध्यान में 'त्वांग' शब्द का जाप करते हैं जिससे वे मनचाही तांत्रिक सिद्धियों का अधिपत्य प्राप्त कर लेते हैं। इन सिद्धियों से युक्त तांत्रिक आत्माओं को अपने वश में कर लेते हैं, आगे चलकर समाज में अपने वशिभूत दुष्टात्माओं के दुरूपयोग से जगतवासियों से धन व संपदा एकत्रित कर लेते हैं। इन ऋद्धि–सिद्धियों का दुरूपयोग करने वाले तांत्रिकजन अपने जीवन का अंतकाल बड़ी कष्टप्रद अवस्था में व्यतीत करते हैं तथा मृत्यु उपरांत सीधे प्रेत योनियों में वासा पाते हैं। वो तांत्रिक भक्तजन जो इन ऋद्धि–सिद्धियों का सदुपयोग जगत के हित व कल्याण के लिये करते हैं, मृत्यु उपरांत शिवलोक में वासा पाते हैं।

द्वित्य, स्वाधिष्ठान चक्र – जन्नेद्रिय स्थान :– जल तत्व, यहां पर भगवान ब्रह्मदेव जी व मां सावित्री जी का वास है। इस जन्नेद्रिय जल ईन्द्री द्वारा जगत में नव जीवन का संचार होता है तथा जल तत्व से संबंधित सिद्धियों के ईच्छुक भक्त जन इस स्थान पर ध्यान लगाते हैं। यहां पर ध्यान लगाने वाले भक्त जन सत्त शब्द का जाप करते हैं तथा मोह लेने अर्थात वशिभूत करने वाली ऋद्धि–सिद्धियों के स्वामी बनते हैं और ऐसे भक्तजन अपार सौंदर्य और आभा से युक्त होते हैं जिस के प्रभाव से ये जगत में सुख सुविधा व ऐशो आराम का जीवन जीते हैं तथा मृत्यु उपरांत ब्रह्मलोक में वासा पाते हैं।

तृत्य, मणिपुर चक्र – नाभी स्थान :– वायु तत्व, यहां पर भगवान विष्णु जी व मां लक्ष्मी जी का वास है। नाभी चक्र पर ध्यान लगाने वाले भक्तजन अपने अंतःकरण में

नारायण–नारायण शब्द का जाप करते हैं। वायु तत्व से संबंधित सिद्धियों के इच्छुक भक्तजन यहां पर ध्यान लगाते हैं, ऐसे भक्तजनों के मुख पर लालिमां से भरा तेज होता है तथा ये जगत में लक्ष्मी जी की कृपा से धन संपदा से युक्त होते हैं और मृत्यु उपरांत बैकुण्ठ लोक में वासा पाते हैं।

चतुर्थ, हृदय चक्र – हृदय स्थान :– अग्नि तत्व, यहां पर भगवान भौलेनाथ शिव शंकर जी व मां पार्वती जी का वासा है। अग्नि तत्व से संबंधित ऋद्धि–सिद्धियों से ईच्छुक भक्तजन यहां पर ध्यान केंद्रित करते हैं तथा 'त्वांग अथ्वा तत्त शब्द का अपने अंतःकरण में जाप करते हैं। यहां पर जाप करने वाले गृहस्थजन मनचाहे पदार्थों का फल पाते हैं तथा ब्रह्मचारी, अगौरी तथा तांत्रिक कठौर तपस्या करके तांत्रिक ऋद्धि–सिद्धियों के स्वामी बनते हैं। यहां पर ध्यान लगाने वाले गृहस्थी तथा ब्रह्मचारी भक्तजन मृत्यु उपरांत शिवलोक में वासा पाते हैं।

पंचम, विशुद्ध चक्र – कण्ठ स्थान :– आद्य–शक्ति लोक, इस लोक में मां आद्य–शक्ति/आद भवानी का वासा है, निद्रा अवस्था में जीवात्मां कण्ठ के बांई ओर वास करती है। जगत में विभिन्न–विभिन्न देवी रूप मां आद्य–शक्ति के ही रूप हैं। संगीत, वाकपटुता तथा विद्या से संबंधित सिद्धियों को चाहने वाले इस स्थान पर ध्यान लगाते हैं तथा जय जगदम्बे/जय मां अथ्वा मां आद्य–शक्ति शब्द का अंतःकरण में जाप करते हैं। यहां पर ध्यान लगाने वाले भक्तजन विद्या, संगीत, ज्ञान–विज्ञान के प्रखर ज्ञाता होते हैं तथा जगत में बड़ी प्रसिद्धि को प्राप्त होते हैं। विशुद्ध चक्र कण्ठ स्थान में ध्यान लगाने वाले भक्तजन मृत्यु उपरांत आद्य शक्ति लोक में वासा पाते हैं।

छटा, आज्ञा चक्र/अष्टम चक्र – त्रिकुटि से उपर स्थान :– यहां पर भगवान निराकार सुन्न रूप में विद्यमान होते हैं। निरंकार दायरे के भक्तजन इस चक्र को आत्म लोक भी कहते हैं। सुन्न तत्व से संबंधित ऋद्धि–सिद्धियों के ईच्छुक भक्तजन यहां पर ध्यान लगाते हैं तथा ऊँ, अलख निरंझन अथ्वा ओ३म शब्द का अंतःकरण का जाप करते हैं। निराकारे दायरे के यहां पर ध्यान लगाने वाले उच्च अवस्था प्राप्त भक्तजन यहां पर रंग बिरंगे प्रकाश के दर्शन करते हैं तथा अनहद की धुनों को सुनते हैं। अधिकांश भक्तजन यहां पर रंग बिरंगा ज्योति प्रकाश और धुनों को निराकार दायरे की भक्ति की अंतिम परिकाष्ठा मान कर भक्ति की अगामी संभावनाओं को दरकिनार कर देते हैं तथा इसी को भक्ति की अंतिम परिकाष्ठा मान लेते हैं और जगत में कथा वाचक, पथ प्रदर्शक व ज्ञानी–ध्यानी बन कर प्रसिद्धि को प्राप्त करते हैं। ऐसे भक्तजन मृत्यु उपरांत शुद्ध ब्रह्मलोक में वासा पाते हैं।

सप्तम, सहस्त्रसार चक्र – माथे के उपर का स्थान :– काल निरंझन लोक, यहां पर निराकार भगवन का ज्योति प्रकाश रूप में वास है। यहां पर ब्रह्मचारी और सन्यासी जन ही ध्यान लगाते हैं तथा यहां पर ध्यान अवस्था में वह औंकार अथ्वा ररंकार शब्द का सिमरन करते हैं। सहस्त्रसार चक्र को सिद्ध करने वाले भक्तजन समस्त ऋद्धि–सिद्धियों से सुसज्जित हो

जाते हैं तथा यहां पहुंचने वाले भक्त जन पूर्ण सुरतिवान अवस्था में होते हैं और मृत्यु उपरांत सहस्त्रसार लोक अथ्वा सुन्न लोकों में वासा पाते हैं परन्तु सहज सतमार्ग के पूर्ण सतगुरूओं से विदेह सब्द सार दात ग्रहण ना करने के कारण पूर्ण मोक्ष से वंचित रह जाते हैं और कंई कयामतों के भौग भोगने के उपरांत इन्हें भी मृत्यु लोक में जन्म लेना ही पड़ता है।

नोट :— निरंकार दायरे के बहुत से ज्ञानी जन आज्ञा—चक्र को सातवां चक्र मानते हैं तथा सहस्त्रसार चक्र को छटा चक्र भी कहते हैं और बहुत से विद्वान जन सहस्त्रसार चक्र को सातवां चक्र मानते हैं और आज्ञा चक्र को छटा चक्र कहते हैं।

उपरोक्त सभी चक्रों की निरंकार दायरे की भक्तियों में अत्यधिक महत्वता है परन्तु सहज सत्यमार्ग के पूर्ण संत सतगुरू और साधकजन इन चक्रों से परे भंवर गुफ़ा व त्रिकुटि स्थान (दो नेत्रों के मध्य में) पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। यहां पर ध्यान केन्द्रित करने के उपरांत अष्ट्म आज्ञा चक्र में ध्यान लगा कर विदेह सार दात का सिमरन करते हैं तथा ध्यान केन्द्रित करने के उपरांत कुछ ही काल में सिर से सवा हाथ उपर सीधे अष्टम चक्र सुरत कमल दल सतगुरू लोक में प्रवेश कर जाते हैं और अपने सतगुरू संग निजघर सतलोक वासा पाते हैं और जन्म मरन से सदा के लिये छूट जाते हैं।

6 आत्म

आत्मां मूलतः वो चेतन सुरति—शक्ति 'हंसा' है जिसकी सुरति से सारा त्रिलोकी विस्तार क्रियाशील है। आत्म ''साहिब सतपुरूष जी'' की सुरति अंश 'हंसा' है जो निरंकार भगवन की मन—मोहनी माया में उलझा हुआ निज को काया व मन ही समझे बैठा है। हंसा का निजरूप को ना जानना अर्थात मन—माया में लिप्त हो जाना ही आत्म कहलाता है। निराकार दायरे के अधिकांश गुरूआजन व उनके अनुयायी जीवात्मां को केवल 'आत्मां' (हंसा+मन माया=आत्मां) शब्द से ही संबोधित करते हैं। सहज सतमार्ग के पूर्ण संत सतगुरू परमहंस जी तथा उनके अनुयायी ही आत्म के मूल रूप 'हंसा' की पहचान रखते है तथा सतगुरू परमहंसों की वाणी व प्रवचनों में भी 'हंसा' (आत्मां—मन माया=हंसा) शब्द का अक्सर संबोधन मिलता है।

सारी त्रिलोक नगरी में सब कुछ मन रूपी त्रिलोकनाथ निरंकार भगवान ही करन करावनहारा है :— कर्म करवाने वाला मन स्वंय निरंकार, करने वाला शरीर व ईन्द्रियां निरंकार, प्रयोग होने वाले साधन व स्थान निरंकार, कर्ता व भौगता स्वयं भगवान निरंकार ही हैं। कर्ता, कर्म, साधन, कष्ट देने वाला, भौगता व दृष्टा भी स्वयं निरंकार भगवान ही हैं। उदाहरणतः एक कसाई की निज काया निरंकार, कसाई द्वारा वध करने वाला शस्त्र (छुरा) तथा जिस काठ के टुकड़े पर वध होता है वह भी निरंकार, जिस पशु अथ्वा जीव काया का वध होता है वह काया भी निरंकार भगवान ही है। निरंकार का भ्रमित करने वाला दूसरा रूप मन—माया है। आत्म अज्ञानता वश निज को भूला अपने आप को काया और मन ही समझ रहा है यही उस के दुखों का मूल है।

7 हंसा

'हंसा' (आत्मां) किसी भी बात व कर्मफल से निर्लेप रहती है, वह तो अनादि है, ना जमती है ना मरती है, ना भीगती है ना सूखती है, वह दुख–सुख से रहित व निर्लेप है। आदि, अनंत, अविनाषी, अजर, अमर, निर्भय, निर्वविकार, सर्वाधार व सर्वशक्तिशाली सम्पन्न ''साहिब सतपुरूष जी'' का निज अंश है। तभी तो ''साहिब सतपुरूष प्यारे जी'' का निज अंश होने से 'हंसा' (आत्मां–मन=हंसा) इन सभी गुणों से सुसज्जित एवमः युक्त है। मन–माया वशिभूत हुआ आत्मां स्वंय को शरीर व प्राण समझ कर इस जगत रूपी निरंकार भगवान की सम्मोहन भरी माया में गहरी निंद्रा में चिरकाल से सोया पड़ा है। अधिकतर जगत गुरूजन निंद्रा–ग्रस्त हुऐ जगत जीवों को उपदेश पे उपदेश दिये जा रहे हैं जिसका कोई प्रभाव उन जीवों पर नहीं होता। तभी तो मन–माया में जीव और भी उलझ के रह जाता है, कोई भी मानव–समाज को मुक्ति मार्ग की ओर चलने को प्रेरित नहीं कर पा रहा क्योंकि स्वयं मन–रूपी निरंकार से ही निरंकार भगवान की भक्ति करके उनकी अल्प मुक्तियां तो प्राप्त की जा सकती हैं परन्तु पूर्ण मोक्ष कभी भी नहीं मिल सकता।

'हंसा' मुलतः ''साहिब सतपुरूष जी'' का निज सुरति अंश है, सहज सतमार्ग के पूर्ण संत सतगुरू परमहंस जी मन–तरंग से पूर्णतः मुक्त पूर्ण सुरतिवान अर्थात चेतन अवस्था में होते हैं। तभी वे अपनी चेतन सुरती से 'साहिबन सुरती दात' सुरती से ही शरणागत साधकों की सुरति अर्थात आत्मां को दीक्षा में प्रदान करते हैं। जिससे साधकों की आत्म सुरती चेतनता को प्राप्त होकर मन–माया से मुक्त होने की ओर अग्रसित हो जाती है। मन–माया से मुक्त होते ही 'हंसा' रूप अर्थात चेतन सुरती को धार के 'सतगुरू परमहंस जी' संग मोक्ष को प्राप्त हो जाती है। ''साहिब सतपुरूष जी'' की महां चेतन सुरति से उत्पन्न हुई सुरती (हंसा रूप) मोक्ष प्राप्ति उपरांत ''साहिबन महां चेतन सुरती'' में ही समा जाती है तथा सदा–सदा के लिये आवागमण से मुक्त हो जाती है।

8 खर अक्षर और निःअक्षर

सृष्टि उत्पति से लेकर आज तक का महां सभ्य मानव समाज अपनी उत्पति और मृत्यु से मुक्ति के मार्ग पर चल ही नहीं पाया। क्योंकि माया की मोह लेने वाली त्रिलोकी से भ्रमित मानव, ख़र से अक्षर और अक्षर से निःअक्षर की ओर चलना तो दूर, उसकी बात तक भी सोच नहीं पाया। सारे का सारा मानव समाज जब से सभ्य हुआ है तभी से दुर्भाग्य वश ये ख़र और अक्षर से आगे बड़ ही नहीं पाया। परन्तु ईक्का–दुक्का बडभागी मानव ही माया रूपी महाजाल से मुक्त हो कर सहज सतमार्ग पर चल पाया, निःअक्षर अर्थात सुरतिवान होके अपने निज रूप हंसा को जान कर अपने निजघर अर्थात मोक्ष को पा सका।

ख़र अक्षर और निःअक्षर पर सतगुरू ''वे नाम परमहँस जी''की वाणी अनुसार :–

सारे का सारा मानव समाज ख़र अर्थात माया (झूठ पसार) में रमा हुआ है। हर समय उसे कोई ऐसा संगी साथी चाहिए जिस से भूत, भविष्य व वर्तमान काल की बातें की जा सकें। मानव अपनी बड़ाई करने में तो वार्तालाप के दौरान ऊंची–ऊंची ढींगें हाकना शुरू कर देता है। वार्तालाप करते समय नब्बे प्रतिशत मानव सत्य सीमा का उल्लंघन कर जाते हैं, सत्य व मर्यादा तो उससे जैसे कोसों दूर छूट जाती हैं। क्योंकि 'मै' (अहंम) से वशिभूत मानव अपने को कमतर दिखना व दिखाना ही नहीं चाहता। अपना दुर्लभ व बहु मूल्यवान समय व सारा जीवन इसी उधेड़बुन में ही नष्ट कर देता है। इन व्यर्थ की बातों में इस नवीन काल में दूरदर्शन, सिनेमा, नाटक व जगत के अन्य मायावी (मनोरंजन) प्रलोभन इन्सान को निज को जानने की तरफ का विचार तक भी आने नहीं देते। कहने को ये प्रलोभन मन–भावन, पर असलियत में मानव की समूल विचारधारा तक को अशांतमय बना देते व उद्विघ्नता से भर देते हैं जिससे मानव अपने सारे का सारा जीवन–काल व्यर्थ में गंवा देता है।

यह शब्द ही संसार में मूल समस्या हैं। कहीं कुराण का पन्ना फटा या जला हुआ मिल जाए तो मुसलमान अपना आपा खो कर मरने मारने पर उतारू हो जाते हैं। अगर कहीं गीता रामायण का पन्ना मिले तो हिंदु, ग्रंथ साहिब का पन्ना हो तो सिख, और अगर बाईबल का हो तो ईसाई अपना आपा खो बैठते हैं। कोई इन सब से पूछे तो, पन्ना तो साधारण पन्ना ही है, पन्ना फटने व जलने का झगड़ा नहीं। झगड़ा तो उस पे लिखे शब्दों का है। अर्थात ये शब्द ही हैं जो मूल समस्या है। जो जो मानव इस झगड़े में उलझते हैं वे धर्म व आध्यात्मिकता से कौसों दूर होते हैं अथार्त दिखावे व बड़े होने का ढौंग करते हैं। इन्हें अपनी केवल अपने अहम व प्रसिद्धि की ही चिन्ता होती है अपितु धर्म से इनका कोई लेना देना नहीं होता। वे तो धर्म के नाम पे अपनी नेतागिरी का ही ढौंग करते हैं।

संसार का मानव नब्बे प्रतिशत समय ख़र अर्थात व्यर्थ की माया भरी बातों में व सपनों में गुज़ार देता है। परन्तु चंद बड़े बडभागी जन ईक्का–दुक्का ही सही मालिक को जानने के लिए सत्संग, पूजा, ईबादत बिना स्वार्थ के करते हैं व सारे मानव जगत के कल्याण हेतु लगे रहते हैं। इस अवस्था वाले मानवों का सत की ओर ये पहला कदम भर होता है। बाकी सारा मानव समाज मांगों व स्वार्थ सिद्धि हेतु पूजा, ईबादत व प्रार्थनाओं में लगा रहता है, ऐसी भक्तियां भी तो ख़र अवस्था ही हैं। बिन मायावी मांगों के निस्वार्थ भक्ति अर्थात मालिक को जानने हेतु पूजा भक्ति, ख़र से आगे अक्षर अवस्था की ओर अगला कदम है। ख़र अवस्था वाले मानव मजे लेने हेतु वार्तालाप करते हैं, ये मानव सुनना कम और सुनाना ज्यादा चाहते हैं। ये मानव अपनी वाणी में तर्क–वितर्क, चतुराई व चंचलता से भरपूर होते हैं। अपना सारा जीवन स्वपन अवस्था में व्यर्थ ही गुज़ार देते हैं। परन्तु ख़र से आगे अक्षर अवस्था वाले मानव संयमी, ठहराव व गहन विचारशील, अधिक श्रवन करते, नपा तुला व बहुत कम बोलते हैं। इन दोनों अवस्थाओं से मानव को आवागमण अर्थात जन्म मरन से छुटकारा नहीं मिलता। ये दोनों अवस्थाएं मानव को कर्म जाल व जन्म मरन के बंधन में उलझाये रखती हैं।

निःअक्षर अवस्था में ध्यानी व सहज सत्तमार्ग के पूर्ण संत परमहंस व साधकजन होते हैं। ध्यानी तो निराकार के दायरे की भक्ति में भी होते हैं, पूर्ण समर्पित साधक जन ध्यान (निःअक्षर) में जाकर ही अपने आराध्य व ईष्ट का साक्षात्कार कर पाते हैं। परन्तु निराकार भक्ति में उच्च अवस्था प्राप्त ऋषि मुणि व योगी जन, मन से पूर्णतया मुक्त नहीं हो पाते। जिस कारण उनकी ख़र अवस्था में वापिसी की संभावना बनी रहती है। अक्सर इसके कंई उदाहरण प्राचीन काल में व वर्तमान में भी देखने को मिलते हैं।

सहज सतमार्ग के सतगुरू व पूर्ण संत परमहंस माया रूपी मन व मन तरंग पर सदा सवार रहते हैं, क्योंकि इस मार्ग की भक्ति तो केवल सुरति (ध्यान की उच्च परिकाष्ठा) सूं ही की जाती है। यहां तक की 'सार व सुरत सब्द' की दीक्षा भी सुरति सूं मानव तन को ना देकर सीधी आत्मां को ही दी जाती है क्योंकि आत्मां की निज भाषा ही सुरति है। यह दीक्षा तो अक्षर व लेखनी से परे किसी भी ग्रन्थ में वर्णित नहीं होती। इसी कारण इसे निःअक्षर दात व 'सब्द विदेह' भी कहते हैं। ये पूर्ण सतगुरू परमहंस जी द्वारा सुरति सूं ही साधक को प्रदान की जाती है जिसे साधक जन भी सुरति सूं ही ग्रहण करते हैं। निःअक्षर सब्द की महिमां जिसे 'सार सब्द' व 'विदेह सब्द' से भी संभोधित किया जाता है और इसे सुरति सूं ही सिमरा और ध्याया जाता है। सहज सतमार्ग में सुरति सूं ही सतगुरू परमहंस जी को समर्पण किया जाता है व सुरति सूं ही निजधाम जाया जाता है। सहज मार्ग के पूर्ण संत सतगुरू परमहंस जी स्वयं प्रवचन कर्ता ना हो के केवल एक माध्यम भर होते हैं। ये प्रवचन तो परमपुरूष साहिब सतपुरूष जी स्वंय सतगुरू परमहंस जी के मुखारबिंद से करते हैं। सहज सत मार्ग के पूर्ण संत सतगुरू परमहंस, साहिब सतपुरूष जी की महिमां के ईलावा, मायावी संसार से बहुत जरूरत पड़ने पर ही बोलते हैं। क्योंकि वे निःअक्षर अवस्था में सुरति सूं ही अपने प्यारे सतगुरू परमहंस रूपी सतपुरूष जी से जुड़े होते हैं। निःअक्षर होना ही तो सुरतिवान होना है। आत्मां, सुरति सूं ही माया को तज हंसा रूप धारण कर अपने निजधाम अर्थात मौक्ष को पा जाती है।

वे नाम सुरती धारा

सतगुरू सत्तनाम

सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी सत्त साहिब जी

—0—